RNI नं. : 7387/63
मुद्रण तिथि : 29-30 अप्रैल 2025
डाक प्रेषण तिथि : 29 अप्रैल 2025-01 मई 2025
ISSN : 2456-611X

वर्ष : 63 अंक : 02
मूल्य : ₹10/- पृष्ठ संख्या : 76
डाक पंजीयन संख्या : BIKANER/022/2024-26
Office Posted at R.M.S., Bikaner

राम चमकते भानु समाना

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ का मुखपत्र

श्रमणोपासक

समाचार पाक्षिक

समता भावों से सरसब्ज हुआ, संपूर्ण विश्व नवकार से।
जाति-वर्ग से ऊपर उठकर, सर्वोदय के भाव से॥
अष्टोत्तरशत देशों में, एक स्वर, एक मंत्र गूँजा।
पंच परमेष्ठी के पाँच पदों से, भर गई सब में नवीन ऊर्जा।

संघ शिखर सदस्य

श्री शांतिलाल जी सांड
बेंगलुरु
MID No. : 189067

श्री विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127238

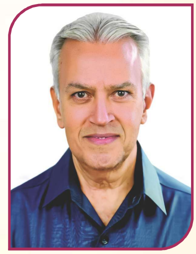

श्री रिद्धकरण जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111161

श्री जयचंदलाल जी डागा
बीकानेर
MID No. : 108244

श्री सोमप्रकाश जी नाहटा
सूरत
MID No. : 126222

श्रीमती मंजू जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128972

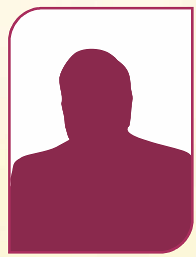

स्व. श्री मूलचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 187427

समता मनीषी
स्व. श्री उमरावमल जी बम्ब, टोंक
MID No. : 121469

स्व. श्री विजयचंद जी डागा
बीकानेर
MID No. : 120472

श्री माणकचंद जी नाहर
उदयपुर
MID No. : 107109

श्रीमती कुमुद विमल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127237

श्री दिनेश जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 111134

श्री पंकजराज जी शाह (बोहरा)
पिपलिया कलां
MID No. : 128966

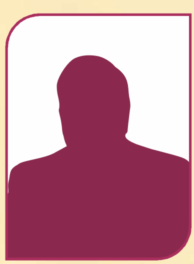

गुप्त
छत्तीसगढ़
MID No. : 197441

श्री सुरेश जी दक
मैसूर
MID No. : 129730

संघ महाप्रभावक सदस्य

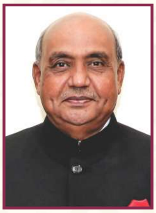
श्री सोहनलाल जी पोखरना
चित्तौड़गढ़
MID No. : 135732

श्री अनिल जी सिपानी
बेंगलुरु
MID No. : 127002

श्री जयचंदलाल जी मरोटी
देशनोक/कोलकाता
MID No. : 114715

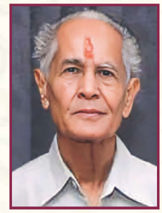
स्व. श्री शांतिलाल जी बच्छावत
सूरत
MID No. : 194606

श्री राजमल जी पंवार
कानवन
MID No. : 113094

श्रीमती संतोष देवी मोदी
भिलाई
MID No. : 135692

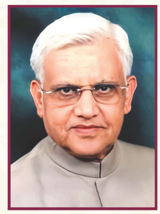
श्री कमल जी बैद
मुंबई
MID No. : 141022

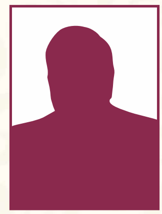
श्री विजय जी (कमला देवी)
गोलछा, बीकानेर
MID No. : 127729

श्रीमती कमला उत्तम जी
कोठारी, बेंगलुरु
MID No. : 112429

श्रीमती मनोरमा देवी बैद
रायपुर
MID No. : 138223

श्रीमती कुसुम जी टंच
बदनावर
MID No. : 160383

श्री बसंतलाल जी कटारिया
रायपुर
MID No. : 137280

श्रीमती बसंती देवी पींचा
नोखा/गुवाहाटी
MID No. : 151607

चतुर्थ चरण

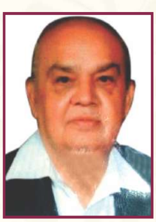
श्री प्रकाश जी कांकरिया
इंदौर
MID No. : 194512

स्व. श्रीमती सरोज देवी
सुराणा, बेरला
MID No. : 195647

श्रीमती गुलाब देवी भंसाली
कोलकाता
MID No. : 129491

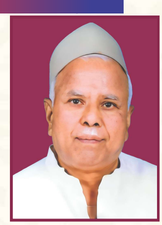
श्री सोहनलाल जी रांका
ब्यावर
MID No. : 138078

श्रीमती मधुलता जी लोढ़ा
डोंगरगाँव
MID No. : 143002

स्व. श्री बापूलाल जी कोठारी
उदयपुर
MID No. : 112429

श्री भीखमचंद जी ओस्तवाल
कलंगपुर
MID No. : 132856

श्री दिलीप जी ओस्तवाल
कलंगपुर
MID No. : 132873

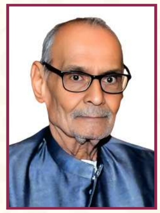
स्व. श्री कँवरलाल जी
देशलहरा, गुंडरदेही
MID No. : 133824

श्री प्रेमचंद जी व्होरा
बदनावर
MID No. : 113593

श्रीमती सुंदर बाई कोटड़िया
कोंडागाँव
MID No. : 135345

कार्यसमिति (10 जनवरी 2016) के अनुसार

तृतीय चरण

* श्री अनिल कुमार जी गोलछा-सिलचर * श्री प्रकाशचंद जी कोठारी-अमरावती * श्रीमती कमला देवी संचेती-देशनोक/दिल्ली * श्री सुंदरलाल जी बोथरा-मुंबई * श्री गोपालचंद जी खिंवसरा-बेंगलुरु * श्री दिलीप जी पगारिया-जावरा * श्रीमती ज्ञान कँवर जी ओस्तवाल-ब्यावर * श्री प्रकाशचंद जी श्रीश्रीमाल-हैदराबाद * श्री निर्मल जी खिंवसरा-ब्यावर * श्री अखराज जी ओस्तवाल-भिलाई * श्री महेंद्र जी सोनावत-भीनासर * श्री झंवरलाल जी कुम्मट-सिलचर * गुप्तदान-भीलवाड़ा * श्रीमती सुनीता जी मेहता-बेलगाँव * श्री निहालचंद जी कोठारी-ब्यावर * श्री प्रकाशचंद्र जी चपलोत-निम्बाहेड़ा * श्री विजय कुमार जी मुणोत-हैदराबाद

द्वितीय चरण

* श्री तेज कुमार जी तातेड़-इंदौर * श्री बसंतीलाल जी चंडालिया-चित्तौड़गढ़ * श्रीमती इंद्रा बाई धाड़ीवाल-रायपुर * श्री राजकुमार जी बाफना-हरदा * श्री चेतन कुमार जी हिंगड़-ब्यावर * श्री अभय कुमार जी भंडारी-जावरा * श्रीमती कमला कँवर जी कोठारी-चेन्नई * श्रीमती इंद्रा बाई गुणधर-संबलपुर * श्री उदयराज जी पारख-रायपुर * श्री प्रेमचंद जी कोठारी-चेन्नई * श्री पीयूष जी बैद-कोलकाता * श्री विमलचंद जी सुराणा-गीदम * श्री अरुण जी मालू-कोलकाता * श्री विनोद जी मिन्नी-कोलकाता * श्रीमती सुधा जी भंसाली-कोलकाता * श्री शुभकरण जी भूरा-भुवनेश्वर

प्रथम चरण

* स्व. श्रीमती सूरजा देवी बरड़िया-सिलचर * श्री मनोज कुमार जी संचेती-बेलगाँव * श्री मुन्नालाल जी पँवार-कानवन * श्री भागचंद जी सिंघी-जोधपुर * श्री सुधीर जी जैन-पिपलिया मंडी * गुप्त-बंगईगाँव * श्री अमरचंद जी बैद-नोखा * श्री जीवनलाल जी गोखरू-कानवन * श्री सुगनचंद जी धोका-चेन्नई * श्रीमती राजरानी जी रजत जी मूथा-जयपुर * श्री किरणचंद जी गुलगुलिया-चिकमगलूर * श्रीमती गुलाब देवी बोथरा-पंचकुला * श्री लीला देवी बंब-चेन्नई * श्री पूनमचंद जी सुराणा-सूरतगढ़ * श्रीमती जमना देवी लूणावत-नोखागाँव * श्री पदम जी बाँठिया-चेन्नई * श्री संजय जी मालू-कोलकाता * श्री कांतिलाल जी छाजेड़-रतलाम * श्री जयंतीलाल जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री प्रकाश जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री गौतम जी गाँधी-अंकलेश्वर * श्री भागीचंद जी डागा-कोलकाता * श्री अजीत जी कांकरिया-सूरत * श्री अमरचंद जी बागरेचा-साजा * श्रीमती मंजू देवी कटारिया-रतलाम * श्रीमती इमरती देवी सुराणा-गीदम * श्री सुशील जी गोरेचा-रतलाम

रचनाएँ आमंत्रित

500 शब्द अथवा एक पेज — शब्द सीमा

आप संघ के मुखपत्र के नियमित पाठक हैं यह हमारे लिए हर्ष का विषय है। श्रमणोपासक के प्रत्येक माह के धार्मिक अंक भिन्न-भिन्न विषयों पर आधारित होते हैं। इसी क्रम में आगामी अप्रैल एवं मई माह के धार्मिक अंक **गोचरी, गोचरी विवेक एवं तपस्या, तपस्या विवेक** विषयों पर आधारित रहेंगे। कृपया विषय संदर्भित आपकी रचनाएँ यथाशीघ्र ही भिजवावें। उपरोक्त विषय के अतिरिक्त प्रेरणात्मक सारगर्भित विषयों पर भी लेख, रचनाएँ आदि स्पष्ट एवं सुंदर शब्दों में सादर आमंत्रित हैं।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा साधुमार्गी परिवारों को जारी M.I.D. (ग्लोबल कार्ड) नं. हो तो उसका उल्लेख अवश्य ही करें। उपर्युक्त विषयों के अतिरिक्त अन्य विषयों पर भी आपकी रचनाओं का सहर्ष स्वागत है। आप अपनी रचनाएँ दिए गए मोबाइल व वॉट्सएप्प नंबर या ईमेल द्वारा भी भेज सकते हैं।

9314055390

news@sadhumargi.com

– श्रमणोपासक टीम

29-30 अप्रैल 2025

।। जय गुरु नाना ।। ।। जय महावीर ।। ।। जय गुरु राम ।।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत – श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

Golden Steps

For

Garbh Sanskaar

DID YOU KNOW?

संस्कारों की खाद (fertilizer) देना कब से शुरु करना चाहिए ?

Grand Launching

QR Code for Registrations

Baby on board.......

संस्कारों के highway पर

।।जय गुरु नाना।। ।।जय महावीर।। ।।जय गुरु राम।।

राम चमकते भानु समाना

जैन संस्कार पाठ्यक्रम परीक्षा

भाग 1 से 12 तक लिखित परीक्षा होगी और 12 वर्ष से कम आयु के बच्चों हेतु भाग 1 से 4 तक की ओरल परीक्षा होगी।

हर वर्ष की तरह **14 सितंबर 2025** को परीक्षा आयोजित होनी है।

परीक्षा से पूर्व तैयारी हेतु **22 जून** को ओपन बुक परीक्षा आयोजित करवाई जा रही है।

सकल जैन समाज के सभी वर्ग व आयु के परीक्षार्थी यह परीक्षा दे सकते हैं।

कृपया अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रभावना करावें।

7231933008

केंद्रीय जैन संस्कार पाठ्यक्रम टीम

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

Alert From The Fake Groups & Messages

- श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ, श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति, श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ कोई भी ऐसा मंच/इकाई/ग्रुप संचालित नहीं करता है जो कि हमारे गौरवशाली साधुमार्गी जैन संघ की परम्परा तथा रीति–नीति के अनुरूप नहीं हो।
- आप सभी पदाधिकारियों व सुज्ञ श्रावक/ श्राविकाओं को ध्यानार्थ लाया जा रहा है कि श्री संघ के किसी भी मंच (केंद्रीय या स्थानीय) को किसी भी रूप में इस प्रकार के ग्रुप व उनकी गतिविधियों के उपयोग में नहीं लिया जाए। श्री संघ ऐसी किसी भी अवांछनीय एवं अवैधानिक गतिविधि के विरूद्ध उचित वैधानिक कार्यवाही करने के लिए स्वतंत्र है।
- श्री संघ ऐसे ग्रुप से जुड़ने की किसी भी रूप में कोई प्रेरणा नहीं करता है।

कुछ लोग **संघ का लोगो और अन्य प्रवृत्ति** के नाम का उपयोग कर वैवाहिक व अन्य तरह के भ्रामक संदेश ग्रुपों में भिजवा रहे हैं । यह जो भी कोई लोग है, उनका निहित स्वार्थ संघ हित में नहीं है।

आप सभी विवेकवान है, इस तरह के व्हाट्सएप ग्रुप जो धर्म व संघ हित में ना हो उनसे अलग होना ही उचित मार्ग है, कोई भी विषय विपरित लगने पर उसे सही माध्यम व संवैधानिक रूप से संबंधित संघ पदाधिकारी तक पहुंचाने का लक्ष्य रखे व किसी भी रूप में भ्रमित मैसेज को बढ़ावा ना दें ताकि भ्रांतियों से बचा जा सके।

BE AWARE

-❋ निवेदक ❋-

राष्ट्रीय महामंत्री

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन महिला समिति **श्री अ.भा.साधुमार्गी जैन समता युवा संघ**

अनुक्रमणिका

रुक्मिणी विवाह.................................... 08
ज्ञान सार : श्रीमद् भगवतीसूत्र.................... 13
गुरुचरण विहार समाचार........................ 15
विविध समाचार...................................... 30
श्रमणोपासक हेडलाइंस........................... 43
विविध भेंट मार्फत................................. 48
विनम्र श्रद्धांजलि..................................... 63
श्री अ.भा.सा. जैन महिला समिति............... 65
श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ............. 69

सुविचार

संलेखना-संथारा (3)

नाशवान तन यह, जाने का है दुःख कैसा।
आना जाना जीव का ये, जीवन कहाता है।।
जीवन अटल नहीं, मृत्यु है अटल यहाँ।
देह भाव छोड़ जीव, आनंद मनाता है।।
कषाय शिथिल करे, क्षीण करे नष्ट करे।
अल्पाहारी बन अन्न-त्याग को बढ़ाता है।
वीर कहे गौतम से, संथारा यही है सच्चा।
जीवन मरण मुक्त, आतम सजाता है।।

साभार – वीर कहे गौतम से

मोह का मर्दन - सुख का सर्जन

चिंतन

–परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

एक प्रश्न पैदा होता है कि मोह दुःख का कारण है, मोह के क्षय से दुःख नष्ट हो जाता है, ऐसा आगम वचन है तो क्या जब तक मोह क्षय नहीं होगा तब तक संसार के जीव सुखी नहीं हो पाएँगे? यदि मोह के रहते सुखी हो ही नहीं सकते तो सुख से जीने का सोचना ही व्यर्थ है। उत्तर- मोह दुःख का कारण है। उससे जीव दुःखी होता है, किंतु दुःख के वेदन में व्यक्ति अपनी समझ से अंतर ला सकता है। ठंड के मौसम में ठंड समान रूप से पड़ती है, पर ठंड का वेदन सबको समान रूप से नहीं होता। वृद्ध व बच्चों को ठंड ज्यादा लगती है। कमजोर शरीर वालों को अपेक्षाकृत अधिक ठंड लगती है। कई युवा व प्रौढ़ भी ठंड-ठंड करते रहते हैं। किंतु कुछ लोग जब शरीर से मेहनत करने लगते हैं तो ठंड का उन्हें वैसा अहसास नहीं होता। उनसे पूछेंगे तो वे कहेंगे ठंड कहाँ है? देखो, मुझे तो पसीना आ रहा है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि मोह के वेदन में भी अंतर अवश्य रहता है। श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के दूसरे अध्याय में परीषहों के स्वरूप का दिग्दर्शन कराते हुए भगवान महावीर ने साधुओं को बहुत स्पष्ट कहा है कि परीषह-कठिनाई कभी भी तुम्हारे मन पर हावी न हो। कठिनाई आने पर मन सुदृढ़ रहता है तो कठिनाई का वेदन उसे परेशान नहीं कर सकता। मोह का उदय है जरूर, किंतु मन-वचन-काया की सुदृढ़ता से उसके पावर को विफल कर दिया जाता है। जैसे कामगार व्यक्ति मेहनत से सर्दी को विफल कर देता है।

गजसुकुमाल मुनि, स्कंदक मुनि आदि के चारित्र से यह भली-भाँति स्पष्ट हो जाता है कि मारणांतिक कष्ट आने पर भी वे उससे विचलित नहीं हुए। मोह के प्रभाव को उन्होंने क्षीण करने का ही प्रयत्न किया। इसी प्रकार श्रावकों में भी कामदेव-अहर्नक आदि ने कठिनाइयाँ सामने आने पर भी उनको अपने पर हावी नहीं होने दिया। अतः मोह के रहते हुए भी मन-वचन-काया को सुदृढ़ रखते हुए उससे मुकाबला किया जा सकता है। मोह के रहते हुए भी जीवन के सुखमय पक्ष का आनंद उठाया जा सकता है। आगम में जो मोह को दुःख का कारण कहा गया है उसे बहुलता से समझा जा सकता है।

फाल्गुन शुक्ल 15, बुधवार, 23.03.2016 **साभार- आरोह**

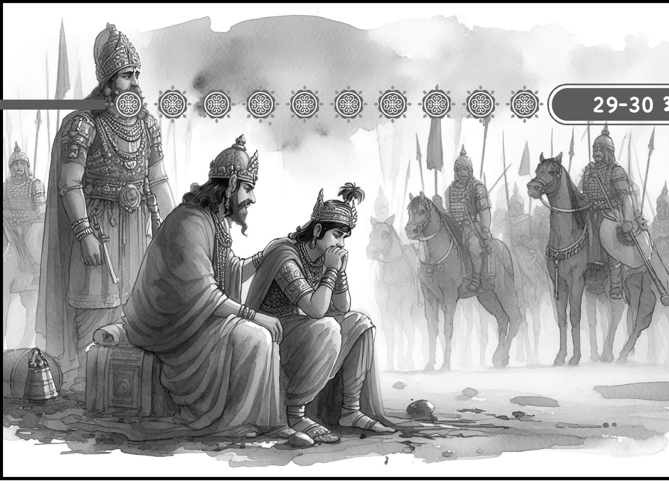

धर्मदेशना

रुक्मिणी विवाह अंत में

29-30 मार्च 2025 अंक से आगे...

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री जवाहरलाल जी म.सा.

गुणवदगुणद्वा कुर्वता कार्यमादौ।
परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन।।
अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्ते-।
र्भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः।।

अर्थात् काम करने वाले बुद्धिमान को काम के अच्छे-बुरे परिणाम का विचार करके काम प्रारंभ करना चाहिए, क्योंकि बिना विचारे अतिशीघ्रता से किए हुए काम का फल मरणकाल तक हृदय को जलाता है और उसमें काँटे की तरह खटकता रहता है।

मनुष्य को कार्य के विषय में न्याय-अन्याय और सत्य-असत्य देखकर कार्य के परिणाम पर विचार कर लेना उचित है। साथ ही सज्जनों और हितैषियों की भी सम्मति जान लेनी चाहिए। फिर जो कार्य न्याय तथा सत्य से अनुमोदित हो, जिसके करने में हितैषी और सज्जन लोग भी सहमत हो उस कार्य को करना तो अनुचित नहीं है, लेकिन जो कार्य अन्यायपूर्ण हो, जिससे सत्य की हत्या होती हो और जिसके विषय में सज्जनों तथा हितैषियों का विरोध हो, वह कार्य कदापि न करना चाहिए। कार्य की अच्छाई-बुराई का निर्णय किए बिना, उसके परिणाम पर विचार किए बिना और सज्जनों तथा हितैषियों की सहमति बिना, हठ, मूर्खता, क्रोध या अभिमानवश किए गए कार्य से अभीष्ट फल प्राप्त नहीं होता। जीवनभर के लिए पश्चात्ताप ही रहता है, हानि भी उठानी पड़ती है और सज्जनों या हितैषियों के सहयोग से भी वंचित रहना पड़ता है। इसके विपरीत अर्थात् औचित्य तथा परिणाम पर विचार करके सज्जनों तथा हितैषियों की सहमति से किए गए कार्य का परिणाम प्रायः अच्छा ही होता है, कभी-कभी चाहे बुरा हो। कदाचित् इस रीति से किए गए कार्य का परिणाम बुरा होता हो तब भी वैसी हानि नहीं होती और न वैसा पश्चात्ताप ही होता है, जैसी हानि और पश्चात्ताप इससे विरुद्ध रीति से किए गए कार्य के दुष्परिणाम से होता है। नीतिकारों का कथन है -

सुहृद्भिराप्तैरसकृद्विचारितं
स्वयं च बुद्धया प्रविचारिताश्रयम्।
करोति कार्यं खलु यः सः बुद्धिमान।
सः इव लक्ष्म्या यशसां च भाजनम्।।

अर्थात् जो मित्र तथा आप्त पुरुषों से सलाह करके और अपनी बुद्धि से विचार कर काम करता है, वह लक्ष्मी और यश का पात्र होता है।

नीतिकारों के इस कथन का दूसरा अभिप्राय यही होगा कि जो आदमी मित्र और आप्त पुरुषों से सलाह लिए बिना तथा अपनी बुद्धि से विचारे बिना काम करता है वह विपत्ति और अपयश का पात्र होता है। मनुष्य को उचित है कि वह विपत्ति और अपयश के कार्य न करे।

कथा का उद्देश्य कार्य का परिणाम बताना ही होता है अर्थात् यह दिखाना होता है कि अमुक व्यक्ति ने अमुक अच्छा कार्य किया तो यह परिणाम हुआ और अमुक बुरा कार्य किया तो यह परिणाम हुआ। कार्य का फल बताकर अच्छे कार्य में प्रवृत्त होने और बुरे कार्य से निवृत्त होने का आदर्शपूर्ण उपदेश ही कथा का ध्येय है। यह कथा भी ऐसे ही ध्येय की पूर्ति के लिए है। इसके द्वारा भी कार्य का उचित-अनुचित परिणाम ही

बताया गया है। इसलिए अब देखते हैं कि इस कथा का अंत किस परिणाम के साथ होता है।

भक्त लोग इस कथा को आध्यात्मिक दृष्टि से देखते हैं। वे इस कथा पर आध्यात्मिक विचार करते हैं और इस कथा को आध्यात्मिक रूप देते हैं। वे कहते हैं कि हमें विवाह या युद्ध की आवश्यकता नहीं है। हमें तो इसमें से आत्मकल्याण में सहायक तत्व शोधना है। इसके लिए वे रुक्म को क्रोध, शिशुपाल को अभिमान, रुक्मिणी को सद्बुद्धि और कृष्ण को आत्मा मानते हैं। इस कथा में ये ही चार पात्र मुख्य हैं, शेष गौण हैं। उनका कथन है रुक्म-रूपी क्रोध के आमंत्रण पर शिशुपाल-रूपी अभिमान रुक्मिणी-रूपी सद्बुद्धि को अपनी अनुगामिनी बनाना चाहता है, परन्तु रुक्मिणी-रूपी सद्बुद्धि, कृष्ण-रूपी आत्मा की शरण में जाकर अपनी रक्षा चाहती है। रुक्मिणी-रूपी सद्बुद्धि को चाहने वाला या उसकी रक्षा करने वाला कृष्ण-रूपी आत्मा रुक्म और शिशुपाल-रूपी क्रोध और अभिमान को परास्त करके रुक्मिणी-रूपी सद्बुद्धि की रक्षा करता है, जो हमारे लिए आदर्श मार्गदर्शन है।

यह तो उन भक्तों की दृष्टि हुई जिनका लक्ष्य केवल आत्मकल्याण ही है, लेकिन सांसारिक परन्तु न्यायप्रिय लोग इस कथा को अपनी दृष्टि से देखते हैं। वे कथा के पात्रों को इसी रूप में मानकर इस कथा को गृहस्थ जीवन की मार्गदर्शिका समझते हैं। उनका कथन है कि यद्यपि माता-पिता और भाई को कन्या का विवाह करने, उसके लिए योग्य वर खोजने का अधिकार अवश्य है, लेकिन इस अधिकार का उपयोग कन्या की रुचि और उसकी स्वीकृति की अपेक्षा रखता है। जब तक कन्या की स्वीकृति प्राप्त न कर ली जाए तब तक उसका विवाह करने का अधिकार किसी को नहीं है। कन्या को उचित सम्मति देना, वंश-मर्यादा की ओर उसका ध्यान खींचना और उसके हिताहित को उसके सामने रखना तो ठीक है, परन्तु कन्या की रुचि की अवहेलना करना, उसके अधिकार की उपेक्षा करना और बलात् उसका विवाह करना अन्याय है। रुक्म ने ऐसा ही अन्याय करना चाहा था। उसने रुक्मिणी की स्वीकृति और रुचि की उपेक्षा करने के साथ ही वृद्ध और अनुभवी पिता की सम्मति की भी अवहेलना की थी और पिता का अपमान किया था। रुक्म का कार्य पिता के प्रति पुत्र का और बहन के प्रति भाई का जो कर्तव्य है उसके विपरीत था। रुक्म की तरह रुक्म की माता ने भी अपना कर्तव्य भुला दिया था। उसे उचित था कि वह सबसे पहले अपनी कन्या की इच्छा जानती और फिर पति या पुत्र, दोनों में से उसकी बात का समर्थन करती, जिसकी बात कन्या की इच्छा के अनुकूल होती, लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। रुक्म की ही तरह शिशुपाल भी न्याय को ठुकराकर अन्याय करने पर उतारू हुआ था। किसी भी पुरुष को न तो अधिकार ही है, न उसके लिए यह उचित ही है कि जो कन्या उसे नहीं चाहती, उसके साथ बलपूर्वक विवाह करे और उस कन्या को उस पुरुष से वंचित रखे, जिसे वह कन्या चाहती है। अभिमानवश शिशुपाल ने इस कर्तव्य की अवहेलना तो की ही साथ ही अपने शुभचिन्तकों और श्रद्धेयजनों की शिक्षा को भी नहीं माना। अन्याय करने और कर्तव्य की अवहेलना करने के कारण रुक्म, शिखावती और शिशुपाल दण्ड के पात्र हैं। यदि इन्हें दण्ड न मिलता तो रुक्मिणी तो अत्याचार का शिकार होती ही, किन्तु भीम, ज्योतिषी, नारद, भावज और शिशुपाल की पत्नी की सत्यानुमोदित बात का भी संसार पर बुरा प्रभाव पड़ता।

दूसरी ओर रुक्मिणी का यह अधिकार था कि वह मर्यादा की रक्षा करती हुई इच्छित पति प्राप्त करे। यदि उसके इस अधिकार की रक्षा न होती तो रुक्म और शिशुपाल के अत्याचार से उसे अपना निश्चय त्यागना पड़ता या अपने प्राण खोने पड़ते, इससे न्याय को और दूषण लगता। इसलिए उसकी रक्षा होना आवश्यक था। उसने कृष्ण की शरण ली थी। इसलिए श्रीकृष्ण का कर्तव्य था कि वे शिशुपाल और रुक्म से रुक्मिणी की रक्षा करते।

कन्या के अधिकार, उनकी रक्षा और उन्हें लूटने के प्रयत्न का परिणाम बताने के साथ ही यह कथा गृहस्थ स्त्रियों को भी यह शिक्षा देती है कि रुक्मिणी ने श्रीकृष्ण को केवल मन और वचन से ही पति माना था, शरीर से तो उसने श्रीकृष्ण को देखा भी नहीं था। फिर भी रुक्मिणी ने कष्टों और प्रलोभनों के सामने मस्तक नहीं झुकाया और शिशुपाल को अपना पति बनाना स्वीकार नहीं किया। जिन्होंने मन,

वचन और काय, तीनों से किसी पुरुष को पति बनाया है, उन स्त्रियों का कर्तव्य क्या है और उन्हें पतिव्रत की रक्षा के लिए कितनी दृढ़ता रखनी चाहिए, उनमें कष्ट सहने की कितनी क्षमता होनी चाहिए और उन्हें प्रलोभनों को किस प्रकार ठुकराना चाहिए।

इस प्रकार न्यायशील गृहस्थ इस कथा को न्याय-रक्षा की दृष्टि से देखते हैं और अन्यायी गृहस्थ इसे किसी और ही दृष्टि से देखते होंगे। ऐसा होना स्वाभाविक भी है। पात्र वस्तु को अपने अनुकूल रूप में ही ग्रहण करता है।

इस कथा में हम साधुओं के ग्रहण करने योग्य सार रुक्मिणी की दृढ़ता है। रुक्मिणी ने जो प्रण किया, उसे तुड़वाने के लिए शिशुपाल और रुक्म ने अनेक प्रयत्न किए, फिर भी वह अपने निश्चय से न डिगी। अपनी प्रतिज्ञा की रक्षा के लिए कष्ट सहती रही। प्राण देने तक को तैयार हो गई, परन्तु रुक्म के भय या शिशुपाल के प्रलोभन में पड़कर उसने अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध शिशुपाल की पत्नी बनना स्वीकार नहीं किया। यह दृढ़ता हम साधुओं के लिए अनुकरणीय है। पतिव्रता का उदाहरण भक्तों के लिए भी मार्गदर्शक होता है।

तात्पर्य यह है कि जो लोग कथा द्वारा किसी प्रकार की शिक्षा लेना चाहते हैं, उनके लिए यह कथा शिक्षा देने वाली है और जो इसे केवल उपन्यास जानते हैं, उनके लिए उपन्यास ही है। यह तो अपनी-अपनी दृष्टि और अपनी-अपनी भावना पर निर्भर है। जिसकी जैसी दृष्टि और जैसी भावना होगी, वह प्रत्येक बात में से वैसा ही अभिप्राय निकालेगा। अब तो यह देखना है कि इस कथा का अन्तिम परिणाम क्या है?

श्रीकृष्ण से परास्त होकर शिशुपाल अपने डेरे में भाग आया। वह विचारने लगा कि अब मैं क्या करूँ? मुझे ज्योतिषी, भावज, नारद और मेरी पत्नी ने कुण्डिनपुर आने से रोका था। मेरे सम्मान की रक्षा के लिए भावज तो अपनी बहन का विवाह भी मेरे साथ करने को तैयार थीं, परन्तु मैंने न तो उनकी बात मानी और न सबकी। यहाँ के नागरिक भी मुझे समझाने आए थे। यदि नागरिकों की बात मानकर भी मैं युद्ध करने को न जाता तो न तो मेरी सेना नष्ट होती, न मुझे पराजय मिलती और न ही मेरा अपमान होता। अब मैं चन्देरी भी कैसे जाऊँ? वहाँ के लोग मुझे क्या कहेंगे? मैं भावज को अपना मुँह कैसे दिखाऊँगा?

शिशुपाल इस प्रकार पश्चात्ताप कर रहा था। उसे चन्देरी लौट जाने में भी लज्जा हो रही थी, परन्तु साथ ही यह भी विचार हो रहा था कि यदि चन्देरी न जाऊँ तो फिर कहाँ जाऊँ? इतने ही में उसने सुना कि सेना सहित रुक्मकुमार ने कृष्ण पर चढ़ाई की है। यह समाचार सुनकर शिशुपाल को कुछ धैर्य मिला। वह विचारने लगा कि यदि रुक्मकुमार ने कृष्ण को जीत लिया तो वे निश्चय ही रुक्मिणी का विवाह मेरे साथ करेंगे और रुक्मिणी के साथ मेरा विवाह हो जाने पर चन्देरी जाने में वैसी लज्जा न होगी, जैसी लज्जा रुक्मिणी के बिना जाने में हैं। यद्यपि अपनी पराजय से शिशुपाल को यह आशा नहीं रखनी चाहिए थी कि रुक्म कृष्ण को जीतेगा। उसे सोचना चाहिए था कि जब मेरी विशाल सेना और सहायक राजाओं सहित मैं भी कृष्ण को जीतने में असमर्थ रहा तो रुक्मकुमार कृष्ण को कैसे जीत सकेगा? परन्तु स्वार्थ में ये सब बातें नहीं दिखीं। स्वार्थी मनुष्य को तो अपनी ही बात दिखती है। भीष्म, द्रोण, कर्ण प्रभृति बड़े-बड़े योद्धाओं को पाण्डवों ने मार डाला था, फिर भी दुर्योधन को शल्य से यह आशा थी कि शल्य पाँडवों को जीतेगा। इसी तरह शिशुपाल भी रुक्म द्वारा कृष्ण की पराजय की आशा कर रहा था।

शिशुपाल रुक्म की विजय की प्रतीक्षा करने लगा। उसे अब भी रुक्म की विजय के पीछे रुक्मिणी प्राप्त होने की आशा थी, लेकिन उसकी यह आशा अधिक देर तक न रह सकी। कुछ ही देर बाद रुक्म की सेना नगर में आई। रुक्म के बन्दी होने का समाचार शिशुपाल ने भी सुना। यह समाचार सुनते ही शिशुपाल की सब आशा नष्ट हो गई। अब उसे कुण्डिनपुर ठहरना भी बुरा मालूम होने लगा। उसे भय हो रहा था कि कुण्डिनपुर के नागरिक रुक्म के बंदी होने का कारण मुझे ही बताएंगे और मुझे ही धिक्कारेंगे, क्योंकि वे मुझे समझाने आए थे, फिर भी मैंने उनकी बात नहीं मानी और युद्ध छेड़ दिया।

अपनी बची-खुची अवशेष सेना लेकर हृदय से पश्चात्ताप करता हुआ शिशुपाल कुण्डिनपुर से निकल चला। उसके हृदय में यही विचार हो रहा था कि मैं चन्देरी किस प्रकार जाऊँ? वहाँ से मैं बारात सजाकर सेना सहित बड़ी

उमंग से चला था और अब सेना नष्ट कराकर बिना विवाह किए ही वहाँ जाऊँगा तो लोग मुझे क्या कहेंगे? जब मैं चला था तब तो नगर में मंगल-गान हो रहा था, लेकिन अब मेरे चन्देरी पहुँचने पर मृत सैनिकों के आत्मीयजनों का रुदन सुनने को मिलेगा। उनकी स्त्रियाँ मुझे दुराशीष देंगी। मैं उन्हें क्या उत्तर दूँगा? भावज जब मेरा ध्यान उस तरफ खींचेगी और अपनी कही हुई बातों का स्मरण कराएंगी तब मैं क्या कहूँगा? इस प्रकार अपमानित होकर चन्देरी जाने से तो मर जाना ही अच्छा है। अब तक मैं वीर कहलाता था, परन्तु अब कायर कहलाऊँगा। मेरी पत्नी से मैं क्या कहूँगा? यह कैसे कहूँगा कि मैंने तुम्हारी बात नहीं मानी, उसका यह परिणाम हुआ। मैं तो अब चन्देरी नही जाऊँगा। आत्महत्या करके अपनी जीवनलीला यहीं समाप्त कर दूँगा और सबकी बात न मानकर अभिमान और हठ करने का प्रायश्चित्त करूंगा।

इस प्रकार विचार कर शिशुपाल ने अपने साथियों से कहा कि तुम चन्देरी जाओ, मैं चन्देरी न जाऊँगा, किन्तु यहीं मरूंगा। यह कहकर वह प्राण त्यागने के लिए उद्यत हुआ। शिशुपाल के मंत्री ने विचार किया कि इस समय शिशुपाल को बहुत ज्यादा दुःख है। यदि समझाकर आत्महत्या से न रोका गया तो यह मर जाएगा। उसने शिशुपाल का हाथ पकड़कर उससे कहा — ''महाराज! आप यह क्या कर रहे हैं? इस प्रकार प्राण-त्याग करना मूर्खों और कायरों का काम है। आत्महत्या करने से क्षति की पूर्ति भी तो नहीं हो सकती। वीरों को या तो जय मिलती है या पराजय। जो लड़ता है, वह कभी हार भी जाता है। जो कायर है, वह लड़ेगा ही नहीं तो हारेगा क्यों? जय-पराजय अपने वश की बात नहीं है। कभी पराजय होती है और कभी जय होती है। आप जीवित रहे, यही प्रसन्नता की बात है। आपका जीवन है तो कभी यह पराजय, जय के रूप में परिणत भी हो सकती है। आप आत्महत्या का कायरतापूर्ण विचार त्याग दीजिए। यदि आप ही ऐसी कायरता करेंगे तो इस शेष सेना और मृत सैनिकों के परिवार वालों की क्या दशा होगी? आप इस सेना को धैर्य बंधाइए। घायल सैनिकों की सेवा-शुश्रूषा का प्रबन्ध करिए और मृत सैनिकों के परिवार के लोगों को धैर्य देकर उनके भरण-पोषण की व्यवस्था करिए। आत्महत्या करने से कोई लाभ नहीं है।''

शिशुपाल पर मंत्री के समझाने का यथेष्ट प्रभाव पड़ा। वहाँ से रवाना होकर वह चन्देरी नगर के बाहर तक पहुँच गया, परन्तु लज्जा के मारे उसने दिन के समय नगर में प्रवेश नहीं किया, अपितु रात के अंधेरे में प्रवेश करके सीधा अपने महल में चला गया और मुँह ढ़ककर चुपचाप सोया रहा। उसके हृदय में यही इच्छा हो रही थी कि कोई मुझसे न बोले और कुण्डिनपुर के विषय में न पूछे तो अच्छा।

शिशुपाल के परास्त होने और रुक्मिणी रहित लौटने का समाचार सारे नगर में फैल गया। शिशुपाल की पत्नी और उसकी भाभी को भी सब हाल मालूम हुआ। भाभी बुद्धिमती और सज्जन हृदय वाली स्त्री थी। उसने विचार किया कि जो होना था, वह तो हो चुका। देवरजी ने मेरी बात नहीं मानी तो उसका फल भी उन्होंने भोगा। अब अपनी प्रशंसा और उनकी निन्दा के लिए उन पर व्यंग्य करना या ताने देकर उन्हें दुःखित करना सज्जनों और हितैषियों का काम नहीं, किन्तु शत्रु का काम है और उस शत्रु का काम है जिसमें गम्भीरता नहीं है, अपितु जो ओछी प्रकृति का है। सज्जन का काम तो दुःखी को धैर्य देना ही है।

इस प्रकार विचार कर भावज शिशुपाल के पास गई। वह शिशुपाल से कहने लगी — ''देवरजी! आप इतने दुःखित क्यों हैं? जो होना था वह हुआ, इसमें आपका कुछ दोष नहीं है। प्राणी कर्माधीन है। उसकी बुद्धि भी कर्माधीन ही होती है, इसलिए जैसे कर्म उदय में आते हैं, बुद्धि भी वैसी ही बन जाती है। उस समय किसी के हित-वचन भी नहीं रुचते, न अपनी स्वयं की बुद्धि ही औचित्य का निर्णय कर सकती है।'' नीति में कहा है -

असम्भवं हेममृगस्य जन्म,
तथापि रामो लुलुभे मृगाय।
प्रायः समापन्नविपत्तिकाले,
धियोऽपि पुंसां मलिनाः भवंति।।

अर्थात् सोने के हरिण का होना असंभव है, फिर भी राम को सोने के मृग का लालच हो गया। इससे प्रगट है कि बहुधा विपत्ति के समय बुद्धिमानों की बुद्धि भी मलिन हो जाती है।

''देवरजी! विपत्ति आने वाली थी, उस समय जब राम की भी बुद्धि मलिन हो गई थी, तब आपकी बुद्धि मलिन हो,

इसमें क्या आश्चर्य है? आप चिन्ता छोड़िए, भविष्य का विचार करिए और जो कुछ हुआ उसके लिए समझिए कि -

अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतकर्म शुभाशुभम्।
नाभुक्तं क्षीयते कर्म, कल्पकोटिशतैरपि।।

अर्थात् अपने किए हुए शुभाशुभ कर्म (विपाक या प्रदेश से) अवश्य भोगने होते हैं। बिना भोगे कर्म सौ करोड़ कल्प में क्षय नहीं होते।''

भाभी ने शिशुपाल को धैर्य देने के लिए इस प्रकार समझाया और उससे कहा कि अब से आप प्रत्येक कार्य सोच-समझकर कीजिएगा। हठ में मत पड़ा कीजिएगा और अपने हितैषियों की बात सहसा मत ठुकराया कीजिएगा। भाभी के समझाने से शिशुपाल को धैर्य हुआ।

उधर कुण्डिनपुर में रुक्म के बंदी बनने का समाचार सुनकर रुक्म की माता को बड़ा ही दुःख और पश्चात्ताप हो रहा था। उसे पति और पुत्र दोनों की ही ओर से दुःख था। वह विचारती थी कि मैंने बिना सोचे-समझे पति की बात का विरोध किया, उसका परिणाम यह हुआ कि पुत्री का विवाह भी न कर पाई और पुत्र भी बंदी हुआ। यदि मैं उस समय रुक्म की बात का समर्थन न करती तो शायद रुक्म का साहस शिशुपाल को बुलाने का न होता और आज मेरे पुत्र को बंदी न बनना पड़ता। मैं रुक्म को फिर जीवित देख सकूंगी या नहीं। मैं पुत्री के लिए कष्टदात्री बनी, पुत्र भी खोया और पति को भी मुँह दिखाने योग्य नहीं रही। रानी शिखावती का हृदय दुःख और पश्चात्ताप से जल रहा था। उस दुःख तथा पश्चात्ताप का अंत तभी हुआ जब रुक्म लौटकर आया। उसके साथ ही शिखावती ने भी महाराज भीम से क्षमा-प्रार्थना की और महाराज भीम ने दोनों को धैर्य बंधाया।

साभार– श्री जवाहर किरणावली-5 (रुक्मिणी-विवाह)

– क्रमशः

खिलते सुमन उभरती प्रतिभा

परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. की अनुकंपा से बड़ौदा निवासी 6 वर्षीय बालिका **टीआ नागोरी** सुपौत्री हीना–प्रकाश जी नागोरी, सुपुत्री सीमा–दिव्य नागोरी ने इस अल्पवय में सामायिक सूत्र, प्रतिक्रमण सूत्र, पुच्छिंसु णं, उत्तराध्ययन सूत्र (10वाँ एवं 31वाँ अध्ययन), दशवैकालिक सूत्र [1 से 3 अध्ययन तथा चौथे अध्ययन का पद्य (गाथा)], बारह भावना, कई प्रार्थनाएँ, स्तवन एवं कविताएँ आदि कंठस्थ कर अपनी विशिष्ट प्रतिभा का परिचय दिया है। वर्तमान में भक्तामर स्तोत्रम् कंठस्थ करने का अभ्यास जारी है। ऐसी प्रतिभाएँ समाज के लिए अनुकरणीय हैं। हमें भी अपने बच्चों को जैन संस्कार पाठशाला में भेजना चाहिए। होनहार बालिका के अभिभावकों को बहुत– बहुत साधुवाद।

- महेश नाहटा

ज्ञान सार

श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

संकलनकर्ता -
कंचन कांकरिया, कोलकाता

29-30 मार्च 2025 अंक से आगे...

वृक्ष शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध – ज्ञान के द्वारा ही वृक्ष आदि की जीव संख्या बताई जाती है, अत: वृक्ष आदि का वर्णन किया जा रहा है।

प्र.2632 आजीविक मत का क्या सिद्धांत है?

उत्तर आजीविक मत का मौलिक सिद्धांत उपलब्ध नहीं है। आजीविकोपासक गोशालक को अरिहंत देव मानते, माता-पिता की सेवा करते, पाँच प्रकार के फल नहीं खाते, यथा- उम्बर, बड़, बोर, सत्तर (शहतूत) और पीपल के फल एवं प्याज, लहसून और कंदमूल के विवर्जक (त्यागी) थे। वे अनिलांछित (नपुंसक नहीं बनाए हुए) और नाक नहीं बिंधे हुए बैलों से त्रस प्राणी की हिंसा रहित व्यापार करते थे।

2633 जैनागमों में आनंद आदि अनेक श्रावकों का वर्णन है। क्या आजीविकोपासकों का भी वर्णन उपलब्ध है?

उत्तर हाँ, ताल, तालप्रलम्बादि 12 मुख्य आजीविकोपासक कहे गए हैं। उनका नाममात्र उपलब्ध है, वर्णन नहीं।

प्र.2634 गोशालक के कितने उपासक थे?

उत्तर गोशालक के 11 लाख उपासक थे।

प्र.2635 भगवान महावीर के कितने श्रमणोपासक थे?

उत्तर भगवान महावीर के 1 लाख 59 हजार श्रमणोपासक और 3 लाख 18 हजार श्रमणोपासिकाएँ थीं।

प्र.2636 भगवान महावीर की मौजूदगी में गोशालक के श्रावक अधिक क्यों थे?

उत्तर घोर तपस्या, ज्योतिष विद्या, निमित्त और शकुन संभाषण आदि चमत्कारिक शक्तियों के बल पर व्यक्ति अधिक लोकप्रिय बन जाता है, किंतु **'सत्यमेव जयते नानृतम्'** लोकोक्ति के अनुसार अंत में सत्य धर्म की विजय होती है। यद्यपि भगवान महावीर की मौजूदगी में उनके अनुयायी कम थे, फिर भी पाँचवें आरे के अंत तक उनके अनुयायी रहेंगे। गोशालक के श्रावक अधिक थे, लेकिन उस मत का आज नामोनिशान भी नहीं है। (रत्न मूल्यवान होते हैं इसलिए कम मिलते हैं।)

प्र.2637 आजीविकोपासक भी त्रस प्राणियों की हिंसा से रहित व्यापार करते थे, तो देव, गुरु, धर्म के आराधक श्रमणोपासकों का व्यापार कैसा कहा गया है?

उत्तर श्रमणोपासक 15 कर्मादान करते नहीं, करवाते नहीं और करते हुए की अनुमोदना नहीं करते हैं। आजीविकोपासक इससे अनभिज्ञ थे।

प्र.2638 कर्मादान किसे कहते हैं और वे कितने हैं?

उत्तर जिन कार्यों से कर्मों का विशेष रूप से ग्रहण (बंध) होता है, उन्हें कर्मादान कहते हैं। इंगालकम्मे आदि 15 कर्मादान

का नाम और अर्थ संघ द्वारा प्रकाशित 'प्रतिक्रमणसूत्र' में या थोकड़े में देखें। इंगालकम्मे आदि का व्यापार करने से आत्मा के शुभ परिणामों का घात होता है, क्योंकि जीवों के प्रति अनुकंपा भाव नहीं रहता है।

प्र.2639 15 कर्मादानों के त्यागी श्रमणोपासक कहाँ उत्पन्न होते हैं?

उत्तर इस प्रकार के व्रत का पालन करने वाले, ईर्ष्याभाव से रहित, कृतज्ञ, प्राणियों के हितचिंतक श्रमणोपासक शुक्ल (पवित्र) शुक्लाभिजात (पवित्रता प्रधान) होकर काल के समय काल करके किसी एक देवलोक में उत्पन्न होते हैं।

प्रासुक-अप्रासुक आहार का थोकड़ा शतक 8 उद्देशक 2

पूर्वापर संबंध – श्रमणोपासक की निर्जरा का ही वर्णन किया जा रहा है।

प्र.2640 भंते! तथारूप श्रमण माहन को प्रासुक (निर्जीव) एवं एषणीय (निर्दोष) अशन, पान, खादिम और स्वादिम आहार प्रतिलाभित करते हुए श्रमणोपासक को किस फल की प्राप्ति होती है?

उत्तर गौतम! एकांत निर्जरा होती है। पाप कर्म नहीं होता है।

प्र.2641 तथारूप शब्द का क्या अर्थ है?

उत्तर तथारूप यानी बाह्य और आभ्यंतर रूप से जो साधु भगवान की आज्ञा का बराबर पालन करता है।

प्र.2642 श्रमण माहन किसे कहते हैं?

उत्तर जो साधु मन, वचन, काया से किसी को मारता नहीं है और 'मत मारो' का उपदेश देता है, उसे श्रमण माहन कहते हैं।

प्र.2643 अशन, पान, खादिम और स्वादिम किसे कहते हैं?

उत्तर
1. **अशन** – जिससे भूख शांत हो। जैसे– दाल, भात, रोटी आदि।
2. **पान** – जिससे प्यास शांत हो। जैसे– जल, धोवन।
3. **खादिम** – जिससे भूख व प्यास, दोनों शांत हो। जैसे– दूध, छाछ, सूखा मेवा आदि।
4. **स्वादिम** – जिससे भूख व प्यास दोनों शांत न हो। भोजन के बाद खाने लायक स्वादिष्ट पदार्थ। जैसे– सुपारी, इलायची आदि।

प्र.2644 भंते! तथारूप श्रमण माहन को अप्रासुक और अनेषणीय आहार प्रतिलाभित करते हुए श्रमणोपासक को किस फल की प्राप्ति होती है?

उत्तर गौतम! उसके बहुत निर्जरा और अल्प पापकर्म होता है।

प्र.2645 अप्रासुक, अनेषणीय आहारादि प्रतिलाभित करने से बहुत निर्जरा और अल्प पाप कैसे होता है?

उत्तर किसी संत-महात्मा की प्राण रक्षा करने के लिए श्रावक ने बीज से युक्त धोवन पानी में से बीज निकाल दिया और मुनि को कहा कि **"मेरे यहाँ धोवन पड़ा है।"** मुनि ने निर्दोष समझकर ले लिया। ऐसी परिस्थिति में श्रावक के बहुत निर्जरा और बीज निकालने रूप अल्प पाप लगा। इसी तरह किसी खास औषधि आदि के लिए भी जानना चाहिए।

साभार– श्रीमद् भगवतीसूत्र प्रश्नमाला

–क्रमशः

गुरुचरण विहार समाचार

"समभावों से कर्मों की निर्जरा होती है"
- आचार्य भगवन्

"हम जिसे आदर्श मानेंगे हमारा जीवन वैसा ही ढलने लग जाएगा"
- उपाध्याय प्रवर

भीषण भौतिक गर्मी में हो रही अध्यात्म की अमृतवर्षा

उदयरामसर में युगनिर्माता आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. एवं उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में विश्व नवकार दिवस पर नवकार मंत्र जाप एवं भगवान महावीर जन्मकल्याणक महोत्सव की धूम

गंगाशहर-भीनासर में ऐतिहासिक मंगल प्रवेश

हुक्मसंघ की राजधानी में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब

नवदीक्षित संत श्री रामहृदय मुनि जी म.सा. के लगातार 50 आयंबिल पूर्ण

समता भवन, उदयरामसर, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर, बीकानेर (राज.)।

कितने ऊँचे भाग्य हमारे, हमने राम गुरु का दर पाया।
जलती हुई इस दुनिया में, मिलती इनकी शीतल छाया।।

युगपुरुष, साधना के शिखर पुरुष, रत्नत्रय के महान आराधक, उत्क्रांति प्रदाता, गुणशील संप्रेरक, ज्ञान एवं क्रिया के बेजोड़ संगम, नानेश पट्टधर, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा धोरां री धरती मरुधरा की पुण्यभूमि पर इस भीषण गर्मी में भी प्रभावी विचरण कर अध्यात्म की अमृतवर्षा निरंतर कर रहे हैं। त्यागी-महापुरुषों की एक झलक प्राप्त करने हेतु जनश्रद्धा का सैलाब उमड़ रहा है। जैन-जैनेतर सभी संयम साधना से प्रभावित होकर नतमस्तक हो रहे हैं। धर्माराधना, तपाराधना में बढ़-चढ़कर जनता भाग ले रही है। उदयरामसर में विश्व नवकार महामंत्र दिवस पर नवकार जाप, भगवान महावीर जन्मकल्याणक एवं अन्य आध्यात्मिक कार्यक्रमों की धूम रही। 2026 के चातुर्मास की पुरजोर विनती उदयरामसर संघ द्वारा श्रीचरणों में अर्पित की गई।

महान क्रांतिकारी आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. की पुण्यभूमि गंगाशहर-भीनासर में महापुरुषों का भव्य मंगल प्रवेश अयोध्या में राम आगमन जैसा हुआ। चतुर्विध संघ की अलौकिक छटा बस देखते ही बन रही थी। भीषण गर्मी में भी धर्माराधना के अंतर्गत सभी धार्मिक कार्यक्रमों- प्रार्थना, प्रवचन, ज्ञानचर्चा, सामायिक, प्रतिक्रमण, संवर, तेले की लड़ी आदि में श्रद्धालु अपूर्व उल्लास के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

अभिमोक्षम् शिविर हेतु अभिभावकों व बच्चों के साथ चर्चा कर शिविर में भाग लेने हेतु विशेष प्रेरणा दी जा रही है। संस्कार प्रदान यज्ञ के इस महान कार्य में अपूर्व धर्मोल्लास का वातावरण बना हुआ है। व्यसनमुक्ति एवं संस्कार जागरण कार्यक्रम '**राम गुरु का है संदेश, व्यसनमुक्त हो सारा देश**' स्कूलों व कॉलेजों आदि में निरंतर जारी है। बीकानेर, गंगाशहर-भीनासर के हर संप्रदाय के अध्यात्म प्रेमी भाई-बहन एवं देश-विदेश से महापुरुषों के पावन दर्शन हेतु दर्शनार्थियों का आवागमन अनवरत बना हुआ है। 20 एवं 30 अप्रैल को दीक्षा का पावन प्रसंग संपन्न हुआ।

शेष जीवन को विशेष बनाना है

1 अप्रैल 2025, समता भवन, उदयरामसर। संयम सुमेरु परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा-6 का पलाना से विहार करके समता भवन, उदयरामसर में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। संपूर्ण मार्ग '**त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की**', '**जय-जयकार जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार**', '**संयम इनका सख्त है, तभी तो लाखों भक्त हैं**' आदि जयघोषों से गुंजायमान होता रहा। उदयरामसर में श्री साधुमार्गी जैन संघ सहित सकल जैन-जैनेतर समाजजनों व आगत प्रवासी भाई-बहनों ने महापुरुषों की अगवानी की।

दोपहर में श्री जयप्रभ मुनि जी म.सा. ने '**आया कहाँ से, कहाँ है जाना**' संयम गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि आज महान आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. अपनी शिष्य संपदा सहित पधारे हैं। धर्म-ध्यान, त्याग-तप, दया, संवर का ठाट लगाना है। ग्यारह दिन में जैन सिद्धांत बत्तीसी कंठस्थ करके सुनानी है। गुरुदेव सभी को जागृत कर रहे हैं। इस तन का कोई भरोसा नहीं है और यह साथ जाने वाला नहीं है। शेष जिंदगी को विशेष बनाना है। कोई बहाना नहीं बनाना और धर्म में जुट जाना है। आपश्री जी ने तीर्थंकरों की जीवनी पर विशेष प्रकाश डालते हुए तत्वज्ञान का बोध दिया।

आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया। बीकानेर एवं गंगाशहर निवासी संघ के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगणों एवं बेंगलुरु प्रवासी उदयरामसर निवासी संघ शिखर सदस्य सहित अनेक स्थानों से आगत श्रद्धालु भाई-बहनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

सायं को शासन दीपक श्री राकेश मुनि जी म.सा., श्री गगन मुनि जी म.सा., श्री रामसौरभ मुनि जी म.सा., श्री रामविनीत मुनि जी म.सा. का गंगाशहर-भीनासर से उदयरामसर गुरुचरणों में पधारना हुआ। महापुरुषों के पधारने से उदयरामसर में धर्माराधना का ठाट लग गया।

मेरेपन के भाव से दूर हटें

2 अप्रैल 2025, समता भवन, उदयरामसर। प्रात: मंगलमय बेला में '**हे प्रभु पंच परमेष्ठी दयाला**' एवं '**राम गुरु गुण गाना है**' की मधुर ध्वनि के साथ प्रार्थना की गई। तत्पश्चात् आयोजित धर्मसभा में उपस्थित अपार जनमेदिनी को भगवान महावीर की आगमवाणी से पावन करते हुए परमागम रहस्यज्ञाता, परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यवाणी में संबोधित करते हुए फरमाया कि ''**भगवान महावीर की साधना का लक्ष्य मैं और मेरेपन के भेद**

को समाप्त करना था। जहाँ मेरापन होता है वहाँ मैं भारी हो जाता है। सारा ध्यान मैं (आत्मा) पर केन्द्रित करना है। संयोग सदा नहीं रहते, परंतु प्रत्येक आत्मा के साथ अनंत बार संबंध हो चुका है। मैं और मेरेपन का भेद दूर करें। भगवान महावीर ने साधना पथ पर चलते हुए सभी संबंधों को दूर कर आत्मा के साथ द्रष्टा एवं ज्ञाता भाव स्थापित किया। आत्मा के साथ किसी का संबंध नहीं है। हमारा दृष्टिकोण भी भगवान के अनुरूप बने। मेरेपन से आए हुए विकारों को दूर करें। '**इदं न मम**' अर्थात् कोई मेरा नहीं है। घर-परिवार, बंगला-गाड़ी, धन-सम्पत्ति कुछ भी मेरा नहीं है। सभी दिखने वाले पदार्थ मेरे नहीं है। मेरेपन का विस्तार ही विकार है। उसे दूर करें। भगवान महावीर के सिद्धांतों पर जीएंगे तो अशांति दूर हो जाएगी।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**गुरु को अपने हृदय में स्थापित करना है। हृदय चक्र अनाहत चक्र है। मुख्य संचालक तत्व हमारा हृदय है। मालिक हृदय है और सी.ई.ओ. हमारा ब्रैन है। क्या कार्य करना है यह हृदय बताता है। कार्य को परिणित करने वाला ब्रेन है। हमारे हृदय में कौन बैठा है? हृदय म्यान के समान है। उसमें एक ही भाव रह सकता है। वह काफी धन व यश के लिए आतुर रहता है। जिसके हृदय में आत्महित है वह उसी काम में आगे बढ़ता है। हमारी क्रिया व उद्देश्य एक समान होने चाहिए। यदि हृदय में धर्म है तो जीवन में धर्म है। दिमाग का धर्म उधार का धर्म है। हृदय के धर्म व दिमाग के धर्म में अंतर है। जिसके हृदय में धर्म है, उसके हर कार्य में धर्म दिखेगा। अपना मूल उद्देश्य हृदय की शुद्धि है। हृदय का परिवर्तन जरूरी है। हृदय में गुरु धर्म की स्थापना जरूरी है।**''

शासन दीपिका साध्वी श्री वंदना श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत एवं महिला मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कई भाई-बहनों ने 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 उपवास करने का नियम लिया। आचार्य भगवन् के पावन दर्शन-सेवा का लाभ डॉ. मनमोहन सिंह यादव (सेवानिवृत्त उपखंड अधिकारी), खरतरगच्छ के दिलीप जी नाहटा आदि ने लिया।

परेशानियाँ परेशान करने के लिए नहीं, अपितु परीक्षा के लिए हैं

3 अप्रैल 2025, समता भवन, उदयरामसर। प्रात:कालीन प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति का अद्भुत संगम देखने को मिला। प्रार्थना पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित धर्मसभा में ज्ञानरंजित होने को आतुर श्रद्धालु भाई-बहनों को भगवान महावीर के पावन वचनों का सार बताते हुए साधना के शिखर पुरुष आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में संबोधित करते हुए फरमाया कि ''श्रमण तपस्वी मुनिराज का एक ही लक्ष्य रहता है कि समाधि की प्राप्ति हो। सभी कार्यों का फल आत्मसंतुष्टि होना चाहिए। परिस्थितियाँ सबके सामने आती हैं। उनको रोक पाना सबके वश की बात नहीं है, परंतु मन को स्थिर रखना हमारे हाथ की बात है। परेशानियाँ परेशान करने के लिए नहीं हैं, अपितु परीक्षा के लिए हैं। यदि परेशान न हों तो मुक्ति में जाएंगे। कहना तो आसान है, परंतु समाधि बनाए रखना बहुत दुष्कर है। हमारा प्रयास यदि उच्च है तो सफलता अवश्य मिलेगी। यदि कोई निंदा करे तो वह हमारी फाइल को मजबूत करता है। आस्रव के स्थान संवर के बन जाते हैं। आग लगने पर कुआँ नहीं खोदना। सामायिक जीवन को स्थिर करने का प्रयास है। 48 मिनट से चालू हो व पूरे जीवन में स्थिरता होनी

चाहिए। सामायिक करने पर मोक्ष निश्चित है। तनाव से विश्राम सामायिक से ही मिलता है। कठिनाई में प्रतिज्ञा नहीं छोड़नी चाहिए। मन से ठहर जाएं तो कोई कठिनाई विचलित नहीं कर सकती।''

श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि सबसे बड़ा दान अभयदान है। सभी जीवों के प्रति आत्मभाव रखना चाहिए। श्री संजय मुनि जी म.सा. ने **'वामा देवी के प्यारे'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि नवकार मंत्र में अद्भुत शक्ति है। नवकार मंत्र पर हमारी अटूट श्रद्धा होनी चाहिए। गुरु राम जन्मभूमि पर गुरुदेव का चातुर्मास होने जा रहा है। इस चातुर्मास का अधिक से अधिक लाभ उठाना है।

दिनभर की एक प्यास कच्चे पानी से नहीं बुझाने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। विश्व नवकार मंत्र दिवस के उपलक्ष्य में नवकार मंत्र की एक माला फेरने का संकल्प अनेक जनों ने लिया। गंगाशहर की रिद्धि-सिद्धि कॉलोनी के गणमान्यजनों ने क्षेत्र स्पर्शने एवं बीकानेर संघ ने विभिन्न प्रसंगों हेतु विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। कोलकाता से माहेश्वरी समाज के प्रमुख सागरमल जी मल्ल ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

आत्मबल, सब बलों में प्रमुख

4 अप्रैल 2025, समता भवन, उदयरामसर। भोर की मंगल प्रार्थना में **'महावीर भगवान की सदा जय हो'** का संगान किया गया। धर्मसभा में अपार जनमेदिनी को ज्ञान एवं क्रिया का सार समझाते हुए शास्त्रज्ञ आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि **''धर्म का मर्म जानने का प्रयास नहीं किया जा रहा है। धर्म निर्भय बनाता है। जितना गहरा धर्म होगा उतनी ही निर्भयता आएगी। कामदेव सेठ सुदर्शन के समान निडर रहे। जीव का कभी नाश नहीं होता। आत्मा ही कर्ता और विकर्ता है। स्वयं के कर्मों का फल ही जीव भोगता है। कष्टों को सहने में आत्मबल ही महत्वपूर्ण है। आत्मा पर विश्वास से आत्मबल उत्पन्न होता है। आकांक्षा भय पैदा करने वाली है। आत्मबल ही सब बलों में प्रमुख है। समभाव से कर्मों की निर्जरा होती है। मन में उथल-पुथल न हो तो कर्मनिर्जरा होती है। समभाव से जो आत्मा को भावित करता है, वह मोक्ष को प्राप्त करता है।''**

श्री शोभन मुनि जी म.सा. ने **'जिया कब तक उलझेगा, संसार विकल्पों में'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि संकल्प-विकल्प हर स्थिति में सम रहें। जो शुभ विचार मन में पैदा हों उन्हें कल पर नहीं टालें। काया की चंचलता से मन भी चंचल बनता है। एक को साधने से सब सध जाएगा और मन पर नियंत्रण हो जाएगा।

विद्वान आमोदवर्धन जी कौण्डिन्यायन एवं विद्वान प्रमोदवर्धन जी कौण्डिन्यायन, काठमांडु (नेपाल) ने गुरुदर्शन का लाभ लेकर विभिन्न विषयों पर चर्चा के साथ मार्गदर्शन प्राप्त किया। उदयरामसर संघ के अध्यक्ष के नेतृत्व में संघ प्रमुखों ने आचार्य भगवन् के आगामी वर्ष 2026 के चातुर्मास हेतु पुरजोर विनती श्रीचरणों में प्रस्तुत की। राष्ट्रीय महामंत्री, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगणों सहित देश के अनेक स्थानों से आगत श्रद्धालुओं ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

आर्यावृत्त स्कूल में श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने बच्चों का मार्गदर्शन करते हुए फरमाया कि जल्दी सोना और जल्दी उठने का नियम बहुत ही अच्छा है। जो भी इसका पालन करता है वह अच्छा बच्चा है। सूर्योदय से पहले उठने से भाग्योदय होता है। सुबह उठकर भगवान का स्मरण व घर के सभी बड़ों को प्रणाम अवश्य करें। माता-पिता और गुरुजनों के आशीर्वाद से हर क्षेत्र में सफलता मिलती है। नशा जीवन की दशा और दिशा दोनों बिगाड़ देता है। इसलिए नशे से दूर रहें।

राग-द्वेष, कर्मबंध का बीज

5 अप्रैल 2025, समता भवन, उदयरामसर। प्रात:कालीन मंगल प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए तरुण तपस्वी परम पूज्य आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''आत्मा की अवस्था को स्वीकार करें तो ही धर्म के चिंतन का महत्व है। कर्मबंधन से मुक्त होने का उपाय क्या है? कर्मों का बंध राग-द्वेष के सक्रिय होने से होता है। राग-द्वेष के बीज हटते ही कर्मबंधन रुक जाता है। राग-द्वेष पर विजय पाने के लिए पाँचों इंद्रियों के विषयों पर समभाव बनाएं। इससे कर्मबंध नहीं होगा। साधना से यदि राग-द्वेष को खतम कर दिया तो संसार नहीं बढ़ेगा। कर्मबंधन के कारण ही जीव संसार में रुका हुआ है। काम-क्रोध, मद-मत्सर, लोभ-मोह के दलदल में आत्मा फँसी हुई है। दुर्लभ मनुष्य जन्म मिला है, अपनी आत्मा को जागृत करें। राग-द्वेष छोड़कर समभाव में रहना सीखें।''

श्री किशोर मुनि जी म.सा. ने श्रावक के आठ वचन व्यवहार बताते हुए फरमाया कि

(1) श्रावक जी थोड़ा बोले,
(2) मीठा बोले,
(3) आवश्यकता अनुसार बोले,
(4) चतुराई पूर्वक बोले,
(5) अहंकार रहित बोले,
(6) मर्मकारी भाषा न बोले,
(7) सूत्र सिद्धांत न्याययुक्त बोले,
(8) सभी जीवों हेतु हितकारी वचन बोले।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि साध्वीवृंद ने **'गुरुवर पधारो हृदय में विराजो'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। डॉ. मनमोहन सिंह जी यादव ने नाना गुरु के वर्षावास की स्मृतियों को ताजा करते हुए आचार्य श्री रामेश के आगामी वर्ष 2026 के चातुर्मास हेतु विनती प्रस्तुत की। एक-एक व्यक्ति को व्यसनमुक्त करने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। शुभकरण जी सिपानी एवं प्रभात जी सिपानी ने स्वाध्यायी सेवा देने का संकल्प लिया। कृष्णा पब्लिक स्कूल, उदयरामसर में व्यसनमुक्ति संस्कार जागरण कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

संयम, मंजिल प्राप्ति का मार्ग

6 अप्रैल 2025, समता भवन, उदयरामसर। उत्क्रांति प्रदाता परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर के मुखारविन्द से उद्घोषित रविवारीय समता शाखा की आराधना करने हेतु अपार जनसमूह उत्साह के साथ उपस्थित हुआ। सभी ने सामूहिक रूप से समता आराधना कर अपना जीवन धन्य बनाया। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा में धर्म का मर्म समझाते हुए विश्ववंदनीय आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''धर्म-क्रिया करने वाले लोग धर्म का मर्म नहीं जानते। धर्म का निचोड़ अहिंसा, संयम, तप से सत्य को प्राप्त करना है। कोई भी काम निरंतरता से हो तो उस काम में निपुणता मिलती है। जो जीव आत्मा को भूलता है वह प्रमादी कहलाता है। भगवान ने साढ़े बारह वर्ष की साधना में निरंतर चिंतन किया कि मैं कौन हूँ? मेरा अस्तित्व क्या है? पुद्गलों को आँखों से देखा जाता है। आध्यात्मिक ज्ञान को जानना सरल नहीं है, पर असंभव भी नहीं है। भगवान महावीर की यात्रा नयसार के भव से शुरु हुई। सत्य (आत्मा) को जानने से ही यात्रा प्रारंभ होगी। आज के युग में मोबाइल जीवन में घुल गया है। सुबह उठते ही मोबाइल देखना जरूरी हो गया है, पर आत्मा का चिंतन गौण होता जा रहा है। मन से ही नरक व स्वर्ग की यात्रा प्रारंभ होती है। आत्मा को हृदय से ही जाना जाता है। संयम मंजिल दिलाने वाला मार्ग है।''

श्री राजरत्न मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि अनुकूलता व प्रतिकूलता में समभाव रखें। **'राम गुरु का शरणा है, भव में फिर क्यूँ डरना है'** गीतिका प्रस्तुत की। साध्वी श्री सुसौम्य श्री जी म.सा. ने फरमाया कि समय मात्र का प्रमाद न करें। हमारा जीवन जैसा है वैसा ही रहे तो गुरु सान्निध्य का फिर क्या लाभ लिया? बारह व्रत अवश्य ही ग्रहण करें।

साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत का संगान किया। साध्वी श्री चंद्रिका श्री जी म.सा. आदि ठाणा का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ। पाँच-पाँच सामायिक करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। वेज-नॉनवेज संयुक्त होटल में खाने-पीने का त्याग संपूर्ण सभा ने ग्रहण किया। 9 अप्रैल को विश्व नवकार महामंत्र दिवस पर अधिक से अधिक जाप करने की प्रेरणा दी गई। माहेश्वरी समाज के प्रमुख किशन जी मल्ल, सागर जी मल्ल, बसंत जी मल्ल ने आचार्य भगवन् के वर्ष 2026 के चातुर्मास की पुरजोर विनती गुरुचरणों में प्रस्तुत की। पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगणों, पूर्व संभागीय आयुक्त वंदना जी सिंघवी एवं पिपलिया कलां निवासी शिखर सदस्य दंपत्ति ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

साधक तुरंत प्रतिक्रिया न करे

7 अप्रैल 2025, समता भवन, उदयरामसर। **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** भक्ति गीत के सामूहिक गान के साथ प्रात:कालीन प्रार्थना में प्रभु एवं गुरुभक्ति हुई। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को अपनी पीयूषवर्षिणी वाणी में आगमज्ञान प्रदान करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''गुरु से प्राप्त ज्ञान को हम अपने जीवन में उतारना तो चाहते हैं, परंतु क्या हम जानते हैं कि गुरु के उपदेश का उद्देश्य क्या है? गुरु के उपदेश का उद्देश्य है कि हमारा चित्त निरंतर बिना बाधा के आनंद में मगन रहे। सर्व साधारण का जीवन कभी अति हर्षित व कभी अति खिन्न रहता है। यह उतार-चढ़ाव का माहौल सभी के जीवन में आता है। परंतु क्या हम इस माहौल में भी स्थिर रह सकते हैं? शास्त्रों में आया है कि साधक को न कुछ प्रिय है, न कुछ अप्रिय अर्थात् साधक सदैव समभाव में रहता है।''**

श्री राजरत्न मुनि जी म.सा. ने **'जिह्वा पर हो नाम तुम्हारा, प्रभुवर ऐसी भक्ति दो'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि धन सुविधा दे सकता है, पर सुरक्षा नहीं दे सकता। धर्म से धन, सुरक्षा एवं सद्गति तीनों ही मिलेंगे।

एक घंटा मौन एवं दशवैकालिक सूत्र की पाँच गाथाएँ याद करने का प्रत्याख्यान अनेक गुरुभक्तों ने ग्रहण किया। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा।

नवकार करे भव पार

8 अप्रैल 2025, समता भवन, उदयरामसर। भोर की मंगल प्रार्थना के पश्चात् प्रवचन स्थल पर आयोजित दिव्य धर्मसभा में चतुर्विध संघ की उपस्थिति में ज्ञानपिपासु भक्तों को संबोधित करते हुए प्रशान्तमना परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''कल विश्व नवकार मंत्र दिवस पर 108 देशों में नवकार गूंजेगा। इस मंत्र का माहात्म्य हमने कम समझा है क्योंकि हमें यह बिना पुरुषार्थ के प्राप्त हो गया है। जो वस्तु पुरुषार्थ से प्राप्त होती है केवल उसी का महत्व समझ में आता है। नवकार का स्मरण हम परम्परा से करते हैं या श्रद्धा से? श्रद्धा हृदय का भाव है तथा अदृश्य है। पाप छिपाने से बढ़ता है व प्रकट करने से नष्ट हो जाता है। जब हम धर्मस्थल में आते हैं तो धर्मात्मा बन जाते हैं व घर जाते ही क्या बन जाते हैं? प्रेरक विचार पर तुरंत कार्य करें व बुरे

विचारों में विलम्ब करें। यह समता सर्व मंगल के परिप्रेक्ष्य में कहा है। किसी भी अनबन पर तुरंत क्षमायाचना कर लेनी चाहिए। नवकार मंत्र का जाप प्रतिदिन होना ही चाहिए व पूरे विश्वास एवं अंतर्भावों के साथ होना चाहिए। नमन हो तभी कुछ बात है। मान गलेगा तभी नमन होगा। नमन से ही निर्वाण होगा। भावना जुड़ने से ही वंदन-नमन सार्थक होगा। नवकार के स्मरण से ही श्रीमती का नाग फूलों की माला व सुदर्शन सेठ की शूली का सिंहासन बन गया।'' अंत में आचार्य भगवन् के श्रीमुख से **'नवकार मंत्र है महामंत्र, इस मंत्र की महिमा है भारी'** गीत के गान से सभी भावविभोर हो गए।

श्री छत्रांक मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि समुद्रपाल का जन्म जहाज में हुआ था। उनके पिता का नाम पाल था। वे चंपानगरी के निवासी थे। पाल एक वणिक था। उस समय पुरुष को 72 कला व स्त्री को 64 कला में निपुण किया जाता था। अशुभ कर्मों का बंध होता है तो इसका बहुत ही बुरा फल मिलता है।

साध्वी श्री समीहा श्री जी म.सा. ने फरमाया कि यदि हम अपने जीवन को उन्नत बनाना चाहते हैं तो गुरु के उपदेशों को धारण करें व गुरु के प्रति अहोभाव को विकसित करें।

शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा जी म.सा. आदि साध्वीवृंद ने गुरुभक्ति प्रस्तुत किया। प्रतिदिन नवकार मंत्र की माला फेरने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया।

शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 का जोधपुर से उदयरामसर गुरुचरणों में पदार्पण हुआ। यहाँ पर विभिन्न त्याग-प्रत्याख्यान हुए। दर्शनार्थियों का ताँता लगा रहा।

विश्व नवकार मंत्र दिवस पर 108 देशों में पंच-परमेष्ठी की गूँज

9 अप्रैल 2025, समता भवन, उदयरामसर। आज का पावन दिवस विश्व नवकार मंत्र दिवस के रूप में 108 देशों में आयोजित हुआ। देश की राजधानी दिल्ली के विज्ञान भवन में माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र जी मोदी की पावन उपस्थिति में विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया। जन-जन में अपूर्व श्रद्धा-भक्ति का सैलाब उमड़ पड़ा। आचार्य भगवन् के पावन सान्निध्य में आयोजित हुए जाप कार्यक्रम में सकल जैन, ग्रामवासियों, विद्यार्थियों एवं शिक्षकों सहित जैनेतर जनों ने भाग लेकर पंच परमेष्ठी को नमन कर अपना जीवन धन्य बनाया। हर आयु वर्ग के गुरुभक्तों ने नवकार मंत्र का जाप करके कीर्तिमान स्थापित किया। आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर की प्रेरणा से जीतो ने विश्व नवकार मंत्र दिवस के रूप में सभी को इस साधना-आराधना से अभिभूत कर दिया। प्रात: मंगलमय प्रार्थना में भी **'नवकार मंत्र है महामंत्र, इस मंत्र की महिमा है भारी'** गीत का मंगल गान किया गया।

प्रात: 8:01 बजे से श्री रामलोचन मुनि जी म.सा. ने नवकार मंत्र जाप का आगाज किया। सामूहिक रूप से प्रात: 9:36 बजे तक लगातार महामंत्र का जाप करते-करते सभी यथाभाव तद्रूप हो गए। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए साधना के शिखर पुरुष, आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''नवकार महामंत्र अत्यंत प्रभावी है, इसलिए यह महामंत्र है। अन्य बहुत से मंत्र भौतिक कामनाओं के लिए जपे जाते हैं, किंतु यह सबसे बड़ा मंत्र है। यह मंत्र किसी व्यक्ति, जाति का नहीं है। जिन्होंने भी अर्हता प्राप्त कर ली है, वे अरिहंत बन गए। सिद्धि प्राप्त करने वाले सिद्ध बन गए। जिन्होंने आठ कर्मों का क्षय कर लिया, उन्हें पुन:

संसार रूपी कीचड़ में नहीं आना है। आचार्य संघ अनुशास्ता होते हैं। उनके 36 गुण हैं। उपाध्याय, जो ज्ञान देने वाले होते हैं, वे आत्मबोध कराते हैं। लोक में जितने भी साधु-महात्मा हैं, जो अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह का पालन कर रहे हैं, उन्हें नमस्कार किया गया है। नवकार मंत्र में गुणों की सर्वत्र पूजा होती है। इस मंत्र का जाप आत्मशांति देने वाला है। जाप से आपको आनंद, शांति मिली या नहीं? कोई भी विपत्ति उसमें आ नहीं सकती। सेठ सुदर्शन द्वारा नवकार मंत्र जाप से शूली का सिंहासन बन गया। नवकार मंत्र के प्रभाव से कठिनाइयों में समाधान मिल जाता है। महामंत्र में नकारात्मकता का कोई स्थान नहीं है। मंत्र के प्रत्येक पद से सकारात्मक सोच निर्मित होती है। आज पूरे विश्व में तनाव व संघर्ष का माहौल बन रहा है। शांति की प्राप्ति महामंत्र से ही होगी। महामंत्र के निरंतर जाप से चित्तवृत्तियाँ संशोधित होंगी आत्मकल्याण सध पाएगा। महामंत्र का जाप केवल एक दिन नहीं वरन् हर वक्त करना चाहिए। प्रत्येक कार्य से पहले नवकार मंत्र का उच्चारण करना चाहिए। इसका दूसरा नाम है पंच परमेष्ठी मंत्र। इस मंत्र पर पूरा भरोसा होना चाहिए। मंत्र का मुख्य उद्देश्य आत्मिक शांति प्राप्त करना है।''

स्थानीय संघ मंत्री ने सभी के सहयोग के प्रति आभार अभिव्यक्त किया। महेश नाहटा ने पंच परमेष्ठी का निरंतर जाप करने का निवेदन किया। प्रतिदिन हर घर में 9 नवकार मंत्र का जाप करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। हर जाति, वर्ग, कौम ने उत्साह के साथ जाप में भाग लेकर स्वर्णिम इतिहास रच दिया।

शासन दीपक श्री लाघव मुनि जी म.सा., श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा., श्री अनन्य मुनि जी म.सा., श्री लक्षित मुनि जी म.सा. का रतलाम (म.प्र.), धमतरी (छ.ग.) व शहादा (महा.) से उग्र लंबा विहार कर गुरुचरणों में पधारना हुआ।

भगवान महावीर जन्मकल्याणक

किसी का बुरा न सोचो, न करो - आचार्य भगवन्

भगवान महावीर हमारे आदर्श हैं - उपाध्याय प्रवर

10 अप्रैल 2025, समता भवन, उदयरामसर। सत्य, अहिंसा के अग्रदूत भगवान महावीर का जन्मकल्याणक उन्हीं के 82वें पट्टधर युगपुरुष, दिव्यविभूति परम श्रद्धेय आचार्य श्री रामलाल जी म.सा., बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय राजेश मुनि जी म.सा. के पावन सान्निध्य में अत्यंत ही श्रद्धा-भक्ति, उल्लासमय वातावरण में मनाया गया। प्रात: मंगल प्रार्थना में **'जय बोलो महावीर स्वामी की'** एवं **'मेरे प्यारे देव गुरुवर, श्री जिनधर्म महान'** गीत के संगान के साथ प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई।

प्रवचन स्थल पर आयोजित समवसरण-सी अद्‌भुत छटा जैसी प्रतीत हो रही धर्मसभा में परमागम रहस्यज्ञाता, आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यवाणी में फरमाया कि ''जिनका जन्म कल्याणमय होता है उनके जन्म को कल्याणक कहा जाता है। सभी का जन्म कल्याणक नहीं होता है। तीर्थंकर भगवान स्वयं का एवं औरों का कल्याण करते हैं। भगवान का सिद्धांत है सबका भला करो। कोई क्या कर रहा है यह उसकी मर्जी है। इंद्र, भगवान को मेरु पर्वत पर लेकर गए। भगवान मजबूत थे इसलिए उन्होंने साधना का पथ स्वीकार किया। वे साधु की तरह रहे और साधना में मस्त हो गये। भगवान का जीवन-दर्शन प्रेरणादायक है। मन कमजोर होने पर नकारात्मकता हावी होती है। भगवान ने अपने मन को जीतने का लक्ष्य बनाया और अपने आपको

जगाया। हम सबको भी साधना में लगना चाहिए। हमें वातावरण की चिंता नहीं करनी चाहिए। हमारे मन में कषायों की भीड़ भरी है। उसके कारण हमेशा परेशान होना पड़ता है। मन पर नियंत्रण के लिए एक विचार को बार-बार नहीं पकड़ना चाहिए। इससे मन कमजोर होता है। अपने पर नियंत्रण कर मन पर विजय प्राप्त करनी है। पापों का त्याग कर पर्व में प्रवेश करना है। किसी पर भी आक्रोश नहीं करना, सबका भला करना चाहिए। मन को अकेला कर लो। मन पर नियंत्रण कर लो। भगवान ने प्रत्येक जीव को अभयदान दिया। भगवान महावीर ने न किसी का बुरा सोचा और न किया। हम भी उनके बताए रास्ते पर चलें। न किसी के प्रति बुरा सोचें और न करें। सब का भला करें। सभी के प्रति दया व मैत्रीभाव हो।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी वाणी में फरमाया कि **''गुरु के गुरु तीर्थंकर भगवान हैं। हम सबके आदर्श हैं। मनोविज्ञान का लक्ष्य है कि व्यक्ति जिसे अंतर्मन से अच्छा समझता है, श्रेष्ठ समझता है तो उसके गुणों का प्रभाव होने लगता है। शर्त यह है कि वह व्यक्ति सत्य हो, सच्चे मन से जप करता हो व अत्यंत अहोभाव होना चाहिए। भक्ति से गुण प्रकट हो जाते हैं। भगवान की वाणी सुनकर भाव प्रकट करना है कि वे जीव धन्य हैं जो संयम मार्ग पर बढ़ चले हैं। सुबाहु कुमार ने भगवान की वाणी सुनी। उनके तुरंत दीक्षा का भाव नहीं बना, पर अंतरमन से अहोभाव प्रकट किया कि भगवान शहर में पधारेंगे तो दीक्षा ग्रहण करूंगा। हमें अपने अहोभाव को जाँचना चाहिए। हमारा आदर्श कौन है? हम जिसे आदर्श मानते हैं, क्या हमारे जीवन में उनके गुण ढ़ल जाएंगे? मेरी जगह महावीर भगवान होते तो वे क्या करते? यह हमें चिंतन करना चाहिए। भगवान के स्थान पर यदि मैं होता तो क्या करता? हमारी जगह भगवान क्या करते? भगवान की वाणी में श्रद्धा होनी चाहिए।''**

साध्वी श्री रुचि श्री जी म.सा. ने फरमाया कि दो प्रकार के पुरुष होते हैं - 1. आचारवान, 2. विचारवान। प्रभु महावीर के जीवन में कथनी व करनी एकसमान थी। जो भी फरमाया वह स्वयं ने करके देखा। हम सौभाग्यशाली हैं कि गुरु राम का दरबार साक्षात् देख रहे हैं।

श्री अनन्य मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि भगवान के पाँच कल्याणक में से आज जन्मकल्याणक है। सोना, जागना, उठना व चलना भगवान ने मानव की ये चार अवस्थाएँ बताई हैं। भगवान के बताए सिद्धांतों का अनुसरण करने के लिए भगवान ने दो मार्ग बताए हैं - श्रमण व श्रमणोपासक।

श्री लक्षित मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज भगवान का जन्म हुआ था। भगवान ने जो मार्ग बताया उस पर हम कितने चलते हैं, ये चिंतन का विषय है। गुरु आज्ञा की आराधना हमें निरंतर करनी है।

श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि प्रभु महावीर के अनंत गुणों में से कम से कम दो गुण अपने जीवन में उतारें। गौतम स्वामी भगवान की शरण में आए तो उनका जीवन सफल हो गया।

श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज के भव्य प्रसंग पर एक ही बात ध्यान रखनी है कि जैसे पक्षी को उड़ने के लिए पंख चाहिए वैसे ही धर्म में श्रद्धा व समर्पणा होनी चाहिए। धर्म में आने के लिए आत्मा का बोध होना जरूरी है।

समभाव की साधना से सफल होता है जीवन

11 अप्रैल 2025, समता भवन, उदयरामसर। धार्मिक दैनिक प्रार्थना में **'हुक्मगणी का पाट हुआ है निहाल जी, युग-युग जीओ मेरे गुरु रामलाल जी'** गुरुभक्ति गीत से प्रभु एवं गुरुभक्ति कर श्रद्धालुओं ने अपना जीवन

धन्य बनाया। सामूहिक रूप से रामेश चालीसा का पाठ किया गया। रामेश खुला प्रश्न मंच का भी आयोजन हुआ।

आज के पावन दिवस पर आयोजित विशिष्ट धर्मसभा में उपस्थित श्रद्धालुओं को भगवान महावीर के पावन संदेश से आप्लावित करते हुए व्यसनमुक्ति प्रणेता परमाराध्य आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''आपकी साधना का उद्देश्य (लक्ष्य) क्या है? जब तक कर्मों को नष्ट नहीं किया जाएगा तब तक साधना का महत्व नहीं है। केशीश्रमण एवं गौतम स्वामी के संवादानुसार भय, तृष्णा हमारे अंदर गहराई में जमी हुई है। जब तक यह जमी रहेगी तब तक मोक्ष नहीं होगा। जड़ें जमीन में गहराई तक रहेंगी तब तक पेड़ हरा-भरा रहेगा। वैसे ही जब तक भय, तृष्णा, राग-द्वेष का रस मिलता रहेगा तब तक भवभ्रमण रहेगा। भगवान महावीर के सान्निध्य में जो भी मोक्ष गये उन सभी ने भय, तृष्णा को समाप्त कर दिया था और वे मुक्त हो गये। क्षुधा एवं मान का भेदन किये बिना मुक्त नहीं हो सकते। सभी को समभाव में रहना चाहिए। अहंकार के कारण गुस्सा आता है। समभाव से साधना होती है। हर जीव को सावधान रहना चाहिए। साधक हर अवस्था में सजग रहता है। श्री जवाहरलाल जी म.सा. दीक्षा से पूर्व ठंड में दो रजाई ओढ़कर सोते थे। दीक्षा के बाद विहार करके स्वयं के सांसारिक गाँव में पधारे तो खुले में एक प्याऊ में विराजना हुआ। वहीं रात्रि विश्राम किया। सुबह सांसारिक परिवार वाले दर्शन हेतु आए तो पूछा, रात्रि कैसी रही? तो आपश्री जी ने फरमाया कि प्रतिक्रमण के बाद सो गया फिर सुबह प्रतिक्रमण करने हेतु ही उठा। मन में आनंद ही आनंद रहा। भौतिकता के नशे के कारण आध्यात्मिकता दबी हुई है। हमें अपनी दृष्टि सही रखनी है। जैसी नजर होगी वैसी दुनिया दिखेगी। मानव जीवन बड़ी मुश्किलों से मिला है। अगर संयमित जीवन नहीं अपनाया तो यह जीवन व्यर्थ है। संसार असार है।''

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने आचार्य भगवन् के जीवन पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि आचार्य भगवन् का जीवन सफल हो गया। हम उनके सान्निध्य में अपना जीवन सफल बनाएं।

शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री अर्चिता श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरभि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुसौम्य श्री जी म.सा. आदि साध्वीवर्याओं ने '**राम गुरु से यहीं कहना कि हम शिष्याओं को शिक्षा देते रहना**' गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। महिला मंडल व बालिका मंडल, गंगाशहर-भीनासर व उदयरामसर सहित संपूर्ण सभा ने '**भाग्यशाली हैं हम पुण्यशाली, जो गुरु पाए राम से**' गायन कर सम्पूर्ण सभा को राममय बना दिया।

महेश नाहटा ने आचार्य भगवन् के अतिशयों का उल्लेख किया। संघ अध्यक्ष ने महापुरुषों के प्रति अहोभाव व्यक्त किये। गंगाशहर-भीनासर के श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल, समता बालिका मंडल के 400 से अधिक भाई-बहनों ने उदयरामसर तक पैदल यात्रा कर गुरु दर्शन व प्रवचन का लाभ लिया। देशनोक से भी भाई-बहनों ने पैदल पहुँचकर लाभ लिया। कई भाई-बहनों ने 5 सामायिक करने का प्रत्याख्यान लिया। परम गुरुभक्त विजय कुमार जी सांड ने अपना 34वां मासखमण पूर्ण कर गजब निष्ठा व श्रद्धा का परिचय दिया। अनुमोदना के स्वर सम्पूर्ण सभा में गुंजायमान हो गए। सभा ने एक स्वर में '**सदा स्वस्थ रहें गुरु हमारे**' गुरुभक्ति के भाव भगवान के चरणों में समर्पित कर आचार्य भगवन् के उत्तम स्वास्थ्य व दीर्घायुष्य की मंगलकामना की। सुमधुर गायिका अल्का जी डागा, बीकानेर ने गुरुचरणों में सुंदर भाव गीत प्रस्तुत किये। आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ फरमाया।

महापुरुषों का गंगाशहर-भीनासर में ऐतिहासिक मंगल प्रवेश, श्रद्धा का जनसैलाब उमड़ा

तेले की लड़ी एवं अन्य तपों का आगाज

12 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। आराध्यदेव, जन-जन के आस्था के केंद्र, आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि ठाणा का हुक्मसंघ की राजधानी ऐतिहासिक श्री जैन जवाहर विद्यापीठ (आचार्य जवाहर की पुण्यभूमि) में '**त्रिशला नंदन वीर की, जय बोलो महावीर की**', '**ना थांरा है ना म्हारा है, राम गुरु सिगळा रा है**', '**राम गुरु विराट है, दीक्षाओं का ठाट है**', '**जय गुरु नाना, जय गुरु राम**', '**जय-जयकार, जय-जयकार, राम गुरु की जय-जयकार**' आदि गगनभेदी जयघोषों के साथ अपार जनमेदिनी की उपस्थिति में भव्य मंगल प्रवेश हुआ। चारों ओर खुशियों का माहौल था। जैन-जैनेतर सर्व समाज ने महापुरुषों की अगवानी की। शासन दीपक श्री गौतम मुनि जी म.सा. एवं शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा., साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा आदि ठाणा की अगुवाई में लगभग 1 कि.मी. आगे पधारकर महापुरुषों की अगवानी कर दर्शन वंदना का लाभ लिया। इस अलौकिक क्षण ने सभी को भावविभोर कर दिया।

श्री जैन जवाहर विद्यापीठ में मंगल प्रवेश के पश्चात् आचार्य भगवन् ने असीम कृपा करके मंगलपाठ प्रदान किया। यहाँ प्रवेश के पश्चात् अपार जनमेदिनी सहित चतुर्विध संघ से सुशोभित यह प्रवेश यात्रा विशाल धर्मसभा में परिवर्तित हो गई। आज के अद्भुत प्रसंग का यह विशेष क्षण सभी को संयम भावों से भरने वाला था। इतनी विशाल उपस्थिति कि श्री जैन जवाहर विद्यापीठ का विशाल प्रांगण भी छोटा प्रतीत हो रहा था। गर्मी की प्रचंडता होते हुए भी लोग एक-दूसरे से सटकर बैठे पूर्ण तन्मयता से गुरुदर्शनों का आनंद ले रहे थे। हर कोई गुरुवर की एक झलक पाकर आनंदविभोर दृष्टिगत हुआ।

इस विशाल धर्मसभा को अमृतरस से पावन करते हुए आचार्य भगवन् ने अपनी संयमी वाणी में दिव्यदेशना देते हुए फरमाया कि ''जैसा सिद्ध भगवान का स्वरूप है, वैसा ही हमारा रूप है। हम अभी भटके हुए हैं। पाँच इंद्रियों के विषयों में अटक जाते हैं। परमात्मा की भक्ति इस प्रकार से की जानी चाहिए कि आत्मारामी के रूप में हमारे भाव उभरें कि मैं भी उन जैसा बनूँ। पंच परमेष्ठी को नमस्कार करने से उनका कुछ घटता या बढ़ता नहीं, बल्कि यह हमारा ही लाभ है। हम अनुभव करें कि कितने पाप नष्ट हुए, जब नवकार मंत्र घूँटी में मिला। क्या पाया, कितना मन हलका हुआ, कितनी शांति मिली? नहीं मिल पाई तो नवकार मंत्र का दोष नहीं है। हमारी आराधना का दोष है। साधु के दर्शन किन भावों से किये जा रहे हैं, यह बहुत प्रधान है। साधु के दर्शन महान पुण्य प्रवर्धक हैं। बिना भावना के हम केवल देखने वाले होते हैं, दर्शन करने वाले नहीं। दर्शन श्रद्धा से जुड़ा होता है। गौतम स्वामी ने दर्शन किए, लेकिन गोशालक ने केवल देखा। हम भगवान के सामने रहें और देखें तो जरूरी नहीं है कि दर्शन हों। जो लाभ अर्जुन ने प्राप्त किया, वह लाभ दुर्योधन नहीं उठा पाया।''

बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. ने अपनी ओजस्वी-तेजस्वी वाणी में फरमाया कि ''**श्रद्धा के भीतर अहोभाव से आचार्य भगवन् के दर्शन होते हैं। हमें यह देखना है कि हम किन आँखों से देख रहे हैं। महत्वपूर्ण है आचरण करना। यह जो अवसर मिला है, इसका लाभ तब मिलेगा जब हमारी मनोवृत्ति**

हो कि हम भी गुरु जैसे बनें। उनके समान गुणों का प्रकटीकरण उद्देश्य बिंदु बने। हमारे भीतर यही भावना रहे कि मैं इनके जैसा कब बनूँ।''

श्री गौतम मुनि जी म.सा. ने आचार्य भगवन् के लिए '**मोहे लागी लगन गुरु दर्शन की, आस लगी थी कब से भारी**' एवं उपाध्याय प्रवर के लिए '**जय-जय हो मुनिवर तेरी, गूँजे चहुंदिश यश तेरा**' गीत प्रस्तुत करते हुए अपने भावोद्गार में फरमाया कि आज गुरुदर्शन कर हम निहाल हो गए।

श्री हर्षित मुनि जी म.सा. ने '**गुरुवर तेरे चरणों की गर धूल जो मिल जाए**' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि दीक्षा एवं अक्षय तृतीया के प्रसंग पर महापुरुषों का पदार्पण हुआ है। हम सभी अहोभाव से उनकी पर्युपासना करें। नवकार महामंत्र का सामूहिक जाप भी करवाया गया। महिला मंडल ने '**भाग खुल गए हैं, गुरुवर पधारे हैं**', बहू मंडल ने '**राम गुरुवर सा आया**', बालिका मंडल ने '**उमड़-घुमड़कर बरसो मेघा**' स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले), साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा., साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा., साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा., साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा., साध्वी श्री खंतिप्रिया श्री जी म.सा., साध्वी श्री रिभिता श्री म.सा. आदि साध्वी मंडल ने गुरुभक्ति गीत का संगान किया। गंगाशहर-भीनासर संघ मंत्री ने '**गुरु राम आ गए हैं, युगद्रष्टा श्री जवाहराचार्य जी महाराज की पुण्य भूमि पर गुरु राम पधारे हैं**' गीत प्रस्तुत करते हुए महापुरुषों के आगमन को अनंत पुण्यवानी का उदय बताया।

आचार्य भगवन् के दिव्यगुणों से प्रेरणा लेने का निवेदन महेश नाहटा ने किया। वर्ष में 12 एकासन, 12 आयंबिल, 12 उपवास करने एवं एकसाथ तेला तप करने का प्रत्याख्यान कई भाई-बहनों ने लिया। अनेक स्थानों के श्रद्धालु भाई-बहनों ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया। शासन दीपक श्री प्रकाश मुनि जी म.सा., श्री चंद्रेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा का गुरुचरणों में पधारना हुआ।

मुझे परमात्मा बनना है

13 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, भीनासर। प्रात: रविवारीय समता शाखा में समता आराधना करने हेतु जनसैलाब उमड़ पड़ा। तत्पश्चात् आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए मानवता के मसीहा आचार्य भगवन् ने अपनी दिव्यदेशना में फरमाया कि ''**परमात्मा का स्मरण मनोकामना पूर्ण करने के लिए होता है। भक्ति से मेरी परमात्मा से दूरी मिट जाए। परमात्मा मेरा जीवन बन जाएं। मन में दूसरा कोई विकल्प नहीं हो। जड़ पदार्थों, प्रेम, राग-द्वेष आदि की मन में एंट्री न हो। जब अंतर्भाव जागृत होता है तब ऐसा होता है। मन जिस सांसारिक पदार्थ पर अटक जाए वह हमें भटकाने वाला होगा। भगवान की भक्ति से भगवान बनेंगे, क्योंकि एक ही भाव है कि मुझे परमात्मा बनना है।**''

श्री संजय मुनि जी म.सा. ने '**अहो-अहो मेरे भगवन् सुहाने दर्शन हो**' गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि महापुरुषों के सान्निध्य को पाकर अगर हम धर्म, तप, आराधना से नहीं जुड़े तो कोरी भक्ति रह जाएगी। अवसर का लाभ उठाने वाला अपना जीवन धन्य बना लेता है।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले), साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा., साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री सुमेधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री समीधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुजाता

श्री जी म.सा., साध्वी श्री जीतयशा श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल ने **'गुरु राम रो दरबार म्हानै प्यारो लागे'** गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया।

एडिशनल कमिश्नर इंडस्ट्रीज, जयपुर के राजेंद्र जी सेठिया, जयपुर निवासी पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष आदि ने गुरुदर्शन सेवा का लाभ लिया। भोजन करते समय मोबाइल का प्रयोग नहीं करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया। साध्वी श्री अर्चिता श्री जी म.सा. आदि साध्वी मंडल का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ।

'एक समय में एक काम' सारी समस्याओं का समाधान

14 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। प्रात: मंगल प्रार्थना में **'नवकार के सुमिरन से कट जाते भव बंधन'** एवं **'हुक्मगणी का पाट हुआ है निहाल जी'** भक्ति गीतों के साथ भक्ति की गई। प्रवचन स्थल पर आयोजित विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य उपाध्याय प्रवर ने अपनी दिव्य तेजस्वी वाणी में फरमाया कि ''गुरु हमें लक्ष्य दिखाते हैं। लक्ष्य जीवन की पहली जरूरत है। लक्ष्यहीन व्यक्ति का सारा पुरुषार्थ परिणामदायक नहीं होता है। **'एक समय में एक काम'** यह सूक्ष्म मनोविज्ञान है। सारी समस्याओं का समाधान है यह सूत्र। इस सूत्र को जीवन में अपनाकर देखो। जो कर रहे हैं उसमें गहरा डूब जाओ। स्मृतिशेष पूज्याचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. भंवरे और गोबरीले का दृष्टांत फरमाते थे। गोबरीला अपने मुँह में गोबर लेकर भंवरे के पास आया। उस कारण उसे फूलों की सुगंध, उनकी सुंदरता, उनके पराग कणों का रस अच्छा नहीं लग रहा था। ठीक उसी प्रकार यहाँ हैं तो यहाँ की ऊर्जा को पूर्ण रूप से आत्मसात कर लो। धर्म ही कर रहे हैं तो 100 प्रतिशत धर्म में ही लग जाएँ।''

श्री दिव्यदर्शन मुनि जी म.सा. ने **'दुनिया में देव अनेकों हैं, अरिहंत देव का क्या कहना'** गीत प्रस्तुत करते हुए फरमाया कि परमात्मा की वाणी संसार के दु:खों से बचाने वाली है। प्रवचन में महापुरुषों की वाणी श्रवण कर चिंतन करें और उसे अपने जीवन आचरण में लाएँ।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि साध्वीवर्याओं ने गुरुभक्ति गीत प्रस्तुत किया। एक घंटा मौन रहने का संकल्प कई भाई-बहनों ने लिया। दशवैकालिक सूत्र के प्रथम अध्ययन की पाँच गाथाएँ एक महीने में कंठस्थ करने का नियम कई भाई-बहनों ने लिया।

साध्वी श्री हर्षिला श्री जी म.सा., साध्वी श्री मणामगंधा श्री जी म.सा. आदि ठाणा का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ। तपागच्छ समाज के प्रमुख प्रो. निहाल जी कोचर (बीकानेर), श्री जैन पब्लिक स्कूल की प्राचार्य रूपश्री जी कोचर, अग्रवाल समाज के प्रमुख किशन जी मस्करा (दिल्ली) आदि ने गुरुदर्शन-सेवा का लाभ लिया।

इस पंचम आरे में भी सुख-शांति का अनुभव संभव

15 अप्रैल 2025, श्री जैन जवाहर विद्यापीठ, गंगाशहर-भीनासर। पक्षियों की मधुर कलरव के मध्य प्रात:कालीन मंगल क्षणों में प्रार्थना रूपी मधुर भक्ति गीतों का संगान कर प्रभु एवं गुरुभक्ति की गई। तत्पश्चात् प्रवचन स्थल के विशाल पंडाल में आयोजित धर्मसभा में उपस्थित गुरुभक्तों पर पंच परमेष्ठी की कृपा का वर्षण करते हुए बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर ने अपनी ओजस्वी अमृतवाणी में देशना देते हुए फरमाया कि **''गुरु हमें जीना सिखाते हैं। गुरु हमें दिशा देते हैं। सही – सुख-शांति की दिशा। गलत – तरीका है दु:ख और अशांति की ओर कदम बढ़ाना। मन**

में ऐसी क्या बात है जो व्यक्ति को हमेशा प्रसन्न और आनंदित बनाए रख सकती है? क्या यह संभव है कि पंचम आरे में सुख-शांति का अनुभव कर सकते हैं? लोगों का प्रभाव दु:खी होने को बाध्य नहीं करता। स्वस्थ शरीर का तापमान 94 फॉरेनहाइट रहेगा। चाहे कितनी ही ठंड हो जाए शरीर का तापमान इतना ही रहेगा। शरीर अपने स्वभाव से हिलता नहीं है। लोहा गर्मी में गरम और सर्दी में ठंडा हो जाता है, पर शरीर का तापमान वही रहता है। सबसे बड़ी बात है मन का ऊर्जावान होना। ऊर्जा यदि कायम है तो विभिन्न क्षेत्रों में विकास है। शांति कभी भंग नहीं हो ऐसा क्या सूत्र है? भगवान का उपदेश समाधान देने वाला है। 'अप्पाण मेव तजुझाहि किं ते जुझेण वज्जओ' सारे दु:खों का कारण लड़ाई करना, युद्ध करना है। बाहर से युद्ध करना इसलिए है कि मैं किसी को बदलना चाह रहा हूँ, पर बदल नहीं पा रहा हूँ। हमारे अनुसार दुनिया चले। चाहे परिवार हो, समाज हो या अन्य कुछ हम सबको अपने अनुसार चलाना चाहते हैं, पर ऐसा हो नहीं रहा है। जीवन के दु:खों की जड़ है दूसरों को बदलने की कोशिश। बहुत बड़ा भ्रम है कि बाहर का बदलाव हमें सुखी बना देगा। स्वयं के भीतर देखने की जरूरत है। हम दु:खी क्यों होते हैं? इसका कारण है – वो ऐसा क्यों कर रहा हैं, वो ऐसा क्यों नहीं कर रहा है। बस ये भाव अपने मन से डिलीट कर दो। मन को अपनी तरफ मोड़ लो। मन को अपनी तरफ मोड़े रखना ही साधना का संघर्ष है। निष्कर्ष रूप तीर को मोड़ने के लिए स्टाइल चाहिए, ताकत की जरूरत नहीं है।''

श्री लाघव मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि '**उवसमेण हणे कोहं**' उपशम से क्रोध का हनन करो। आपश्री जी ने '**जयगान हो, जयगान हो, जयगान हो**' गीत भी प्रस्तुत किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. (बीकानेर वाले) आदि साध्वीवर्याओं ने '**सरल जीवन का करें अभिनंदन**' गीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री लक्ष्यप्रभा जी म.सा., साध्वी श्री हर्षिता श्री जी म.सा. आदि साध्वीवृंद एवं श्री मयंक मुनि जी म.सा. आदि ठाणा का गुरुचरणों में पदार्पण हुआ। श्री लाघव मुनि जी म.सा. के सान्निध्य में महिला शिविर में संकल्प सूत्र की महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई।

गंगाशहर-भीनासर में पूर्व से ही शासन दीपिका साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-7, शासन दीपिका साध्वी श्री कल्याण कँवर जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री चंद्रप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-7, शासन दीपिका साध्वी श्री मनोरमा श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री श्वेता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री उज्ज्वलप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री अर्चिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री ललिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5, शासन दीपिका साध्वी श्री प्रभावना श्री जी म.सा., शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3, शासन दीपिका साध्वी श्री निखार श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4, शासन दीपिका साध्वी श्री खंतिप्रिया जी म.सा. आदि ठाणा-23, शासन दीपिका साध्वी श्री रिभिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-5, शासन दीपिका साध्वी श्री मणामगंधा श्री जी म.सा., साध्वी श्री हर्षिला श्री जी म.सा. आदि ठाणा एवं राकेश मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-14 का गुरुचरणों में पदार्पण हो गया है।

प्रतिदिन दोपहर में परम श्रद्धेय आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के पावन सान्निध्य में आगम वाचनी, धर्मचर्चा, प्रश्नोत्तरी एवं जिज्ञासा-समाधान आदि धार्मिक कार्यक्रमों का ठाट लग रहा है। त्रिवेणी संगम में चतुर्विध संघ की उपस्थिति पावन करने वाली है। जिनवाणी की अमृत वर्षा से धर्मप्रेमी जनता आत्मतृप्त हो रही है। 20 अप्रैल व 30 अप्रैल (अक्षय तृतीया) के दीक्षा प्रसंग को लेकर संघ में अपूर्व धर्मोल्लास का वातावरण बना हुआ है। गंगाशहर-भीनासर के गुरुभक्तों की सेवा, समर्पणा एवं चारित्रात्माओं की भक्ति, आराधना बेजोड़ है।

उदयरामसर में भगवान महावीर जन्मकल्याणक एवं आचार्य श्री रामेश जन्मोत्सव के उपलक्ष्य में आयोजित '**राम गूँज**' नामक एक अनोखी क्विज़ (प्रतियोगिता) '**सामान्य ज्ञान, जैन धर्म, शासन नायक भगवान महावीर**' विषय पर आयोजित की गई, जिसमें प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रतियोगिता में **प्रथम–** नीता जी कोठारी, अमिता जी संचेती, कंचन जी बेताला, **द्वितीय–** संजू जी चौरड़िया, कंचन जी पुगलिया, मोनिका जी कोठारी, **तृतीय–** दिशा जी कोठारी, रेखा जी पारख, कविता जी बेगानी रहे। संघ सहित महिला समिति एवं युवा संघ का पूर्ण सहयोग रहा।

तपस्या सूची

संत-सती वर्ग			
श्री हैमगिरि मुनि जी म.सा.	तेला तप	श्री रामहृदय मुनि जी म.सा.	50 आयंबिल लगातार

श्रावक-श्राविका वर्ग	
आजीवन शीलव्रत	प्रकाश जी भूरा–गंगाशहर, करणाराम जी मेघवाल, कमल जी विमला देवी सिपानी–बेंगलुरु/उदयरामसर, जीवनलाल जी कोठारी–डूंगरपुर, किशन जी मनोहरी देवी साध–उदयरामसर, सुंदरलाल जी सिपानी, रमेश जी–ऊषाकिरण जी बागड़ी–कोलकाता/उदयरामसर, सागरमल जी मल्ल, मुरलीधर जी सरोज देवी पुरोहित, अमरचंद जी विमला देवी वाल्मिकी, शिवरी जी ओम जी वाल्मिकी, शांति देवी सज्जनलाल जी वाल्मिकी, माणकचंद जी मुन्नी देवी बैद, सुंदरलाल जी पुष्पा देवी सिपानी–उदयरामसर, धर्मचंद जी असलेखा जी सोनावत, संजय जी सुनीता जी सेठिया, शेषकरण जी दुर्गा देवी बेगाणी, गणपत जी सेठिया
वर्षीतप	शांता बाई मांडोत–बेंगलुरु, डॉ. मोनिका बोकड़िया–उदयपुर, इंदरचंद जी बोथरा–सूरत, ममता जी छाजेड़–चाड़ी
गाथा का स्वाध्याय	**वर्ष में दो लाख –** मंजू देवी मिन्नी
	वर्ष में एक लाख – प्रमिला जी बोथरा, कंचन देवी छल्लाणी, असलेखा देवी सोनावत, तारा देवी सेठिया

-महेश नाहटा

आंतरिक तत्वों को देखने के लिए ज्ञान की तीक्ष्णता का होना आवश्यक है अर्थात् ज्ञान की जितनी निर्मलता बढ़ती है, उतनी ही तीक्ष्णता की स्थिति बनती जाएगी। ज्ञान की निर्मलता, जीवन की निर्मल अवस्था पर अवलंबित है। जीवन को निर्मल बनाने के लिए भौतिक वस्तुओं से ममत्व को हटाना आवश्यक है। भौतिक वस्तुओं से जितना-जितना ममत्व हटेगा, उतना-उतना जीवन पवित्र बनता जाएगा। जीवन पवित्रता का मूल आंतरिक मानस वृत्ति है। उसको व्यवस्थित करने के लिए सच्चे ज्ञान की दशा एवं व्यवस्थित कार्यक्रम होना तथा व्यर्थ की कल्पना का परित्याग, अत्यंत सादी वृत्ति के साथ समता सिद्धांत-दर्शनपूर्वक समता जीवन दर्शन का सहज रूप में आना नितांत जरूरी बन जाता है। इन वृत्तियों को लाने के लिए नियमित अभ्यास का निश्चित समय निर्धारण तथा आंतरिक ग्रंथियों को सुलझाने के लिए अभ्यास के समय बारीकी से चित्त की वृत्तियों को पहचानने के प्रयत्न के साथ कठिनाइयों को दूर करने के लिए सही निर्णायक बुद्धिपूर्वक सावधानी रखना आवश्यक है। साथ ही उलझी समस्याएँ नहीं सुलझें तो नोट करने का ध्यान तथा योग्य गुरु के पास हल लेते हुए चला जाए तो आंतरिक तत्व सहज ही विदित हो सकते हैं।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

राम चमकते भानु समाना

विविध समाचार

✧✧✧✧✧✧✧ मेवाड़ अंचल ✧✧✧✧✧✧✧

उदयपुर। समता बहू मंडल द्वारा वार्षिक स्नेह मिलन एवं पारितोषिक वितरण कार्यक्रम का आयोजन हिरण मगरी सेक्टर-4 में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नवकार मंत्र जाप एवं संघ समर्पणा गीत के सामूहिक गान के साथ हुआ। आयोजन के दौरान विभिन्न श्रेणी की लगभग 18 श्राविकाओं को उनके उत्कृष्ट सेवा कार्यों हेतु सम्मानित किया गया। आयोजन के मध्य '**धर्म अभी नहीं तो कभी नहीं**' तथा '**तप की महिमा**' विषयों पर नाटिकाएँ प्रस्तुत की गई। दोनों नाटिकाओं की शानदार प्रस्तुति के पश्चात् आयोजन स्थल हर्षध्वनि से गूँज उठा। कार्यक्रम के दौरान विगत एक वर्ष में बहू मंडल द्वारा सम्पन्न विभिन्न गतिविधियों को वीडियो के माध्यम से प्रदर्शित किया गया। कार्यक्रम में श्री साधुमार्गी जैन संघ के अध्यक्ष, महिला मंडल की पूर्व अध्यक्ष, समता बहू मंडल की पूर्व अध्यक्ष, समता युवा संघ के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, स्थानीय युवा संघ मंत्री सहित अनेक गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। अनेक वक्ताओं ने भावाभिव्यक्ति में बहू मंडल के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। अंत में राम गुरु की जय-जयकार के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

उड़ान-2.0 शिविर का आयोजन : श्री साधुमार्गी जैन संघ, उदयपुर द्वारा सात दिवसीय बाल संस्कार शिविर 'उड़ान-2.0' का शानदार आयोजन शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. आदि ठाणा-4 के पावन सान्निध्य में किया गया। शिविर में 260 से अधिक बच्चों ने प्रतिदिन ज्ञान-ध्यान, संस्कार, मोटीवेशन, योग, स्वास्थ्य, आर्ट, क्राफ्ट आदि अनेक विषयों पर रुचिकर सेशन में भाग लिया।

साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा. ने '**द कर्मा**' **(जैसे को तैसा)**, '**अच्छा दिखने से बेहतर अच्छा बनना**' **(सप्तकुव्यसन)**, '**कब तक याद रखोगे**' **(चक्रवर्ती की रिद्धि)**, '**इट हेप्पन**' **(आलोचना)**, '**इट इज अर्थफुल बी द बेस्ट एट ऑल**', '**फिर कब**' **(10 दुर्लभ)**, साध्वी श्री सौम्यसुगंधा श्री जी म.सा. द्वारा '**परम कल्याण के विषय**', '**समकित पालें**', '**सम्मानपूर्वक क्षमा करें**', '**इंद्रिय दमन करें**', '**जीवों पर करुणा करें**', '**उदार भाव से सुपात्रदान**', '**उत्कृष्ट भाव से सेवा**' आदि विषयों पर बच्चों को ज्ञानार्जन कराया गया। साध्वी श्री निर्वेद श्री जी म.सा. ने जैन इतिहास पर कक्षाएँ लीं।

दिवस की शुरूआत भक्ति व योगा के रोचक सेशन से होती। मोटिवेशनल स्पीकर द्वारा जमीकंद, वेज-नॉनवेज, सोशियल डिटॉक्स, पेरेन्ट्स एण्ड इंटरनेक्ट्स मैरिज, स्ट्रेस फ्री एनवायरमेंट, डोंट गेट इंफ्लुन्स्ड, दानपेटी आदि विषयों पर बच्चों की कार्यशाला ली गई। विभिन्न नवाचारों सहित आई जैन माई जैन, नो एण्ड ग्रो, सिद्धिम एवं अभिमोक्षम् आदि पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किये गये।

शिविर के छठे दिन व्यसनमुक्ति रैली का आयोजन हुआ, जिसमें प्रेरणास्पद स्लोगन के साथ बच्चों व संघ सदस्यों ने व्यसनमुक्ति का संदेश दिया। शिविर के दौरान '**बच्चे मन के सच्चे**' कार्यक्रम में बच्चों

को उनके द्वारा हुई गलती को एक पर्ची पर लिखकर उसे बॉक्स में डालने को कहा गया, जिस पर शिविर के अंतिम दिवस उन सभी बच्चों को गलती की आलोचना के लिए समाधान पर्ची दी गई। बच्चों को प्रतिदिन पुरस्कार प्रदान किये गये। शिविर अवधि में बच्चों द्वारा सीखे गये ज्ञान की परीक्षा ली गई। 10 से अधिक अध्यापिकाओं ने अध्यापन सेवाएँ दी।

शिविर के अंतिम दिवस पर आयोजित समापन समारोह में श्री साधुमार्गी जैन संघ, महिला मंडल, समता युवा संघ, समता बहू मंडल के अध्यक्ष-मंत्रीगण सहित अनेक गणमान्यजनों सदस्यों की उपस्थिति रही। सभी बच्चों को पारितोषिक प्रदान किया गया। शिविर में सहयोग करने वाले सभी संघ सदस्यों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। बीकानेर में होने वाले अभिमोक्षम् शिविर के लिए बच्चों का रजिस्ट्रेशन किया गया।

- प्रियंका जैन, अल्पेश धाकड़

✧✧✧ बीकानेर-मारवाड़ अंचल ✧✧✧

उदासर। शासन दीपिका साध्वी श्री गुणसुंदरी श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 का नोखा मंडी, नोखागाँव, देशनोक, गंगाशहर-भीनासर आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए समता भवन, उदासर में मंगलमय पदार्पण हुआ। आपश्री जी के सान्निध्य में तप-त्याग, धर्म-ध्यान का ठाट लग गया। गुणदृष्टि, आध्यात्मिक आरोग्यम् विषय पर शिविर हुआ। नवकार मंत्र दिवस, भगवान महावीर जन्मकल्याणक पर नवकार जाप एवं भगवान महावीर का गुणानुवाद किया गया। महावीर जन्मकल्याणक पर 51 एकासन हुए। भाई-बहनों की विशेष उपस्थिति रही। यहाँ से विहार कर आपश्री जी का रानी बाजार रूपा जैन भवन, बीकानेर की ओर विहार हुआ।

- राजेंद्र सेठिया

✧✧✧✧ जयपुर-ब्यावर अंचल ✧✧✧✧

ब्यावर। पर्याय ज्येष्ठ श्री अनन्त मुनि जी म.सा., शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा. आदि ठाणा 5 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री रोशन कँवर जी म सा आदि ठाणा-14 के सानिध्य में समता भवन मे होली चातुर्मासिक पर्व पक्खी पर्व के रूप में तेला, पौषध, संवर के साथ मनाया गया। शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि यह पर्व यही संदेश देता है कि बुरा न मानो होली है अर्थात् एक-दूसरे से मनमुटाव नहीं रखो। जिससे द्वेष है उसे गले लगाने का पर्व है होली।

श्री अमित मुनि जी म.सा. ने '**संसार दुःख में झुलस रहा वैरागी बनूं वैरागी बनूं**' भजन के साथ फरमाया कि जितना त्याग होगा उतनी शांति मिलेगी। साध्वी श्री पराग श्री जी म.सा. ने फरमाया कि हो ली यानी जो गलती हो गई उसके लिए गुरु से प्रायश्चित लेना चाहिए। हमारी श्रद्धा देव, गुरु, धर्म पर मजबूत होनी चाहिए।

शासन दीपक श्री नीरज मुनि जी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में समता भवन में 10 अप्रैल को भगवान महावीर जन्मकल्याणक पुच्छिसु णं के स्वाध्याय के साथ मनाया गया। आपश्री जी ने प्रवचन में '**महावीर भगवान देना मुझे सद्ज्ञान जी**' गीत के साथ फरमाया कि चैत्र सुदी 13 को कुंडलपुर में महारानी त्रिशला की कोख से भगवान महावीर का जन्म हुआ। उसी समय बहुत से बालकों का जन्म हुआ होगा लेकिन ग्रह-नक्षत्र एक जैसे नहीं होते। भगवान जन्म से ही तीन ज्ञान के स्वामी थे। साध्वी श्री पराग श्री जी म.सा. ने फरमाया कि भगवान महावीर का जीवन सहनशीलता के साथ साधना में आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

दिनांक 11 अप्रैल को आचार्य श्री रामेश के जन्मोत्सव पर श्री राजन मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आज गुरुदेव का सम्मान करने का प्रसंग प्राप्त हुआ है। हमें आचार्य श्री रामेश से जिनेश्वर देवों का शासन मिला है। श्री प्रणत मुनि जी म.सा. ने फरमाया कि आचार्य श्री रामेश का जन्म हमारे लिए सौभाग्योदय है। आपश्री गुणों की खान हैं।

- नोरतमल बाबेल

✧✧✧✧✧✧ मध्य प्रदेश अंचल ✧✧✧✧✧✧

ग्राम गुराड़िया पित्रामल (नानेश नगर), नागदा। धर्मपाल संस्कार बौद्धिक एवं विकास समिति द्वारा श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के अंतर्गत 23 मार्च 2025 को समता भवन एवं मांगलिक परिसर हेतु भूमि दानदाताओं व अतिथियों के करकमलों से नवकार महामंत्र की मंगल ध्वनि के साथ निर्माण कार्य का शुभारंभ हुआ। अपने माता-पिता की पावनस्मृति में भूमि प्रदाता धर्मपाल जी जैन, सागरमल जी चोखालाल जी सुपुत्र धूल जी सोलंकी द्वारा प्रदान की गई 1 बीघा भूमि पर बच्चों को ज्ञान एवं संस्कार प्रदान करने के उद्देश्य समता भवन का निर्माण हो रहा है। कार्यक्रम के दौरान भूमिप्रदाता महानुभावों का अतिथियों एवं सदस्यों द्वारा बहुमान किया गया।

इस अवसर पर अतिथि के रूप में संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, अंचल राष्ट्रीय मंत्री सहित अनेक पदाधिकारियों व धर्मपाल प्रमुखगणों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंतर्गत धर्मपाल संघ स्थापना के 61 वर्ष पूर्ण होने पर ग्राम गुराड़िया पित्रामल में व्यसनमुक्ति रैली का आयोजन भी किया गया, जिसमें समाजजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर परम उपकारी भगवान महावीर स्वामी जन्मकल्याणक एवं आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के जन्मदिवस पर दोनों दिन नागदा जंक्शन, रतलाम, मंदसौर, जावरा, बड़नगर, शाजापुर, उज्जैन आदि क्षेत्रों के लगभग 91 गाँवों के धर्मपाल परिवारों ने नवकार मंत्र का जाप किया। जाप में उपस्थित जनों ने आचार्य भगवन् के विभिन्न गुणों का गान किया।

- संयोजक, धर्मपाल संस्कार बौद्धिक एवं विकास समिति

कानवन। शासन दीपिका साध्वी श्री दर्शना श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुरिद्धि श्री जी म.सा., साध्वी श्री सुसिद्धि श्री जी म.सा. आदि ठाणा का समता भवन में सुख-सातापूर्वक विराजना हुआ। आपश्री जी के सान्निध्य में प्रार्थना, प्रवचन, धार्मिक कक्षाओं, ज्ञानचर्चा आदि का ठाट लग गया। साध्वीवर्याओं द्वारा प्रश्न व्याकरण सूत्र के माध्यम से संवर एवं आस्रव की सुंदर विवेचना की गई। 9 अप्रैल को नवकार मंत्र दिवस पर आयोजित जाप कार्यक्रम में सैंकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने जाप किया। तत्पश्चात् साध्वीवर्याओं ने नवकार मंत्र की महिमा बताई। 10 अप्रैल को महावीर जयंती पर 3-3 सामायिक एवं भगवान महावीर के सिद्धांतों की व्याख्या की गई। 11 अप्रैल को गुरु राम जन्मोत्सव तप-त्याग के साथ मनाया गया। इसी के साथ गुणानुवाद सभा, सामूहिक एकासन व 27 संवर तप आदि की आराधना हुई। प्रतिदिन एकासन, आयंबिल, उपवास के साथ संवर तप का ठाट लगा रहा, जिसमें 11 अप्रैल तक 192 संवर हुए। कई श्रावक-श्राविकाओं के संवर की अठाई व तेले हो चुके हैं। **- संदीप बाँठिया**

✧✧✧ छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल ✧✧✧

अर्जुंदा। शासन दीपिका साध्वी श्री श्रुतशीला जी म.सा. आदि ठाणा-3 का बालोद, सांकरी, सिकोसा होते हुए अर्जुंदा जैन स्थानक भवन में विराजना हुआ। आपश्री जी के सान्निध्य में प्रार्थना, प्रवचन, ज्ञानचर्चा आदि में जैन-जैनेतर भाई-बहनों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। **मुमुक्षु भाई गौरव जी नाहटा, मुमुक्षु बहनों नेहा जी डोसी एवं साक्षी जी भंसाली** ने दर्शन-सेवा का लाभ लिया। स्थानीय संघ द्वारा मुमुक्षु भाई-बहनों का आत्मीय स्वागत किया गया। महिला मंडल ने दीक्षा गीत प्रस्तुत किया।

शासन दीपिका साध्वी श्री श्रुतशीला जी म.सा. ने संयम को मानव जीवन का सार निरुपित करते हुए फरमाया कि विरल आत्माएँ ही संयम मार्ग पर आगे बढ़ते हैं। वीर माता-पिता बधाई के पात्र हैं। मुमुक्षु भाई-बहनों ने आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के प्रति अहोभाव व्यक्त करते हुए अपनी संतानों को आरुग्गबोहिलाभं में अवश्य भेजने का आह्वान किया। **- अमरचंद बाफना**

धमतरी। शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा.

आदि ठाणा का गुंडरदेही, कलंगपुर, मोखा, पलारी, आमदी आदि क्षेत्रों में धर्म प्रभावना करते हुए धमतरी में 9 मार्च को पदार्पण हुआ। आपश्री जी के सान्निध्य में प्रार्थना, प्रवचन, धर्मचर्चा, प्रतिक्रमण, रात्रि संवर आदि धार्मिक आयोजन हुए। होली चातुर्मासिक प्रसंग पर संतवृंद के मुखारविंद से प्रभावशाली आगमसम्मत प्रवचन हुए। इसी के साथ एकासना, बियासना, उपवास, बेला, तेला, संवर, प्रतिक्रमण आदि धर्माराधनाएँ संपन्न हुई।

मुमुक्षु भाई लीलमचंद जी सुराना का गुरुचरणों में दीक्षा आज्ञा-पत्र समर्पित करने के पश्चात् 16 मार्च को यहाँ आगमन पर आयोजित स्वागत रैली में अनेक स्थानों पर भव्य स्वागत किया गया। नगर निगम महापौर रामू जी रोहरा ने भी स्वागत कर संयमी जीवन की मंगलकामना की। प्रवचन सभा में अपनी भावाभिव्यक्ति में मुमुक्षु श्री लीलमचंद जी सुराना जी ने कहा कि मेरी विगत 10 वर्षों से संयम ग्रहण करने की भावना थी, जो अब पूरी होने जा रही है। श्री अक्षय मुनि जी म.सा. ने संयम जीवन की महत्ता पर प्रकाश डाला। एक अलग कार्यक्रम में अनेक संस्थाओं द्वारा मुमुक्षु भाई एवं उनके परिजनों का स्वागत-बहुमान किया गया।

दिनांक 23 मार्च को **मुमुक्षु लीलमचंद जी सुराना, मुमुक्षु गौरव जी नाहटा, मुमुक्षु नेहा जी डोसी, मुमुक्षु साक्षी जी भंसाली** का चारित्रात्माओं के दर्शनार्थ आगमन हुआ। प्रवचन सभा में समता बहू मंडल ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। महेश नाहटा ने गुरु की महत्ता प्रकट करते हुए आज के दिन कुछ न कुछ त्याग-प्रत्याख्यान ग्रहण करने की प्रेरणा दी।

मुमुक्षु भाई-बहनों ने अपने उद्गार में कहा कि संयम जीवन ही सार है। कर्मों के बंधन से बचने के लिए हम अपना सारा जीवन जिनशासन में आचार्य श्री रामेश के चरणों में समर्पित करने जा रहे हैं। आप सभी दीक्षा प्रसंग पर पधारकर अपना आशीर्वाद अवश्य प्रदान करें।

श्री अक्षय मुनि जी म.सा. ने संयमी जीवन पर विस्तार से व्याख्या फरमाते हुए मुमुक्षुओं के भावी संयमी जीवन की मंगलकामना की। सभी मुमुक्षु भाई-बहनों का श्री वर्धमान जैन स्थानकवासी संघ, श्री साधुमार्गी जैन संघ, समता महिला मंडल, समता युवा संघ एवं अन्य अनेक संस्थाओं द्वारा स्वागत किया गया। इसी के साथ सुराना, संचेती, नाहटा एवं भंसाली परिवार के वीर माता-पिता एवं परिजनों का भी सम्मान किया गया।

इस अवसर पर छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल के श्री साधुमार्गी जैन संघ की बैठक भी संपन्न हुई। बैठक में अंचल उपाध्यक्ष एवं मंत्री सहित शिविर ट्रस्ट एवं समता महिला मंडल के पदाधिकारियों सहित गणमान्यजनों की उपस्थिति रही। बैठक में संघ गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया।

म.सा. श्री जी का सदर स्थानक भवन से विहार कर रतनलाल जी सांखला के निवास शांति कॉलोनी में एवं यहाँ से मुमुक्षु लीलमचंद जी सुराना के निवास कांकेर रोड पर मंगल पदार्पण हुआ। यहाँ से चारामा, कांकेर, सरोना आदि क्षेत्रों को पावन करते हुए अक्षय तृतीया पर नगरी पधारना संभावित है। **-दीपक बाफना**

✧✧✧ कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल ✧✧✧

विशाखापट्टनम्। श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा भगवान महावीर जन्मकल्याणक एवं आचार्य श्री रामेश जन्मोत्सव पर 10-11 अप्रैल को गौशाला में गायों को हरी घास खिलाई गई एवं ऑल्ड एज होम में जरूरतमंदों को भोजन व जरूरी सामान के किट का वितरण किया गया। इस अवसर पर संघ सहित महिला मंडल एवं समता युवा संघ के पदाधिकारियों व सदस्यों की उपस्थिति रही। नवकार मंत्र जाप एवं आचार्यदेव की जय-जयकार के साथ कार्यक्रम संपन्न हुआ। **- अशोक लुणावत**

बंगाल, बिहार, नेपाल, भूटान, झारखंड, आंशिक ओड़िशा अंचल

हावड़ा। श्री साधुमार्गी जैन संघ द्वारा 30 मार्च को दीक्षार्थी अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें सैंकड़ों गुरुभक्तों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम प्रातः समता शाखा आराधना के साथ प्रारंभ हुआ। तत्पश्चात् **मुमुक्षु बहन मुस्कान जी सेठिया** का वरघोड़ा समता भवन नॉर्थ से निकाला गया, जो विभिन्न मार्गों से होते हुए समता भवन साउथ के समीप स्थित क्लब हाउस पहुँचा। यहाँ पर आयोजित हुए अभिनंदन समारोह में श्री साधुमार्गी जैन संघ, हावड़ा-कोलकाता, हिंदमोटर के संघ प्रमुखों ने मोमेंटो प्रदान कर मुमुक्षु बहन का शानदार अभिनंदन किया। अनेक वक्ताओं ने अपने उद्‌बोधन में महापुरुषों के प्रति अहोभाव व्यक्त किये।

भगवान महावीर जन्मकल्याणक के उपलक्ष्य में 10 अप्रैल को प्रभातफेरी का आयोजन किया गया। प्रभातफेरी समता भवन नॉर्थ से प्रारंभ होकर विभिन्न मार्गों से होते हुए समता भवन विवेक विहार में सम्पन्न हुई। इसमें सैंकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लेकर भगवान के संदेशों की गूँज से अहिंसामय माहौल बना दिया।

- महावीर धारीवाल

"

'इष्ट' से अधिक कोई मंगल हो नहीं सकता। आज समझ नहीं पाते इसलिए 'नमो अरिहंताणं' के पहले 'ओऽम, ह्रीं, श्रीं' लगाते हैं क्योंकि इष्ट पर आस्था नहीं है। इसीलिए तो हमें वांछित फल प्राप्त नहीं हो पाता। जहाँ 'नमो अरिहंताणं' में कहा 'सव्व पावप्पणासणो', क्या बाकी रहा? कुछ भी तो नहीं बचा। इष्टदेव का स्मरण जीवन को सुख देने वाला है। इष्ट गुरु होते हैं। गुरु कौन? जो अंधकार को रोकने वाला हो। अंधकार रुक गया, फिर मार्ग में विघ्न कहाँ? क्योंकि फिर तो प्रकाश ही प्रकाश है, फिर ठोकरें खानी नहीं पड़ती। जो प्रकाश में भी ठोकर खाए उसे तो ऊपर उठाना ही कठिन है। अंधकार में ठोकर खा ले उसे उठाना पड़ता है। जब प्रकाश हो गया तो विघ्न रह नहीं सकते। हर कार्य में सफलता प्राप्त हो सकती है। कहा गया है कि बिना फल की जानकारी के कोई कार्य में प्रवृत्ति नहीं करता। भगवान महावीर के जीवन–चारित्र को कहने–सुनने से हमें क्या मिलेगा? दान–तप, शील और भाव और उसके साथ ही त्याग–वैराग्य भी, क्योंकि त्याग–वैराग्य की छाप जब लगती है तभी उसे वीतराग–मार्ग माना जाता है। सम्यक्त्व दीक्षा भी ग्रहण करते हैं तो पहले वैराग्यभाव आवश्यक है। सम, संवेग, निर्वेद, अनुकंपा, आस्था, ये भी वैराग्य हैं। यह मुद्रा नहीं लगेगी तब तक वीतराग–शासन में प्रवेश हो नहीं पाएगा। हम हृदय से अनुरागपूर्वक उसे श्रवण करें।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

राम चमकते भानु समाना

जीवदया रखने से मन में, मिट जाए भव पीर...
सबको समझें निज समान, कह गए प्रभु वीर...

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

द्वारा सामाजिक कार्य की श्रृंखला में प्रस्तुत है

हृदय से करें हम सर्वधर्मी समर्पण
उससे ऊँचा है गुरुचरणों में सर्वस्व अर्पण

सर्वधर्मी (अप्रैल-मई-जून)
समर्पण

सर्वधर्मी को शिक्षा/रोजगार

आप सभी से निवेदन है कि अपने-अपने क्षेत्रों की रिपोर्ट बनाकर अवश्य भेजें।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला समिति
(अंतर्गत - श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ)

।।जय गुरु नाना।। ।।जय महावीर।। ।।जय गुरु राम।।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

(अंतर्गत - श्री अ.भा.सा. जैन संघ)

प्रतिक्रमण प्रतियोगिता

कर्मों का शमन – करें शुद्ध प्रतिक्रमण

महिला समिति लेकर आई है समय अवधि के साथ प्रतिक्रमण कंठस्थ का रोचक सफर

लक्ष्य घर – घर प्रतिक्रमण
हर – घर प्रतिक्रमण

संपूर्ण विधि
06–30 जुलाई 2025

तीन वंदना से पाँच वंदना तक
21 जून – 05 जुलाई 2025

बड़ी संलेखना से दो भाव वंदना तक
06 जून – 20 जून 2025

सात अणुव्रत से बारह अणुव्रत तक
21 मई–05 जून 2025

संलेखना के 5 अतिचार से छह अणुव्रत तक
06 मई – 20 मई 2025

इच्छामिणं भंते से बारह स्थुल तक
20 अप्रैल–05 मई 2025

Helpline : 6375633109

Please Scan
for REGISTRATION
Starts from 06th April

29-30 अप्रैल 2025

एक समय एक मंत्र एक गूंज

'विश्व नवकार महामंत्र दिवस' के स्वर्णिम अवसर पर देश के गौरवशाली प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र दामोदरदास जी मोदी का सकल जैन समाज के मध्य उपस्थिति हेतु श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की ओर से

हार्दिक आभार

जीतो एवं प्रत्येक जैन के सामूहिक प्रयासों से 108 देशों में अनेक स्थानों पर प्रात: 8:01 से 9:36 बजे आह्वानित समय के पश्चात् भी नवकार मंत्र की गूँज बनी रही। ऐसा लग रहा था जैसे संपूर्ण विश्व आज नवकार मंत्र का जाप कर अपूर्व शांति एवं अहिंसा के हिलोरे ले रहा है। जैसे वैमनस्यता, कुटिलता, कुविचारों एवं नकारात्मकता ने विश्राम ले लिया हो।

सफलता केवल एक कदम चलने से नहीं मिलती, इसके लिए कदम दर कदम चलना होता है। साथ ही यह भी फलसफा है कि अकेले चलने पर मंजिल तक पहुँचना भारी लगने लगता है और यदि सामूहिक रूप से चलते हैं तो ऐसे लगता है जैसे मंजिल स्वयं ही चलकर हमारे सामने आ गई हो। कुछ ऐसा ही संयोग विश्व नवकार महामंत्र दिवस के अवसर पर परिलक्षित हुआ।

ऐसे लगता है जैसे प्रत्येक जैन इसके लिए दृढ़ संकल्पित होकर आगे बढ़ा और यह सिद्ध कर दिया कि यदि दृढ़संकल्प हो तो सफलता स्वयं कदम चूमती है।

हमारे देश के गौरवशाली प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र दामोदरदास जी मोदी की सरलता, सहजता, विलक्षणता, जैन धर्म के मर्मस्पर्शी-तलस्पर्शी ज्ञान व उस ज्ञान के प्रस्तुतिकरण की जितनी उत्कंठ प्रशंसा की जाए, उतनी ही कम है। विश्व नवकार महामंत्र दिवस 9 अप्रैल 2025 को देश की राजधानी दिल्ली स्थित विज्ञान भवन में माननीय प्रधानमंत्री जी ने नवकार मंत्र की जो उत्कृष्ट व्याख्या प्रस्तुत की, वह विवेचन अपने आप में बहुत ही अद्भुत था। आपकी सादगी पर हर कोई अपने आपको गौरवान्वित महसूस कर रहा है। आपने जिस अपनत्व, तर्कशक्ति, सहज कटाक्ष के साथ नवकार मंत्र का हमारे जीवन में जो महत्व प्रतिपादित किया उससे हर कोई जैन धर्म की दृढ़ संयम साधना के प्रति नतमस्तक हो गया।

हम आपकी गौरवमयी उपस्थिति के लिए आपश्री का आभार ज्ञापन करते हुए उन दिव्य क्षणों की बार-बार अनुभूति कर स्वयं को सौभाग्यशाली एवं गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं कि हमें आप जैसी महाविभूति का सुखद सान्निध्य इस विशेष अवसर पर प्राप्त हुआ।

विज्ञान भवन में चारों संप्रदायों एवं 150 से अधिक साधुमार्गी जैन संघ के हजारों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति हर्षान्वित करने वाली थी। हम प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोगी रहे सभी जनों का हृदय से आभार ज्ञापित करते हुए आशान्वित हैं कि भविष्य में भी जैन धर्मावलंबी इसी प्रकार एकजुट, एक स्वर एवं एकाकार रूप में सामूहिक आयोजनों को सफल बनाएँगे।

आभारी

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति
श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राम चमकते भानु समाना

सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार

1. पात्रता

(1.1) यह पुरस्कार Award of Excellence के स्वरूप में भारत सरकार की उच्च प्रशासनिक सेवाओं में कार्यरत, जो जैन धर्मावलंबी शीर्षस्थ पदाधिकारी के रूप में विशेष ख्याति अर्जित कर जैन समाज को गौरवान्वित करते हैं, वे इस पुरस्कार हेतु चयनित किए जाने के पात्र समझे जाते हैं।

2. पुरस्कार के नामांकन

(2.1) किसी भी उपयुक्त पदाधिकारी, जो जैन मतावलंबी हो, का उपर्युक्त पुरस्कार हेतु नामांकन प्रस्तुत किया जा सकता है।

(2.2) जिस व्यक्ति को नामांकित किया जा रहा है, कृपया उसका पूरा नाम, पता, प्रशासनिक पद, संपर्क विवरण, सेवाक्षेत्र, निष्पादन रिकॉर्ड आदि का विस्तृत उल्लेख नामांकित अथवा संस्तुति में समाविष्ट करें।

3. पुरस्कार का स्वरूप

(3.1) चयनित पुरस्कार विजेता को श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से एक लाख रुपए का चेक, अभिनंदन-पत्र एवं स्मृति चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जाएगा।

4. आवृति : वार्षिक

निवेदक :
आई.ए.एस. उत्तमचंद नाहटा, दिल्ली
संयोजक
(सेठ श्री चम्पालाल सांड स्मृति
उच्च प्रशासनिक सेवा पुरस्कार समिति)

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम दिनांक 31 मई 2025 है। प्रविष्टियाँ केंद्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता :

केंद्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
मो.नं. : 7665001008 Email : ho@sadhumargi.com

29-30 अप्रैल 2025

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राम चमकते भानु समाना

आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार

आवृति द्विवार्षिक

समता विभूति, समीक्षण ध्यान योगी आचार्य श्री नानालाल जी म.सा. ने समाज व विश्व को समता दर्शन और व्यवहार की अनमोल विरासत प्रदान की। आचार्यश्री की पुण्यस्मृति में श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा '**आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार**' हेतु प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जा रही हैं।

1. पात्रता :-

(1.1) यह पुरस्कार शिक्षा, समाज सेवा, अध्यात्म, स्वास्थ्य, आर्थिक उत्थान, कृषि, पशुपालन, वन संरक्षण, पर्यावरण, व्यसनमुक्ति, जल संरक्षण इत्यादि जन सेवा-क्षेत्रों में कीर्तिमान स्थापित करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था को प्रदान किया जाता है।

(1.2) जनसेवा पुरस्कार हेतु किसी भी वर्ग, वर्ण या समाज का व्यक्ति अथवा संस्था, जो भारत में उपर्युक्त जन सेवा में कार्यरत हो, नामांकित किया जा सकता है।

2. आवेदन के नियम :-

(2.1) आवेदन-पत्र में नाम, पता, मोबाइल नंबर, ई-मेल, कार्यक्षेत्र, सेवाक्षेत्र आदि का पूर्ण उल्लेख हो। जिस व्यक्ति अथवा संस्था को नामांकित किया जा रहा है, उसके द्वारा प्रदत्त सेवाओं का रिकॉर्ड अर्थात् समाचार-पत्र की कटिंग, फोटोग्राफ, प्रमाण-पत्र, सम्मान-पत्र, स्मृति चिह्न के फोटोग्राफ आदि भी अवश्य भिजवाएँ।

(2.2) नामांकित व्यक्ति एवं संस्था की सेवा से लाभान्वित होने वाले व्यक्तियों अथवा संस्थाओं के लेटरहेड पर अनुशंसा-पत्र भी संलग्न किए जा सकते हैं। चूँकि यह पुरस्कार सेवा कार्य करने वाले व्यक्ति अथवा संस्था को दिया जा रहा है।

3. स्वरूप :-

(3.1) इस हेतु चयनित व्यक्ति अथवा संस्था को श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ की ओर से दो लाख रुपए की राशि का चेक, अभिनंदन-पत्र एवं स्मृति चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जाएगा।

::::: निवेदक :::::
अजय पारख, रायपुर
(संयोजक, आचार्य श्री नानेश जनसेवा पुरस्कार)

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम दिनांक 31 मई 2025 है। प्रविष्टियाँ केंद्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता :

केंद्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
मो.नं. : 7665001008 Email : ho@sadhumargi.com

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राम चमकते भानु समाना

आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार

श्री अ.भा.सा. जैन संघ द्वारा समता विभूति आचार्य श्री नानेश की पावन स्मृति में दिए जाने वाले 'आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार' के लिए प्रविष्टियाँ आमंत्रित की जा रही हैं।

1. पुरस्कार के लिए पात्रता एवं नियम

(1.1) यह पुरस्कार आचरण पर आधारित है। जिस व्यक्ति के जीवन में समता दर्शन और व्यवहार प्रत्यक्ष रूप से परिलक्षित होता है, वही व्यक्ति इस पुरस्कार हेतु नामांकित हो सकता है।

(1.2) इस पुरस्कार के लिए जो स्वयं को पात्र समझते हैं, आवेदन कर सकते हैं। अन्य व्यक्ति अथवा संस्था द्वारा भी इस प्रकार के श्रेष्ठ व्यक्ति का नाम प्रस्तावित किया जा सकता है।

(1.3) पुरस्कार के लिए जाति, धर्म एवं आयु आदि का कोई बंधन नहीं रहेगा।

2. पुरस्कार का स्वरूप

(2.1) पुरस्कृत होने वाले समता मनीषी को दो लाख रुपए का चेक, अभिनंदन-पत्र एवं स्मृति चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा किसी गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जाएगा।

3. आवृत्ति - द्विवार्षिक

: निवेदक :
रिटायर्ड जस्टिस जे.के. रांका, जयपुर
(संयोजक, आचार्य श्री नानेश समता पुरस्कार)

प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता :
केंद्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ,
समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
मो.नं. : 7665001008
Email : ho@sadhumargi.com

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम दिनांक **31 मई 2025** है। प्रविष्टियाँ केंद्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

राम चमकते भानु समाना

स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार

1. पात्रता

(1.1) यह पुरस्कार जैन धर्म, दर्शन, इतिहास, कला व संस्कृति तथा जैन साहित्य, काव्य कला व संस्कृति और कथा, निबंध, नाटक, संस्मरण व जीवनी आदि के संबंध में लिखित मौलिक ग्रंथ पर दिया जाता है।

2. पुरस्कार के नियम

(2.1) पुरस्कार हेतु प्रकाशित/अप्रकाशित (पांडुलिपि) अथवा दोनों प्रकार की कृतियाँ निर्धारित आदेवन-पत्र के साथ प्रस्तुत की जा सकती हैं।

(2.2) अन्य संस्थाओं द्वारा पूर्व में पुरस्कृत कृति पर यह पुरस्कार नहीं दिया जाएगा।

(2.3) प्रकाशित कृति का प्रकाशन पुरस्कार हेतु घोषित अवधि में (वर्ष 2016 से पूर्व नहीं) एवं घोषित विषय परिधि में ही होना चाहिए अर्थात् पुरस्कार हेतु प्रस्तुत कृति का प्रकाशन वर्ष 2016 के पश्चात् का होना चाहिए।

(2.4) पुरस्कार मूल्यांकन के लिए कृति की मुद्रित अथवा पांडुलिपि की चार प्रतियाँ निःशुल्क भेजनी होंगी। पांडुलिपि की 3 प्रतियाँ आवेदक को पुनः लौटा दी जाएँगी। मुद्रित कृतियाँ नहीं लौटाई जाएँगी।

(2.5) अप्रकाशित कृति (पांडुलिपि) की प्रतियाँ स्पष्ट टंकण की हुई अथवा हस्तलिखित, सुवाच्य एवं जिल्द बँधी होनी चाहिए।

(2.6) प्रतिभागी विद्वानों के लिए यह आवश्यक होगा कि वे कृति के संबंध में स्वयं की कृति होने एवं इसके मौलिक होने का प्रमाण-पत्र साथ भेजें।

3. स्वरूप

(3.1) पुरस्कार के अंतर्गत संघ की ओर से 51 हजार रुपए की राशि का चेक, अभिनंदन-पत्र एवं स्मृति चिह्न किसी विशिष्ट दिवस अथवा गरिमामय समारोह में सम्मानपूर्वक भेंट किया जाएगा।

निवेदक : रिटायर्ड आई.ए.एस. प्रदीप बुरड़, जयपुर
संयोजक, स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार समिति

आवृत्ति : वार्षिक

प्रविष्टियाँ भिजवाने का पता :
केंद्रीय कार्यालय : श्री अ.भा.सा. जैन संघ, समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.)
मो.नं. : 7665001008
Email : ho@sadhumargi.com

प्रविष्टियाँ भिजवाने की अंतिम दिनांक **31 मई 2025** है। प्रविष्टियाँ केंद्रीय कार्यालय के पते पर भिजवाएँ।

राम चमकते भानु समाना

श्रमणोपासक हेडलाइंस

- महापुरुषों की पावन प्रेरणा से 9 अप्रैल को विश्व नवकार मंत्र दिवस पर देश के गौरवशाली प्रधानमंत्री माननीय नरेन्द्र दामोदारदास जी मोदी की उपस्थिति में दिल्ली के विज्ञान भवन सहित 108 देशों में नवकार मंत्र की गूंज। दिल्ली में देशभर से 108 से अधिक संघों के प्रतिनिधियों ने उपस्थिति दर्ज कराई।
- आचार्य श्री जवाहरलाल जी म.सा. की पुण्यभूमि गंगाशहर-भीनासर में महापुरुषों के पावन सान्निध्य में 20 एवं 30 अप्रैल को दीक्षा प्रसंग सम्पन्न।
- संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगणों, शिखर सदस्यगणों, डॉ. मनमोहन सिंह यादव (सेवानिवृत्त उपखण्ड अधिकारी), पूर्व संभागीय आयुक्त वंदना जी सिंघवी, एडिशनल कमिश्नर इंडस्ट्रीज जयपुर के राजेन्द्र जी सेठिया, खरतरगच्छ के दिलीप जी नाहटा, बीकानेर तपागच्छ सम्प्रदाय के प्रमुख प्रो. निहाल जी कोचर, जैन पब्लिक स्कूल बीकानेर की प्राचार्य रूपश्री जी कोचर, माहेश्वरी समाज के प्रमुख सागर जी मल्ल, किशन जी मल्ल, बसंत जी मल्ल, अग्रवाल समाज दिल्ली के प्रमुख किशन जी मस्करा, काठमाण्डु (नेपाल) के विद्वान आमोदवर्धन जी कौण्डिन्यायन, विद्वान प्रमोदवर्धन जी कौण्डिन्यायन आदि प्रमुखगणों ने आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर आदि चारित्रात्माओं के दर्शन-वंदन का सौभाग्य प्राप्त किया।
- महावीर जन्मकल्याणक पर उदयरामसर में आचार्य भगवन् एवं उपाध्याय प्रवर के सान्निध्य में समवसरण-सा अद्भुत ठाट लगा।
- गंगाशहर-भीनासर संघ से 400 से अधिक एवं देशनोक से अनेक भाई-बहनों ने उदयरामसर तक पैदल यात्रा कर गुरुदर्शन कर प्रवचन श्रवण का लाभ लिया।
- नगरी (छ.ग.) एवं धर्मपाल क्षेत्र गुराड़िया पित्रामल में राष्ट्रीय अध्यक्ष महोदय के करकमलों से समता भवन हेतु निर्माण कार्य प्रारंभ। भगवान महावीर जन्मकल्याणक एवं आचार्य श्री रामेश जन्मोत्सव पर धर्मपाल क्षेत्र के 91 गाँवों में धर्मपाल परिवारों द्वारा नवकार महामंत्र जाप किया गया। मंदसौर में समता भवन हेतु भूमि का अवलोकन।
- मुमुक्षु भाई-बहनों एवं वीर परिवारों का देशभर में अनेक स्थानों पर आत्मीय बहुमान।
- केन्द्रीय पदाधिकारियों का मार्च एवं अप्रैल माह में तीन अंचलों का सघन प्रवास सम्पन्न। सभी प्रवास स्थलों पर संघ प्रवृत्तियों के साथ-साथ अभिमोक्षम् शिविर के लिए अभूतपूर्व प्रभावना। महिला समिति एवं युवा संघ पदाधिकारियों द्वारा भी प्रवास के माध्यम से अभिप्रेरणा।

केंद्रीय पदाधिकारियों का मार्च एवं अप्रैल माह में तीन अंचलों का सघन संघ प्रवास : अभिमोक्षम् शिविर हेतु विशेष प्रभावना

23-24 मार्च 2025। संघ उन्नति के नित नए पायदानों पर आरोहण कर रहा है। इस हेतु राष्ट्रीय पदाधिकारियों का अनेक क्षेत्रों में प्रभावशाली प्रवास जारी है। मार्च एवं अप्रैल माह में ऊर्जावान राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं महामंत्री सहित इन अंचलों के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, मंत्रीगणों व विभिन्न प्रवृत्तियों के संयोजकों आदि ने प्रवास के माध्यम से अभिमोक्षम् शिविर एवं संघ प्रवृत्तियों की प्रभावना की।

श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, मध्य प्रदेश अंचल राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, राष्ट्रीय मंत्री, धर्मपाल प्रवृत्ति संयोजक एवं कार्यसमिति सदस्यों व गणमान्य स्थानीय पदाधिकारियों की उपस्थिति में दो दिवसीय नागदा, गुराड़िया पित्रामल (नानेश नगर), बड़ावदा, जावरा, नगरी, सुवासरा, सीतामऊ, मंदसौर आदि क्षेत्रों का सघन प्रवास सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

प्रवास के प्रारंभ में प्रवासी दल ने नागदा संघ के पदाधिकारियों व सदस्यों की आयोजित बैठक में सकारात्मक चर्चा के पश्चात् गुराड़िया पित्रामल (नानेश नगर) पहुँचकर वहाँ धर्मपाल स्थापना दिवस पर आयोजित व्यसनमुक्ति रैली में सहभागिता निभाई। इसी के साथ यहाँ पर दानदाताओं द्वारा प्रदत्त भूमि पर समता भवन निर्माण कार्य का शुभारंभ करवाया। रैली पश्चात् आयोजित बैठक में संघ की विविध प्रवृत्तियों की जानकारी प्रदान करते हुए धर्मपाल क्षेत्र के चहुँमुखी विकास हेतु भीमपुरा (तराना) के मांगीलाल जी परमार को धर्मपाल क्षेत्र अध्यक्ष पद पर मनोनीत किया गया। धार्मिक पाठशालाओं में धार्मिक कोर्स के साथ-साथ सामाजिक व व्यावहारिक ज्ञानार्जन प्रारंभ करने का आश्वासन गणमान्यजनों द्वारा दिया गया।

गुराड़िया पित्रामल से प्रस्थान कर प्रवासी दल ने बड़ावदा में आयोजित बैठक में उपस्थिति दर्ज कराई। यहाँ स्थानीय संघ पदाधिकारियों का नवीन मनोनयन करते हुए अध्यक्ष अशोक जी हिंगड़ एवं मंत्री राजेन्द्र जी सांड को सर्वानुमति से मनोनीत किया। मीटिंग में इदं न मम के सात सदस्य बने एवं स्थानीय संघ ने केन्द्रीय संघ आबद्धता ग्रहण की। अध्यक्ष महोदय ने समता शाखा लगाने की विशेष प्रेरणा दी।

बड़ावदा से प्रवासी दल का जावरा पदार्पण हुआ। बैठक में विहार सेवा सदस्यता एवं समता भवन निर्माण में अपना सहयोग 1 प्रतिशत से बढ़ाकर 2 प्रतिशत करने की घोषणाएँ हुई। जावरा संघ पदाधिकारियों ने स्थानीय संघ की गतिविधियों की जानकारी प्रवासी दल को दी। यहाँ विभिन्न प्रवृत्तियों व आयामों के साथ '**अभिमोक्षम्**' शिविर हेतु विशेष आह्वान किया गया।

प्रवास के द्वितीय दिवस प्रवासी दल ने नगरी में समता भवन का निर्माण कार्य प्रारंभ करवाया। यहाँ बैठक में उपस्थित अनेक दानदाताओं ने समता भवन हेतु

लगभग 17 लाख रू. सहयोग राशि की घोषणा की। '**अभिमोक्षम्**' शिविर एवं समता शाखा से सभी को जोड़ने हेतु प्रभावना की गई। नगरी संघ ने सभी का आभार व्यक्त किया।

नगरी से प्रवासी दल सुवासरा पहुँचा, जहाँ प्रथम बार राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री को अपने बीच पाकर स्थानीय जन काफी उत्साहित नजर आए। मीटिंग में संघ व दोनों सहयोगी इकाइयों का सर्वसम्मति से गठन किया गया। सुवासरा संघ ने संघ आबद्धता ग्रहण की। यहाँ पर दानपेटी, अभिमोक्षम् सहित संघ की विविध प्रवृत्तियों की जानकारी दी गई।

आगामी पड़ाव स्थल सीतामऊ में स्थानीय संघ के साथ आयोजित बैठक में संघ विकास एवं प्रवृत्तियों पर सकारात्मक चर्चा की गई। तत्पश्चात् मंदसौर में रात्रिकालीन सभा में इदं न मम के सदस्य बनाए गए। सभा के पश्चात् स्थानीय संघ पदाधिकारियों ने वहाँ बनने वाले समता भवन की भूमि का निरीक्षण करवाया। इसी के साथ यह दो दिवसीय प्रवास अनेकानेक विशिष्टताओं के साथ सुसम्पन्न हुआ।

::: मुख्य उपलब्धियाँ :::

- दो समता भवनों का निर्माण कार्य प्रारम्भ
- एक समता भवन हेतु भूमि का अवलोकन
- एक नवीन संघ का गठन
- दो संघों में नवीन अध्यक्ष-मंत्री का मनोनयन
- तीन संघों ने संघ आबद्धता ग्रहण की।
- एक विहार सेवा संयोजन सदस्य की घोषणा
- नगरी समता भवन में 31 सदस्यों द्वारा 17 लाख से अधिक राशि की घोषणा
- समता भवन निर्माण में एक सदस्य ने अर्थ सहयोग दुगुना किया।
- '**अभिमोक्षम्**' शिविर हेतु विशेष प्रभावना
- दानपेटियाँ वितरित की गई।
- इदं न मम प्रवृत्ति से कई सदस्य जुड़े।

- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री

दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी अंचल प्रवास

दिनांक 9, 12-13 अप्रैल को संपन्न इस प्रवास में स्थानीय दिल्ली संघ के अध्यक्ष-मंत्री एवं सदस्यों का सराहनीय सहयोग रहा। 9 अप्रैल को दिल्ली के विज्ञान भवन में यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र जी मोदी की विशेष उपस्थिति में आयोजित विश्व नवकार महामंत्र दिवस कार्यक्रम में श्रीसंघ, महिला समिति, युवा संघ के राष्ट्रीय वर्तमान एवं पूर्व पदाधिकारियों, शिखर सदस्य, प्रवृत्ति संयोजकों एवं गणमान्य श्रावक-श्राविकाओं ने उपस्थिति दर्ज कराई।

दिनांक 12 अप्रैल को स्थानकवासी जैन परंपरा को मानने वाले श्रावक-श्राविकाओं के बाहुल्य वाले उत्तर प्रदेश के कुछ क्षेत्रों में संपर्क किया गया। इन क्षेत्रों के अमीन नगर सराय, बड़ौत, कांधला, मुजफ्फरनगर क्षेत्रों को संपर्कित क्षेत्र घोषित किया गया। प्रवासी दल ने इन क्षेत्रों में सभाएँ आयोजित कर जैन संस्कार पाठशालाओं से जुड़ने एवं अभिमोक्षम् शिविर में बच्चों को भेजने हेतु प्रभावना करते हुए विविध प्रवृत्तियों की जानकारी दी। मेरठ में प्रवास के दौरान इसे प्रतिनिधि क्षेत्र घोषित कर लालचंद जी बाघमार को प्रतिनिधि नियुक्त किया गया।

दिनांक 13 अप्रैल को दिल्ली संघ द्वारा आयोजित दीक्षार्थी अभिनंदन कार्यक्रम में अध्यक्ष जी ने संघ प्रवृत्तियों की जानकारी देते हुए अभिमोक्षम् शिविर हेतु प्रभावना की। प्रवासी दल का संघ सेवा में समर्पित उल्लास स्वस्फूर्त दृष्टिगोचर हो रहा था। सभी प्रवास स्थलों पर स्थानीय संघ का गुरुवर एवं संघ के प्रति समर्पण भाव देखकर अद्भुत आत्मानुभूति का अहसास हुआ।

- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री

बीकानेर-मारवाड़ अंचल प्रवास

राष्ट्रीय अध्यक्ष, राष्ट्रीय महामंत्री, अंचल के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं कार्यसमिति सदस्यों इत्यादि का दो दिवसीय प्रवास 10-11 अप्रैल को हुआ। सभी का सराहनीय सहयोग रहा। प्रवास के दौरान बीकानेर, गंगाशहर-भीनासर एवं उदयरामसर आदि क्षेत्रों में स्थानीय संघों के साथ चर्चाएँ आयोजित कर संघ प्रवृत्तियों एवं अभिमोक्षम् शिविर की भरपूर प्रभावना की गई। इस दौरान प्रवासी दल को पूज्य आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं अन्य चारित्रात्माओं के दर्शन, वंदन, प्रवचन श्रवण का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

अभिमोक्षम् शिविर की तैयारियों के संबंध में राष्ट्रीय पदाधिकारियों एवं शिविर संयोजक ने बीकानेर संघ बैठक में उपस्थित सदस्यों व पदाधिकारियों के साथ विभिन्न विषयों पर विस्तृत चर्चा कर शिविर के सफल आयोजन हेतु शिविर की बारीकियों से अगवत कराया।

- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री

भव्य जैन भागवती दीक्षा समारोह

आत्मीय निवेदन

बीकानेर संघ के प्रबल पुण्योदय से शास्त्रज्ञ, तरुण तपस्वी, प्रशांतमना, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. ने साधु मर्यादा के अंतर्गत रखे जाने वाले समस्त आगारों सहित **दिनांक 4 जून 2025** को **मुमुक्षु बहन सुश्री नेहा जी डोसी (डौंडीलोहारा)** एवं **मुमुक्षु बहन सुश्री साक्षी जी भंसाली (डौंडीलोहारा)** की जैन भागवती दीक्षा की स्वीकृति प्रदान की है। दिनांक 3 जून 2025 को वरघोड़ा एवं अभिनंदन समारोह आदि कार्यक्रम होने संभावित हैं। अत: समस्त संघों से हमारा आत्मीय निवेदन है कि आप ज्यादा से ज्यादा संख्या में पधारकर दीक्षा साक्षी बनने का लाभ प्राप्त करें।

आपके आगमन से आपको बीकानेर में विराजित परम पूज्य आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. एवं बहुश्रुत, वाचनाचार्य, उपाध्याय प्रवर श्रद्धेय श्री राजेश मुनि जी म.सा. के दर्शन, वंदन एवं प्रवचन श्रवण का सहज लाभ मिलना संभावित है। आपके आगमन से पूर्व आवागमन की सूचना आवास-निवास संयोजक को प्रदान कर अनुग्रहित करें।

जयचंदलाल डागा (संयोजक)	अमित डागा, मोहित डागा (सह-संयोजक)
आचार्य श्री रामेश प्रवास व्यवस्था समिति	

हेमंत कुमार सिंगी (संयोजक) मो. : 9829374649	पंकज कुमार गोलछा (सह-संयोजक) मो. : 9414141435
आवास-निवास व्यवस्था	

निवेदक

विजय कुमार गोलछा (अध्यक्ष)	सुरेंद्र कुमार पारख (मंत्री)

श्री साधुमार्गी जैन सेवा समिति, बीकानेर

साधुमार्गी महिला मंडल | **समता बहू मंडल** | **समता युवा संघ**

विनती पत्र नियमावली-
अप्रैल 2025

चातुर्मास, फाल्गुनी पर्व, दीक्षा प्रसंग, महावीर जयंती, अक्षय तृतीया, अभिमोक्षम्, अन्य शिविर एवं इसी तरह के अन्य कार्यक्रमों हेतु आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर व अन्य समस्त चारित्रात्माओं के लिए विनती पत्र नियमावली

सभी संघों से अनुरोध है कि उपरोक्त प्रसंगों हेतु हस्तलिखित विनती पत्रों में निम्न जानकारियाँ पूर्ण विवरण सहित उपलब्ध करावें –

1. क्षेत्र/संघ में स्थानकवासी व अन्य जैन परिवारों की संख्या।
2. गत तीन वर्षों में संपन्न चातुर्मासों का विवरण।
3. स्थानकों में परठने की सुविधा/अनुकूलता।
4. साधारणतया प्रतिदिन स्थानकों में रात्रिक, देवसिक प्रतिक्रमण करने वाले व सामायिक, स्वाध्याय, संवर, पौषध, समता शाखा आदि अन्य धार्मिक क्रियाएँ करने वाले श्रावक-श्राविकाओं की संख्या।
5. नित्य व साप्ताहिक चलने वाली समता संस्कार पाठशालाओं का विवरण (हाँ/नहीं, संख्या)।
6. आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर व अन्य चारित्रात्माओं हेतु विनती पत्रों में महापुरुषों के विराजने के संभावित स्थान, उनकी आपसी दूरियाँ, अलग-अलग क्षेत्रों में जैन परिवारों की संख्या, व्याख्यान स्थल, शिविर, दीक्षा आदि अन्य कार्यक्रमों हेतु संभावित स्थान आदि का संपूर्ण विवरण।
7. चातुर्मास हेतु प्रेषित विनती पत्र स्थानीय संघ की साधारण सभा में पारित प्रस्ताव सहित, केंद्रीय समिति द्वारा बनाई गई भोजन व अन्य समस्त आयोजन संबंधी विभिन्न नियमावलियों के पालन की कटिबद्धता व अध्यक्ष, मंत्री से हस्ताक्षरित होना अपेक्षित है।
8. समस्त साधुमार्गी जैन संघ अपने यहाँ अगला चातुर्मास करवाने हेतु हस्तलिखित विनती पत्र इसी चातुर्मास में प्रस्तुत कर देवें यानी नए चातुर्मास प्रारंभ से कम से कम आठ माह पूर्व ही विनती पत्र प्रस्तुत करने का लक्ष्य रखें।

उपरोक्त नियमों में समय अनुसार बदलाव संभावित रहेगा।

प्रभावना नियमावली - अप्रैल 2025

1. यथासंभव किसी भी प्रभावना वितरण से बचना चाहिए।
2. यदि प्रभावना वितरण किया जाता है तो भी अधिक मूल्यवान वस्तु की नहीं करें।
3. सचित्त वस्तु की प्रभावना नहीं करें।
4. प्रभावना की आवश्यकता हो तो यथासंभव धार्मिक उपकरण या साधुमार्गी पब्लिकेशन की पुस्तकों की प्रभावना करने के भाव रखें।
5. आचार्य भगवन्, उपाध्याय प्रवर एवं चारित्रात्माओं के नाम अंकित वस्तुओं की प्रभावना किसी भी अवसर पर नहीं करें।
6. प्रभावना स्थानक के अंदर नहीं करें, गेट पर या बाहर निकलते वक्त ही करें।

नियमावली में समयानुसार परिवर्तन संभव है।

विविध भेंट मार्फत

01 मार्च से 30 मार्च 2025 तक

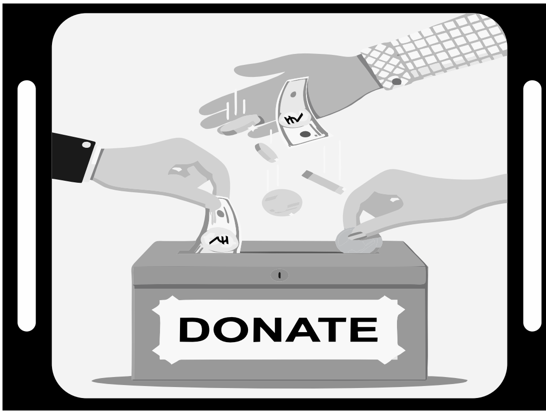

संघ सदस्यों द्वारा समय-समय पर संघ की विभिन्न गतिविधियों में आर्थिक सहयोग हेतु भेंट राशि प्रदान की जाती है, ताकि विभिन्न गतिविधियाँ, प्रवृत्तियाँ निर्विघ्न गतिमान रहें। इसी कड़ी में विभिन्न प्रवृत्तियों में उदार महानुभावों के सौजन्य से प्राप्त भेंट का उल्लेख आपके समक्ष है -

संघ शिखर सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

2,22,222/- कमला बाई चोरड़िया परिवार (सुरेश जी दिलीप जी चोरड़िया), बालाघाट (श्री मांगीलाल जी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में)

संघ महाप्रभावक सदस्यता (सौजन्य से प्राप्त)

4,40,000/- शुभकरण जी भूरा, भुवनेश्वर
2,70,000/- सुंदर बाई कोटड़िया, कोंडागाँव
2,20,000/- सुधा जी जैन (भंसाली), कोलकाता
2,20,000/- सुनीता जी शैलेश जी मेहता, बेलगाँव
2,20,000/- भीखमचंद जी ओस्तवाल, कलंगपुर
2,20,000/- सुशील जी कांतिलाल जी गोरेचा, रतलाम
2,20,000/- प्रकाशचंद्र जी चपलोत, निम्बाहेड़ा
2,20,000/- विजय कुमार जी मुणोत, हैदराबाद
2,20,000/- प्रेमचंद जी व्होरा, बदनावर
2,20,000/- निहालचंद जी कोठारी, ब्यावर
1,20,000/- इमरती देवी सुराणा, गीदम
1,20,000/- कंवरलाल जी देशलहरा, गुंडरदेही

महत्तम महोत्सव (सौजन्य से प्राप्त)

21,00,000/- अनिल जी मांगीलाल जी पारख, रायपुर
7,00,000/- सुनील जी नंदावत, बेंगलुरु
7,00,000/- अशोक जी पी. शाह शीला देवी शाह, अहमदाबाद
6,00,000/- विजय कुमार जी टंच, बदनावर
4,00,000/- केशर देवी कांकरिया, कोलकाता
1,51,000/- अशोक कुमार जी रौनक जी कांकरिया, चेन्नई
1,00,000/- सुशील कुमार जी नानेश कुमार जी लोढ़ा, मदुरांतकम्
21,000/- दिलीप कुमार जी दक, नवसारी

समता भवन प्रवृत्ति (सौजन्य से प्राप्त)

समता भवन, लूणकरणसर

3,51,000/- तुलसीराम जी राखेचा परिवार, लूणकरणसर (श्रीमती मुक्ता जी राखेचा की पुण्यस्मृति में)
3,00,000/- केसरीचंद जी दानमल जी भूरा, रायपुर

समता भवन, संगरिया

2,00,000/- निर्मला जी जैन (श्री प्रमोद जी जैन (चौधरी) पुत्र श्री नेमीचंद जी-श्रीमती सरला जी जैन की पुण्यस्मृति में)
1,25,000/- प्रवीण जी कटारिया, मैसूर
50,000/- निर्मल कुमार जी छल्लाणी एवं परिवार, गंगाशहर (श्रीमती मोहिनी देवी छल्लाणी की पुण्यस्मृति में)
11,000/- ओमप्रकाश जी बरड़िया, लूणकरणसर/भीनासर (श्रीमती सुंदर देवी धर्मपत्नी नेमीचंद जी बरड़िया की पुण्यस्मृति में)

समता भवन, भदेसर

1,25,000/- प्रवीण जी कटारिया, मैसूर

समता भवन, सिंधखेड़ा

1,25,000/- प्रवीण जी कटारिया, मैसूर

समता भवन, जयपुर

1,11,000/- दीपक कुमार जी जैन, जयपुर

1,11,000/- राजेंद्र प्रसाद जी जैन, कुंडेरा

समता भवन, चिकलाकसा

55,000/- प्रवीण जी कटारिया, मैसूर

समता भवन, खोर

30,000/- निर्मल कुमार जी छल्लाणी एवं परिवार, गंगाशहर (श्रीमती मोहिनी देवी छल्लाणी की पुण्यस्मृति में)

समता भवन, रावतसर

11,000/- ओमप्रकाश जी बरड़िया, लूणकरणसर/भीनासर (श्रीमती सुंदर देवी धर्मपत्नी नेमीचंद जी बरड़िया की पुण्यस्मृति में)

उच्च शिक्षा योजना (सौंजन्य से प्राप्त)

11,00,000/- बलवंतराव जी जैन, टोंक

साधुमार्गी पब्लिकेशन सहयोग (सौंजन्य से प्राप्त)

1,25,000/- प्रवीण जी कटारिया, मैसूर

जयश्री गोलछा संयम सेवा निधि (सौंजन्य से प्राप्त)

1,00,000/- मिलापचंद जी ज्ञानचंद जी जैन, रायपुर

विहार सेवा संयोजन सदस्यता (सौंजन्य से प्राप्त)

1,00,000/- अमृतलाल जी पगारिया, जावरा

1,00,000/- नेमीचंद जी राजकुमार जी सांखला, खरियार रोड

50,000/- शांतिलाल जी विनोद कुमार जी काँठेड़, नीमच

दानपेटी योजना

2,48,500/- विमला जी कमल जी सिपानी, बेंगलुरु

51,000/- प्रकाशचंद जी सरला देवी बेताला, बेंगलुरु

35,525/- रतनचंद जी देवराज जी सांखला, नवापारा (राजिम)

30,779/- सुमेरमल जी इंदरचंद जी रायसोनी, दुर्गावता (जोधपुर)

24,100/- सुशीला देवी राखेचा, इंदौर

21,000/- संजय जी शांतिलाल जी सांखला, मुंबई

19,500/- प्रदीप जी आभा जी डूंगरवाल, इंदौर

15,000/- उगमराज जी देवेंद्र जी कोठारी, नवापारा (राजिम)

11,000/- अभय कुमार जी ललवाणी, इंदौर

11,000/- हुक्मीचंद जी पारख परिवार, रिंकू जी विमल जी राजा जी पारख, नवापारा (राजिम)

11,000/- कुलदीप जी ओस्तवाल, मुंबई

11,000/- विनोद जी चोरड़िया, मुंबई

11,000/- सूरज देवी पटवा, हावड़ा

11,000/- विजय कुमार जी लोढ़ा, मदुरांतकम्

10,470/- धर्मचंद जी नंदावत, मैसूर

9,133/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, उदयपुर

9,100/- अशोक जी विशाल जी मेहता, बारडोली

9,000/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, सिलापथार

8,000/- धीरज जी साहिल जी सिपानी, बेंगलुरु

7,500/- श्री स्थानकवासी जैन संघ, कटंगी

7,316/- अमित जी चौधरी, अजमेर

7,100/- धर्मचंद जी बैद, मुंबई

6,900/- केतन जी कोठारी, चिखली

6,832/- इंद्रचंद जी सांखला, रायपुर

6,768/- सुभाष जी ओस्तवाल, रायपुर

6,530/- मदनलाल जी प्रमोद जी सांखला, जोधपुर

6,500/- श्री साधुमार्गी जैन संघ, अलीगढ़

6,150/- भागचंद जी सिंघी, जोधपुर

6,000/- मनोहरलाल जी जैन, पिपलिया मंडी

6,000/- नरेंद्र जी जवरीलाल जी रूनवाल, दोंडाइचा

5,500/- समता महिला मंडल, अलीपुरद्वार

5,415/- दिनेश कुमार जी आंचलिया, इंदौर

5,151/- शिव कुमार जी गोलछा, लालबर्रा

5,100/– अबीरचंद जी गोलछा, गौरीपुर
5,100/– सुंदरलाल जी पंकज जी धारीवाल, रायपुर
5,100/– हीरा देवी रणजीत जी सुजीत जी पींचा, रायपुर
5,100/– सुभाष जी रातड़िया, इंदौर
5,100/– घेवरचंद जी केशरीचंद जी गोलछा, दिल्ली
5,100/– कमलचंद जी डागा, दिल्ली
5,100/– प्रकाशचंद जी राजेंद्र जी गिड़िया, नवापारा (राजिम)
5,100/– जवाहर जी बाफना परिवार, श्रीपाल जी बाफना, नवापारा (राजिम)
5,100/– तरुणा जी मेड़तवाल, मुंबई
5,100/– सरला देवी भूरा, मुंबई
5,100/– गुप्तदान, मुंबई
5,100/– चंद्रकला जी खिंवसरा, मुंबई
5,100/– श्री साधुमार्गी जैन संघ, किशनगंज
5,100/– ललित जी चोरड़िया, मुंबई
5,100/– राज जी चोरड़िया, मुंबई
5,100/– अशोक जी सुराना, मुंबई
5,100/– अशोक जी कोचर, मुंबई
5,100/– शकेंद्र जी छाजेड़, मुंबई
5,100/– निर्मल कुमार जी भूरा, करीमगंज
5,100/– सूरजमल जी पारख, करीमगंज
5,100/– पटवा ब्रदर्स, करीमगंज
5,100/– जैन ब्रदर्स, करीमगंज
5,100/– नथमल जी तातेड़, करीमगंज
5,100/– निर्मला देवी सांड, करीमगंज
5,100/– मीना जी पटवा, हावड़ा
5,100/– सुखराज जी भंवरलाल जी मालू, जोधपुर
5,100/– प्रवीण कुमार जी कटारिया, मैसूर
5,100/– श्यामलाल जी गन्ना, मैसूर
5,000/– गौतम जी बोथरा, हावड़ा
5,000/– स्नेहलता जी बोहरा, मुंबई
5,000/– ज्ञानचंद जी संचेती, मुंबई
5,000/– राकेश जी नक्षत्र, मुंबई
5,000/– नितेश जी जैन, मुंबई
5,000/– महेंद्र जी मुणोत, मुंबई
5,000/– पुखराज जी राकेश जी सांखला, बालेसर
5,000/– नेमीचंद जी संतोष जी पारख, जोधपुर
5,000/– दिलीप जी श्रीश्रीमाल, हैदराबाद
5,000/– रमेश जी पितलिया, हैदराबाद
4,700/– प्रदीप जी सोनावत, दिल्ली
4,600/– पारस जी बंबकी, इंदौर
4,550/– रतनलाल जी अनिल जी सांखला, जोधपुर
4,500/– मीनाक्षी जी दोशी, इंदौर
4,500/– प्रदीप जी प्रिया जी भंडारी, इंदौर
4,500/– संतोषचंद जी संजय जी पारख, नवापारा
4,500/– दिनेश कुमार जी दस्साणी, मुंबई
4,500/– गौतमचंद जी मोतीलाल जी गांधी, अंकलेश्वर
4,500/– रतनलाल जी सांखला, अजमेर
4,200/– सुदर्शन जी आछा, रायपुर
4,200/– राजेंद्र जी रामचंद्र जी जैन, नगरी
4,200/– विमल जी तातेड़, हैदराबाद
4,100/– जितेंद्र जी प्रथम जी बाफना, रायपुर
4,100/– अमित जी जैन, मुंबई
4,100/– धर्मचंद जी भूरा, करीमगंज
4,000/– विजय कुमार जी मुणोत, हैदराबाद
4,000/– सुरेंद्र जी ढाबरिया, अजमेर
3,900/– ज्ञानचंद जी बंबोरी, इंदौर
3,840/– दीपक जी मरोठी, सैंथिया
3,700/– उज्ज्वला बाई रामपुरिया, हावड़ा
3,650/– अजीत जी राजप्रकाश जी कड़ावत, रामपुरा
3,600/– छोटेलाल जी चोरड़िया, राँची
3,595/– समता भवन, जोधपुर
3,560/– जितेंद्र जी पीरचंद जी जैन, जलगाँव
3,500/– शशिकला जी पटवा, हावड़ा
3,500/– चंद्रकला जी कोठारी, हैदराबाद
3,370/– जयंतीलाल जी मोतीलाल जी गांधी, अंकलेश्वर

3,300/– ममता जी गौतम जी गोलछा, रायपुर
3,300/– राजेश जी धारीवाल, हावड़ा
3,125/– गणेश जी बोथरा, चिखली
3,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– इंदौर से– प्रकाशचंद जी पिंकेश जी पगारिया, महेंद्र जी पिरोदिया, सुनील जी शर्मिला जी कोठारी, अंजू जी बोहरा, अनिल जी साधना जी संघवी, चंपालाल जी विमलचंद जी डागा, गंगाशहर, बाबूलाल जी कुलदीप जी जैन, बजरिया, सुशील जी संदीप जी मुकीम, रायपुर, कमला देवी संचेती, दिल्ली, दिनेश जी सिपानी, दिल्ली, मदनलाल जी पन्नालाल जी भंडारी, दोंडाइचा, पदमचंद जी डोसी, फारबिसगंज, श्री मोतीलाल जी अशोक जी पारख, नवापारा, अशोक जी रायसोनी (पारख मेडिकल), नवापारा, श्री उत्तमचंद जी नीरज जी हितेश जी रायसोनी, जामगाँव, टीकमचंद जी पारख, मुंबई, श्री साधुमार्गी जैन संघ, इस्लामपुर, करणी स्टोर्स, करीमगंज, जयचंदलाल जी भूरा, करीमगंज, अशोक टेक्सटाइल्स, करीमगंज, इंद्रा देवी भूरा, विराटनगर, सुशील जी जवाहरलाल जी जैन, नगरी
3,000/– संपतलाल जी रांका, पुरी
3,000/– झंवरलाल जी बोथरा, हावड़ा
3,000/– केशरीचंद जी लुणिया, हावड़ा
2,900/– दिनेश जी वया, चिखली
2,850/– उमेश कुमार जी सोनी, रायपुर
2,850/– सुखलाल जी कोठारी, चिखली
2,727/– झमकलाल जी बरखेड़ावाला, खाचरौद
2,600/– बिजय कुमार जी बोथरा, बेलडांगा
2,514/– अनिल जी चोरड़िया, अजमेर
2,511/– राकेश जी चोपड़ा, रायपुर
2,500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– वीरेंद्र कुमार जी कपिलेश जी कर्णावट, इंदौर, राजमल जी सूरजमल जी विनायकिया, दोंडाइचा, विकास जी हेमराज जी बुच्चा, मुंबई, सुरेंद्र कुमार जी बक्सी, करीमगंज, संपतलाल जी भंडारी, हावड़ा, बसंतीलाल जी अमन जी चंडालिया, कांकरोली, सुशील जी लोढ़ा, अजमेर
2,450/– संजय जी सुयोग जी बैद, रायपुर
2,419/– प्रिया जी कर्णावट, अजमेर
2,385/– मोहनलाल जी धर्मेश जी सांखला, जोधपुर
2,342/– जंबू जी आंचलिया, इंदौर
2,225/– गौतम जी मीना जी ललवाणी, इंदौर
2,190/– दीपचंद जी राजेंद्र जी सुराणा, गंगाशहर
2,141/– पारसमल जी सांखला, जोधपुर
2,123/– शकुंतला जी कमलेश जी धारीवाल, जोधपुर
2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सुरेंद्र जी पारख, काठमांडू, पारसमल जी छल्लानी सोनाली, कटिहार, अनिल जी भटेवरा, खाचरौद, मोतीलाल जी कोठारी, खाचरौद, सरोज देवी लूणावत, दलखौला, जे.एम. सुराणा, धुबड़ी, छबील भाई सोमानी, खड़गपुर, अशोक जी दुगड़, फारबिसगंज, विमल जी पगारिया, फिंगेश्वर, मनोहरलाल जी नाहटा, मुंबई, सुंदरलाल जी बोथरा, मुंबई, यश कुमार जी, मुंबई, श्री साधुमार्गी जैन संघ, पांजीपारा, प्रकाशचंद जी शांतिलाल जी सुराणा, रामपुरा, संपतराज जी कड़ावत, रामपुरा, वीरेंद्र जी शोभालाल जी लोढ़ा, अठाना, रानीदान जी दिलीप जी चोपड़ा, बालेसर, पारसमल जी दिलीप जी सांखला, बालेसर, दिलीप जी चोरड़िया, हावड़ा, लेफ्टिनेंट कमल जी मरोठी, हावड़ा, ललिता जी सेठिया, हावड़ा, पताशी बाई सांखला, जोधपुर, अन्नराज जी सिंघवी, हैदराबाद, अजीत जी संचेती, दलखौला, पंकज जी पारख, सैंथिया, अभय जी चतुरमूथा, सैंथिया, **धुबड़ी से–** सुमन देवी अरुण जी सेठिया, कमलचंद जी बोथरा, **रायपुर से–** वर्धमान जी सुराणा, प्रेमराज जी हर्ष जी कोटड़िया, अनिल जी आगम जी मूथा, **इंदौर से–** तोलाराम जी बोथरा, दिनेश जी मनोज जी बैद, नीलमचंद जी सुराणा, ऋषभ जी मुक्ता जी चौधरी, अशोक जी भलावत, नेमीचंद जी सांड, प्रदीप जी बंबोरिया, विनोद जी शोभा जी छतर,

सुभाष जी सुशील जी चंडालिया, **दिल्ली से-** पुखराज जी सेठिया, नारायणचंद जी पींचा, अरुण जी सांड, बाबूलाल जी लूणावत, मनोज जी पींचा, उत्तमचंद जी भूरा, अरविंद जी बैद, रिखबचंद जी कोचर, **नवापारा से-** मुकेश जी दिनेश जी रायसोनी, मांगीलाल जी ऋषभ जी चोरड़िया, पुखराज जी निर्मल जी पारख, शिखर जी बच्चू जी बाबू जी बाफना, विजय जी अनुकूल जी भंडारी, **करीमगंज से-** ललित जी भूरा, संतोषी टेक्सटाइल, अभय जी बच्छावत, श्री टेक्सटाइल्स, शुभकरण जी भूरा, **विराटनगर से-** जोगीलाल जी पींचा, पारस जी संचेती, अशोक जी भूरा, किरणचंद जी डागा, **मैसूर से-** कैलाशचंद जी कोठारी, नरेश जी बोहरा, रिखबचंद जी भंसाली, पंकज जी खमेसरा, सुभाषचंद जी पोरवाड़, नवल जी कोठारी, अमरचंद जी डागा, **मंड्या से-** अमरचंद जी डागा, केसरीमल जी कावड़िया, गौतमचंद जी पोरवाड़, नथमल जी रांका

2,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– महेंद्र जी सुरेंद्र जी जैन, बजरिया, अमिता जी जैनावत, इंदौर, धर्मचंद जी चोरड़िया, नवापारा, अभिनंदन जी रांका, मुंबई, हस्तीमल जी चंडालिया, मंदसौर, प्रकाशमल जी महेंद्र जी सांखला, बालेसर, मोतीलाल जी महावीरचंद जी सांखला, बालेसर, ऋषभ जी पारख, जोधपुर, गुलाबचंद जी चोपड़ा, जोधपुर, दिलीप कुमार जी गन्ना, मैसूर, **हावड़ा से-** संजय जी बोथरा, राजेश जी सेठिया, महेंद्र जी डागा, बिमला देवी अरुणा जी पटवा, राजीव जी पटवा, किशोर जी गुलगुलिया, प्रकाश जी गुलगुलिया, सुशील जी गुलगुलिया, संतोकचंद जी अशोक जी सिपानी, इंद्रचंद जी, केशरीचंद जी बोथरा, कंवरलाल जी जय जी कांकरिया, शुभकरण जी श्याम जी बैद, उत्तमचंद जी गेलड़ा

1,946/– सुधा जी बैद, रायपुर

1,900/– ललिता जी कोठारी, हावड़ा

1,900/– तारा जी सेठिया, इंदौर

1,850/– तेजमल जी पोखरना, मंड्या

1,800/– अनिल जी नांदेचा, खाचरौद

1,800/– रवींद्र जी बरखेड़ा वाला, खाचरौद

1,800/– सुरेंद्र कुमार जी सांड, हावड़ा

1,800/– दिनेश जी गोल्डी जी सुराणा, रायपुर

1,790/– वीरचंद जी संचेती, जलगाँव

1,710/– नवरत्नमल जी बनवट, इंदौर

1,627/– पुनित जी कोठारी, जोधपुर

1,600/– खेमचंद जी सुनील जी गोलछा, रायपुर

1,600/– राजकुमार जी सुराणा, हैदराबाद

1,600/– सोहनलाल जी मेघराज जी गोलछा, बाड़मेर

1,600/– विनोद जी खजांची, हावड़ा

1,580/– दीपक जी रांका, अहमदाबाद

1,527/– विकास जी बैद, रायपुर

1,520/– शशिकला जी, मुंबई

1,503/– जुगराज जी डागा, मुंबई

1,500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– अशोक कुमार जी गांधी, इंदौर, बृजेंद्र जी नितिन जी जैन, इंदौर, मनोज जी भंडारी, इंदौर, विजय सिंह जी मेहता, बड़ीसादड़ी, पारसमल जी पुगलिया, फारबिसगंज, अभिनव जी संपत जी खुरदिया, मुंबई, नवलकिशोर जी, मुंबई, अशोक जी खिंदावत, मंदसौर, रतनलाल जी अनिल कुमार जी सांखला, बालेसर, मोहनलाल जी धर्मेश जी सांखला, जोधपुर, सुरेश कुमार जी यश कुमार जी सांखला, जोधपुर, सुनील कुमार जी हीरालाल जी कोठारी, नगरी, विकास जी पितलिया, हैदराबाद, राजेश जी छाजेड़, अजमेर, सुनील जी लोढ़ा, अजमेर, राजेंद्र कुमार जी संचेती, पानसेमल, रवींद्र जी पारख, सैंथिया, अशोक जी पारख, सैंथिया, **हावड़ा से-** अनिल कुमार जी गुलगुलिया, सुंदरलाल जी मणोत, विमलचंद जी सिपानी, हर्ष जी सिपानी, सुरेंद्र जी सिपानी, सुभाषचंद जी गौरव जी वीर जी चोरड़िया, पुखराज जी बैद, प्रमोद

जी भंसाली, करण जी डागा, संजय जी फलोदिया, सज्जनराज जी कांकरिया, **रायपुर से-** रमेश कुमार जी खटोड़, गुलाबचंद जी नाहटा, उत्तमचंद जी नीलेश जी सांखला, **विराटनगर से-** खेमचंद जी गोलछा, उम्मेद जी लूणिया, बाबूलाल जी भूरा, देवेंद्र जी सेठिया

1,460/- कमला जी देरासरिया, नवसारी

1,410/- हुकमीचंद जी पारख, जोधपुर

1,400/- गौतम जी गोलछा, हावड़ा

1,400/- सुनील कुमार जी भंसाली, अजमेर

1,350/- सुशील कुमार जी लक्ष्मीचंद जी जैन, नगरी

1,321/- सुनील जी सुजंती, अजमेर

1,312/- गौतमचंद जी मनीष जी छाजेड़, जोधपुर

1,310/- नरेंद्र जी भंडारी, जोधपुर

1,300/- कांतिलाल जी छाजेड़, जोधपुर

1,200/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- प्रदीप कुमार जी डागा, हावड़ा, राजेंद्र प्रसाद जी भूरा, हावड़ा, इंदरचंद जी पंकज जी सेठिया, हावड़ा, राजकुमार जी जैन, इंदौर, शशिकांता जी गुगलिया, इंदौर, विजयराज जी गुलेच्छा, शेरगढ़, टीकमचंद जी जितेंद्र जी आबाद, चांगोटोला, योगेश कुमार जी संजय कुमार जी आबाद, चांगोटोला, **वारासिवनी से-** संजय जी संभव जी कोचर, शांतिलाल जी कोचर, नवरतन जी बाँठिया, सुशील जी बाँठिया, मनोज जी बाँठिया, ललित जी बाँठिया

1,184/- मिश्रीलाल जी सुनील जी भड़कत्या, कांकरोली

1,160/- सुधीर जी सांखला, अजमेर

1,152/- नथमल जी विमल जी लूणिया, गंगाशहर

1,151/- राजेश कुमार जी चोरड़िया, लालबर्रा

1,144/- सुमित कुमार जी छाजेड़, जोधपुर

1,140/- कन्हैयालाल जी पृथ्वीराज जी संचेती, पानसेमल

1,111/- बाबूलाल जी बोथरा, लालबर्रा

1,103/- जसराज जी गुलाबचंद जी चोपड़ा, जोधपुर

1,100/- का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त- कमलचंद जी सुराणा, गंगाशहर, बींजराज जी अशोक कुमार जी डागा, गंगाशहर, बालकिशन जी मेहता, गंगाशहर, मुकेश जी मेहता, धुबड़ी, उछबचंद जी लोकेश कुमार जी जैन, बजरिया, राजेश कुमार जी विकास कुमार जी जैन, बजरिया, कन्हैयालाल जी सामसुखा, धुबड़ी, सुरेश कुमार जी नांदेचा, खाचरौद, हनुमानमल जी गोलछा, जलपाईगुड़ी, कुशाल सिंह जी डांगी, बड़ीसादड़ी, राजेश कुमार जी लूणावत, काठमांडू, सुंदरलाल जी लूणिया, गुड़गांव, विमलचंद जी रायसोनी, खिसोरा, चंदनमल जी बाफना, खिसोरा, संघीलाल जी राज जी गोलछा, अभनपुर, मोक्ष कलेक्शन, अभनपुर, नेमीचंद जी गोलछा, फिंगेश्वर, कल्याण सिंह जी नागौरी, उदयपुर, मृदुल जी वीरेंद्र जी गांग, रामपुरा, प्रकाशचंद जी मदनलाल जी लोढ़ा, अठाना, शिवलाल जी देवीलाल जी विखला, अठाना, दीपा जी रांका, मंदसौर, संजय जी मोगरा, मंदसौर, मनोहरलाल जी नलवाया, मंदसौर, इंद्रा देवी पारख, करीमगंज, दिनेश जी ललवानी, करीमगंज, राजू जी भूरा, करीमगंज, रामलाल जी बाफना, जेठानिया, अजय कुमार जी पारसमल जी मुणोत, अंकलेश्वर, नितेश जी प्रकाश जी गांधी, अंकलेश्वर, प्रदीप जी अमित जी भंडारी, कांकरोली, प्रवीण जी सीमा जी रांका, कांकरोली, उत्तमचंद जी मिन्नी, रास, सुशीला देवी पारिख, जोधपुर, मदनलाल जी दिनेश कुमार जी सांखला, जोधपुर, तनसुखलाल जी गुलेच्छा, जोधपुर, किशोर कुमार जी नेमीचंद जी जैन, नगरी, मूलचंद जी गौतमचंद जी बुरड़, वाण्याविहिर, राजमल जी पोरवाड़, मंड्या, चंद्रेश जी सुराणा, मंड्या, पूनमचंद जी कोठारी, मंड्या, सुरेश जी चोरड़िया, बिलासीपाड़ा, कमलेश जी वया, चिकली, रूपेश जी धारीवाल, राउरकेला, राजकुमार जी रांका, सैंथिया, राजा जी छाजेड़, सैंथिया, बापी जी मूथा, सैंथिया, **पुरुलिया से-** आशा जी खिमेसरा, अनिता जी डागा, जयश्री देवी भूरा, कविता जी भूरा, **रायपुर से-** पूरणलाल जी पीयूष कुमार जी बाफना, विजयचंद जी विनीत जी विवेक जी बोथरा, कन्हैयालाल जी नितिन

कुमार जी बाफना, संतोष कुमार जी बाघमार, डॉ. सी.एम. सांखला, महेंद्र कुमार जी प्रदीप कुमार जी मुकीम, दिनेश जी ललवाणी, शांतिलाल जी राकेश जी पारख, जतनलाल जी अभिषेक जी झांबड़, **इंदौर से-** गुप्तदान, विनोद जी प्रियंका जी गेलड़ा, पारसमल जी पिंकी जी पींचा, राकेश जी नीलू जी जैन, किरणमल जी संजय जी कांकरिया, भूपेश जी भावेश जी दलाल, आशीष जी पारख, रितेश जी शेषमल जी बनवट, जितेश जी दीपिका जी जैन, महेंद्र जी मनीष जी बोहरा, पारस देवी भलावत, **दिल्ली से-** जतनलाल जी सेठिया, अशोक कुमार जी बोथरा, करणीदान जी हीरावत, हड़मानमल जी डागा, अमरचंद जी सेठिया, पवन कुमार जी बोथरा, धनराज जी डागा, रूपचंद जी सांड, संजय जी भूरा, जतनलाल जी भूरा, किरणचंद जी बोथरा, **दोंडाइचा से-** देवेंद्र कुमार जी शांतिलाल जी भंडारी, महेंद्र कुमार जी रवींद्र कुमार जी कोटड़िया, विकास कुमार जी कांतिलाल जी छाजेड़, रमेशचंद जी उत्तमचंद जी चतुरमूथा, **फारबिसगंज से-** अभयराज जी सेठिया, प्रकाशचंद जी लूणिया, ओमप्रकाश जी डोसी, हेमंत कुमार जी बोथरा, कुसुम देवी लूणिया, सुनीता जी जैन, ज्यूपिटर स्टोर, मनोज जी सोनावत, दिनेश जी बोथरा, संदीप कुमार जी झाबक, निर्मल कुमार जी सेठिया, मुन्नीलाल जी झाबक, राहुल जी ईशान जी जैन, **नवापारा से-** कंचन देवी जी प्रिंस जी चोरड़िया, प्रदीप जी भंसाली, पंकज जी गोल्डी जी बोथरा, दीपक जी कामदार, पुखराज जी गोलछा, गुप्तदान, **मुंबई से-** अमित जी सांखला, सुरेंद्र जी दस्साणी, कमलेश जी नागौरी, विजय सिंह जी बैद, पीयूष कुमार जी, अखिलेश जी मारू, अशोक जी सेठिया, विनोद जी बोथरा, अरुण जी लोढ़ा, राहुल कुमार जी लोढ़ा, संजय जी कोठारी, संजय जी भड़कत्या, प्रांजल जी रांका, प्रवीण जी भलावत, दिनेश जी चोरड़िया, रमेश जी मूथा, **हावड़ा से-** राहुल जी सांड, ललित जी रामपुरिया, मनोज जी जैन (लूणिया), महावीर जी बैद, विनोद कुमार जी डागा, तारा देवी हीरावत, संजय कुमार जी सेठिया, पुखराज जी ललवानी, प्रमिला जी बोथरा, राजा जी पटवा, लेफ्टिनेंट निर्मल जी हीरावत, जितेंद्र जी पुगलिया, रंजू देवी भूरा, अशोक कुमार जी पारख, संजय जी अजय जी सेठिया, **बालेसर से-** सुरेश कुमार जी सिद्ध कुमार जी सांखला, राजेंद्र कुमार जी नरेश कुमार जी सांखला, गौतमचंद जी कमलेश कुमार जी सांखला, उमेश कुमार जी अरविंद कुमार जी सांखला, अशोक कुमार जी हितेश कुमार जी सांखला, गौतमचंद जी ताराचंद जी सांखला, **विराटनगर से-** हनुमान जी गोलछा, राजेश जी गांधी, राकेश जी जैन (मुणोत), केशरीचंद जी गोलछा, संपतलाल जी गोलछा, नरेश कुमार जी मुणोत (जैन), अजय जी बोथरा, धनराज जी चोरड़िया, **लूणकरणसर से-** ओमप्रकाश जी बरड़िया, आसकरण जी बरड़िया, गोरधन जी बरड़िया, रिखबचंद जी लूणावत, **जनकपुर (नेपाल) से-** भैरूदान जी गोलछा, अशोक जी बच्छावत, विजयराम जी बच्छावत, मदनलाल जी दुगड़, रोहित जी बच्छावत, राजकुमार जी बच्छावत, **हैदराबाद से-** माणिकचंद जी विजय जी कटारिया, विमल जी कोटेचा, अभय जी गांधी, जुगराज जी हितेश जी डागा, जुगराज जी मनोहर जी डागा, अशोक कुमार जी बैद, उज्ज्वला जी जैन, सतीश जी पदावत, कांतिलाल जी सिंघवी, विशनराज जी पितलिया, महावीर जी पितलिया, विमल जी कोटेचा, **नवसारी से-** जया बेन बोरदिया, कांता जी मुणोत, कुसुम जी छाजेड़, कांता जी देरासरिया, अंजन कुमारी जी रांका, **अजमेर से-** प्रेमचंद जी चोपड़ा, हेमराज जी कोठारी, मेघराज जी खिंवेसरा, अतुल जी कोठारी, सुमित जी सांखला, नवरत बाई सिंघी, सुलेखा जी सांखला, **मैसूर से-** हरिप्रकाश जी मोगरा, प्रमोद कुमार जी श्रीश्रीमाल, प्रकाशचंद जी गन्ना, गौतमचंद जी देरासरिया, राजेंद्र कुमार जी भंसाली

1,057/- मनोहरलाल जी नाहर, लालबर्रा

1,050/- रेखा जी बुरड़, अजमेर

1,030/– लालचंद जी संजय जी रांका, कांकरोली

1,010/– लालचंद जी भंसाली, शेरगढ़

1,001/– गुलाबचंद जी छाजेड़, जोधपुर

1,000/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– जवाहरलाल जी कोठारी, खाचरौद, टोनी जी बुड़ावन वाला, खाचरौद, नीलेश जी बाफना, छुरिया, बबीता जी भलावत, इंदौर, प्रफुल्ल जी नीरज जी बोहरा, इंदौर, पदमप्रकाश जी चंडालिया, इंदौर, पुष्पा देवी बैद, फारबिसगंज, वरुण जी मनोहरलाल जी, यू.एस.ए., अनूप जी पोरवाल, मंदसौर, गुप्तदान, जोधपुर, महावीर जी सुखराज जी छाजेड़, जोधपुर, देवचंद जी सोनावत, हैदराबाद, सज्जनराज जी पितलिया, हैदराबाद, कविता जी सांखला, अजमेर, ताराचंद जी रजत कुमार जी चोपड़ा, बाड़मेर, निर्मल जी कोठारी, बोलपुर, **हावड़ा से-** जयनारायण जी सांड, कांता देवी विनीत जी आंचलिया, विजयराज जी मणोत, शिकारचंद जी मनीष जी भूरा, रीना जी बाँठिया, मंजू जी रिषभ जी दुग्गड़, शकुंतला देवी दुधोरिया, महेंद्र जी खटोल, सूरजमल जी खटोड़, रेखा जी भंसाली, रीना देवी सुखानी, महाबीर जी धारीवाल, **बड़ावदा से-** राजेंद्र जी इंद्रमल जी सांड, ज्ञानचंद जी रतनलाल जी दुग्गड़, शांतिलाल जी हस्तीमल जी हिंगड़, मिश्रीमल जी हस्तीमल जी हिंगड़, हंसा देवी धर्मचंद जी हिंगड़, **मुंबई से-** विशाल जी गलुंडिया, सुरेश जी बोरदिया, रोहित जी नंदावत, मुकेश जी बापना, सुनीता जी सुखानी, **हावड़ा से-** विजयश्री जी चोरड़िया, श्रेणिक जी रेखा जी बोथरा, विकास जी अरुण जी झाबक, शिव कुमार जी भूरा, राजेंद्र जी भूरा, विजय जी बरड़िया, शांति कुमार जी धारीवाल, विकास जी छाजेड़, सुमन जी छाजेड़, सुमन देवी डागा, प्रदीप जी भूरा, रमेश जी बैद

914/– मुकेश जी सुनील जी धाकड़, कांकरोली

910/– केवलचंद जी चोपड़ा, शेरगढ़

840/– रामू जी गोलछा, सैंथिया

826/– इंद्रमल जी उत्तमचंद जी खैरोदिया, कांकरोली

800/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– शकुंतला देवी बैद, हावड़ा, इंद्र कुमार जी बरड़िया, हावड़ा, प्रवीण कुमार जी बैद, हावड़ा, विजय कुमार जी लक्ष्मीचंद जी जैन, नगरी, सुनील कुमार जी सुंदरलाल जी जैन, नगरी

798/– अनिल कुमार जी पारख, जोधपुर

780/– कांतिलाल जी पृथ्वीराज जी संचेती, जलगाँव

755/– पवन जी दलाल, खाचरौद

752/– सुभाषचंद जी नाहर, जोधपुर

751/– नेम कुमार जी कोठारी, मुंबई

751/– प्रवीण जी सांखला, मुंबई

735/– गुलाबचंद जी जैन, पानसेमल

730/– शिवराज जी पृथ्वीराज जी संचेती, जलगाँव

720/– विमलेश जी दलाल, खाचरौद

710/– श्यामलाल जी ललवानी, जलगाँव

701/– अनिल जी दलाल, खाचरौद

701/– दिलीप जी गौतम जी पिछोलिया, कांकरोली

700/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सरदारमल जी जयश्री जी कांकरिया, इंदौर, विजय जी छल्लाणी, मुंबई, शंकरलाल जी लोढ़ा, उदयपुर, शिवसिंह जी चौधरी, मंदसौर, रखबचंद जी जैन, मंदसौर, रवींद्र कुमार जी सांखला, बालेसर, सुरेश जी सुराणा, बिजय कुमार जी बोथरा, बेलडांगा, गौतमचंद जी ढालेरिया, शेरगढ़, सुरेश जी सांखला, जोधपुर, **हावड़ा से-** चंदनमल जी डागा, रवींद्र कुमार जी डागा, दीपक जी बैद, किशन जी सांड, झंवरलाल जी कोचर, **फारबिसगंज से-** बिनोद जी सेठिया, धीरेंद्र जी दुग्गड़, जयप्रकाश जी सेठिया, राजेश कुमार जी सेठिया, नथमल जी सुराणा, **नगरी से-** अशोक कुमार जी शांतिलाल जी जैन, मनोज कुमार जी कमलेश कुमार जी जैन, अनिल जी सुंदरलाल जी जैन

680/– संदीप जी चोपड़ा, पानसेमल

666/– राजेंद्र कुमार जी कोठारी, अजमेर

662/– महावीर जी ताराचंद जी छाजेड़, जोधपुर

650/– कमल जी भटेवरा, खाचरौद

650/– सीमा जी सुराणा, अजमेर

635/– यशवंत जी वीरचंद जी संचेती, पानसेमल

630/– खुशालचंद जी चोपड़ा, शेरगढ़

624/– सागरमल जी दीपेश जी सुराणा, कांकरोली

612/– जीतेंद्र कुमार जी सांखला, जोधपुर

600/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– हेमंत जी नांदेचा, खाचरौद, कमलेश जी जैन, सवाई माधोपुर, पारस जी विकास जी नंदावत, कांकरोली, सूरजमल जी पुलकित जी नलवाया, कांकरोली, दुर्गामल जी चोपड़ा, शेरगढ़, विनोद जी सोहनलाल जी जैन, नगरी, ललित जी बाफना, डोंडवाड़ा, **हावड़ा से-** अरुणा जी छल्लानी, पारसमल जी पोरवाल, निकेश जी पोरवाल, सुशील जी भूरा, प्रकाश जी भूरा, विकास जी भूरा, अभय जी लूणिया, अशोक जी जैन (लूणावत), कवींद्र जी बक्सी, राजेश जी खटोड़, **चांगोटोला से-** भीकमचंद जी चंपालाल जी आबाद, रमेश जी चोरड़िया, अशोक जी मोहित जी चोरड़िया, नीलेश जी चोरड़िया, राजेश जी चोरड़िया, कमलेश जी चोरड़िया

585/– सुनील जी चौधरी, अजमेर

577/– अनिल जी सुजंती, अजमेर

570/– दिनेश जी चोरड़िया, डोंडवाड़ा

569/– जितेंद्र जी लोढ़ा, अजमेर

566/– रमेश कुमार जी नंदावत, कांकरोली

565/– दीपक जी बाबेल, कांकरोली

565/– दर्शन जी देवेंद्र जी बैद, डोंडवाड़ा

551/– राकेश जी जारोली, कांकरोली

545/– दिनेश कुमार जी भंडारी, कांकरोली

540/– अमित जी बिजय कुमार जी बोथरा, बेलडांगा

521/– अनिल जी निखिल जी वया, कांकरोली

520/– कमल जी भरुंट, बेलडांगा

520/– जोगराज जी ढेलड़िया, शेरगढ़

515/– रतनलाल जी हीरावत, दिल्ली

513/– सागरमल जी अभिषेक जी मारू, कांकरोली

511/– दिलीप कुमार जी कोठारी, कांकरोली

511/– राजमल जी राहुल जी गांधी, कांकरोली

510/– रेखचंद जी ढेलरिया, शेरगढ़

506/– राजेंद्र जी कोठारी, मुंबई

501/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– कुशल जी वया, मुंबई, भूपेंद्र जी कोठारी, मुंबई, सुरेश जी सूर्या, मुंबई, जितेंद्र जी सरिता जी कोठारी, कांकरोली, मांगीलाल जी संजय जी सिरोया, कांकरोली, नारायण सिंह जी कन्या कुँवर जी राजपूत, कांकरोली, ललित जी प्रतीक जी लोढ़ा, कांकरोली, टीकमचंद जी कोठारी, अजमेर

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– राजमल जी भंडारी, बड़ीसादड़ी, नाहर सिंह मेहता, बड़ीसादड़ी, ज्ञानचंद जी डांगी, बड़ीसादड़ी, दीपचंद जी बोहरा, छुरिया, रीतेश जी ललवानी, छुरिया, संगीता जी बैद, रायपुर, पुष्पा देवी बाबूलाल जी हिंगड़, बड़ावदा, रजत जी देवेंद्र जी सांड, बड़ावदा, तरुण जी प्रताप सिंह जी कीमती, रामपुरा, ओमप्रकाश जी सूरजमल जी सिसोदिया, रामपुरा, एस.के. स्टोर, करीमगंज, मांगीलाल जी पंकज कुमार जी सिंघवी, बालेसर, पारसमल जी अरिहंत कुमार जी सांखला, बालेसर, नवरत जी बरड़िया, लूणकरणसर, प्रकाश जी सूरजमल जी पामेचा, अंकलेश्वर, राजा जी भरुंट, बेलडांगा, गुप्तदान, कांकरोली, खेतमल जी गुलेच्छा, जोधपुर, भगवानचंद जी ढेलड़िया, शेरगढ़, मेगराज जी गुलेच्छा, शेरगढ़, लूणचंद जी नाहटा, शेरगढ़, राजकुमार जी सुराणा, हैदराबाद, अरविंद जी खिंवसरा, हैदराबाद, प्रकाश जी चोरड़िया, नागदा, ऋषभ जी जैन, नागदा, पुखराज जी लूणावत, मंड्या, उदयचंद जी सेठिया, हावड़ा, राजा जी मेहता, सैंथिया, **हावड़ा से-** लूणकरण जी सुरेश जी भूरा, ईश्वरचंद जी अनिल जी पींचा, श्रीचंद जी सुनील जी बोथरा, अजीत जी पारख, **गंगाशहर से-** भंवरलाल जी सुंदरलाल जी सिपानी, सुसवानी क्लॉथ स्टोर, पारसमल जी वीरेंद्र जी सोनावत, विजयचंद जी बोथरा, प्रकाशचंद जी नीलेश

जी आशीष जी दिनेश जी ललवानी, जेठमल जी प्रवीण कुमार जी मिन्नी, **बजरिया से-** नाथूलाल जी मनोज जी, पद्मचंद जी भुवनेश जी जैन, पद्मचंद जी अर्पित जी जैन, नरेंद्र जी अमित जी जैन, पदमचंद जी राकेश जी जैन, निरंजनलाल जी राकेश जी जैन, पारसचंद जी अभिनंदन जी जैन, **खाचरौद से-** अभय जी बरखेड़ा वाला, मनीष जी भटवेरा, परेश जी नांदेचा, अजय जी नांदेचा, **इंदौर से-** रमेश जी कांकरिया, सुरेंद्र जी ललवानी, संजय जी दलाल, अंतिमा जी जैन, चंद्रेश जी हीरामणी जी छाजेड़, **फारबिसगंज से-** प्रेम जी मनोज जी बोथरा, निशांत जी बोथरा, राजू जी बैद, अशोक जी सेठिया, युगल जी धारीवाल, बिमल जी बोरड़, संजय जी पुगलिया, मैना देवी सिपानी, निर्मल जी कमल जी बाँठिया, केशरीचंद जी सोनावत, दिलीप जी सोनावत, राजेंद्र जी सोनावत, पवन जी झाबक, अमित जी बोथरा, **मुंबई से-** पंकज जी कोठारी, तेजपाल जी कराड़, प्रकाश जी चोरड़िया, मनोज जी पटवारी, लादूलाल जी सूर्या, **चिकमगलूर से-** पवन ऑटोमोबाइल्स, किशोर जी बोथरा, प्रकाशचंद जी भूरा, विनायक शॉपी पॉइंट, निर्मल जी हितेश जी सेठिया, किरणचंद जी गुलगुलिया, **मंदसौर से-** श्वेता जी विनय जी पोरवाल, दिलीप जी नलवाया, चंदा बाई रातड़िया, विनोद जी जैन, शशिकांत जी पितलिया, महेंद्र जी कुदाल, संजय जी आशीष जी खिंदावत, मनोज जी काकरेचा, विकास जी किंदावत, जयंतीलाल जी डूंगरवाल, **जोधपुर से-** गौतमचंद जी गुलेचा, महेंद्र जी लूंकड़, भीकमचंद जी चोपड़ा, धींगरमल जी जवरीलाल जी चोपड़ा, **नगरी से-** दिनेश कुमार जी शांतिलाल जी जैन, प्रकाशचंद जी लक्ष्मीचंद जी जैन, गौरव जी रमेशचंद जी जैन, सुजानमल जी अमृतलाल जी जैन, विनय जी किशोर जी जैन, अजित जी सुंदरलाल जी जैन, कोमल बाई मदनलाल जी जैन, अभय जी रामचंद्र जी जैन, दीनप्रभा जी अशोक जी जैन, **नवसारी से-** आभा जी मेहता, चंदा जी दक, मीना जी देरासरिया, रूपा बाई पितलिया, नेहा जी मोदी, शारदा बाई खमेसरा, सुशीला जी दलाल, आशा जी रांका, हीना जी श्रीश्रीमल, रूपा बाई खमेसरा, जयश्री बेन श्रीमाल, **अजमेर से-** कमलचंद जी बाफना, वनिता जी मोदी, अनिता जी सकलेचा, संपत जी लोढ़ा, अनिल जी लोढ़ा, **मैसूर से-** कांतिलाल जी डागा, गणेशमल जी डागा, आनंदराज जी डागा, अंबालाल जी देसरला, **बाड़मेर से-** कैलाशचंद जी गौरव जी बोहरा, जितेंद्र जी आदित्य जी बाँठिया, अशोक जी बंशीधर जी लूणिया, पृथ्वी जी विशाल जी चोपड़ा, शकुंतला जी बंशीधर जी मेहता, राजेंद्र जी जेठमल जी छाजेड़, संपतराज जी विनीत जी सुराणा, जगदीश जी मोहनलाल जी मुणोत, गणपतराज जी गजेंद्र जी लूणिया, जसराज जी रावलचंद जी गोलछा, **रावतसर से-** गौतम जी बरड़िया, शांतिलाल जी बरड़िया, विमलचंद जी बरड़िया, मनोज जी भूरा, रावतसर, विकास जी भूरा, राजेश जी भूरा, विजयचंद जी गोलछा, कंवरलाल जी गोलछा

इदं न मम

6,00,000/- शांतिलाल जी सांड, बेंगलुरु
5,00,000/- अनिल जी मांगीलाल जी पारख, रायपुर
1,00,000/- संजय कुमार जी भूरा, दिल्ली
1,00,000/- केशरीचंद जी भूरा, दिल्ली
92,000/- जेठमल जी मोहनलाल जी जैन, शहादा
1,11,000/- रतनचंद जी देवराज जी सांखला, राजिम
51,000/- बाबूलाल जी इंद्रा देवी लूणावत, दिल्ली
51,000/- विजयलक्ष्मी जी सांखला, अजमेर
51,000/- पीयूष जी पुखराज जी बोथरा, गुरुग्राम/अलाय
51,000/- अमित जी पुखराज जी बोथरा, अहमदाबाद/अलाय
51,000/- सुरेश कुमार जी नांदेचा, खाचरौद
51,000/- वीर माता उगमा देवी धर्मसहायिका स्व. श्री हजारीमल जी भूरा, नोखा/जांगलू
42,000/- धर्मेंद्र जी आँचलिया, बेगूँ
41,000/- सागरमल जी मोहनलाल जी चोरड़िया, चेन्नई
38,000/- तारा बाई महावीर जी कोठारी, होलेनरसीपुर

31,000/– मोहित जी सांखला, अजमेर
31,000/– विमला देवी गौतमचंद जी बैद, जगदलपुर
21,000/– राजकुमार जी नाहर, जयपुर
21,000/– स्वरूपचंद जी नवीन जी चोरड़िया, खैरागढ़
21,000/– मनोज कुमार जी भूरा, जीरकपुर
21,000/– रूपचंद जी कांतिलाल जी गौतमचंद जी नरेश कुमार जी बाघमार, बालोतरा
21,000/– राजमल जी चोरड़िया, जयपुर
21,000/– नेमीचंद जी पारख, जोधपुर
20,000/– मनोहर जी कावड़िया, फतेहनगर
12,000/– अशोक कुमार जी अभिषेक कुमार जी योगेश कुमार जी गुणधर, दल्लीराजहरा
11,000/– झमकलाल जी अनिल जी चोरड़िया, खाचरौद
11,000/– भोजराज जी सेठिया, दिनहट्टा
11,000/– पूनमचंद जी सुराणा, सूरतगढ़
11,000/– मगनमल जी संचेती, सिलापथार
11,000/– नरेंद्र जी जवरीलाल जी रूनवाल, दोंडाइचा
11,000/– तारा देवी संतोष जी संजय जी पारख, नवापारा
11,000/– प्रकाश जी राजेश जी गिड़िया, नवापारा
11,000/– सुनील जी भव्य जी चोरड़िया, खैरागढ़
11,000/– दिलीप जी बाँठिया, सिलापथार
11,000/– राजेंद्र जी मीठालाल जी देरासरिया, नवसारी
11,000/– ज्ञानचंद जी टाटिया, अर्जुनी
11,000/– प्रदीप जी सोनावत, नई दिल्ली
11,000/– सुनील कुमार जी बंब, टोंक
11,000/– चंपालाल जी पन्नालाल जी ललवानी, दल्लीराजहरा
11,000/– वैभव जी मूथा, वापी
11,000/– विनोद जी छाजेड़, धमधा
11,000/– अशोक जी रौनक जी कांकरिया, चेन्नई
11,000/– गौतमचंद जी सुराना, कटिहार
10,500/– दिलीप कुमार जी दक, नवसारी
7,100/– मगन जी बच्छावत, अहमदाबाद
6,200/– जेठमल जी राजेश जी डागा, सिलापथार
6,100/– रमेश कुमार जी सांखला, महासमुंद
5,100/– मनोज कुमार जी डागा, हावड़ा
5,100/– धर्मचंद जी नवीन जी गेलड़ा, बेंगलुरु
5,100/– मोहनलाल जी महेंद्र जी चोरड़िया, जगदलपुर
5,100/– महेंद्र कुमार जी बैद, बनमनखी
5,100/– मुकेश जी दिनेश जी रायसोनी, नवापारा
5,100/– माणकचंद जी पींचा, रायपुर
5,100/– प्रकाशचंद जी रतनलाल जी जैन, सीतामऊ
5,100/– अरविंद जी अशोक जी बोहरा, सीतामऊ
5,100/– सुरेश जी बाबूलाल जी दसेड़ा, सीतामऊ
5,100/– प्रदीप कुमार जी निर्मल जी बोहरा, सीतामऊ
5,100/– प्रकाशचंद जी प्रदीप जी सोनी, खरियार रोड
5,000/– अनिल जी रोशनलाल जी रांका, नवसारी
5,000/– देवेंद्र जी शांतिलाल जी भंडारी, दोंडाइचा
5,000/– मोहनलाल जी बोथरा, अहमदाबाद
4,100/– कमला बाई कोयल जी वया, गिंगाला–उदयपुर
3,300/– श्रेणिक जी चौहान, जावरा
3,110/– गुप्तदान, जगदलपुर
3,101/– फतेहलाल जी चांदमल जी हिंगड़, वलसाड
3,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– राजमल जी कोठारी, वलसाड, अशोक जी रायसोनी, नवापारा, रमेशचंद जी देरासरिया, नवसारी, प्रवीण जी मोदी, भदेसर
3,001/– पीयूष जी मांडोत, पुणे
3,000/– अजीत जी कांकरिया, सूरत
2,700/– शौकीनलाल जी मुणोत, नीमच
2,500/– महावीर प्रसाद जी दुगड़, गुवाहाटी/नोखा
2,500/– राजमल जी सूरजमल जी विनायकिया, दोंडाइचा
2,200/– नरेंद्र कुमार जी जैन, जयपुर
2,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– प्रभा देवी झाबक, फारबिसगंज, संपतलाल जी गादिया, जबलपुर, रामलाल जी सेठिया, चंडीगढ़, रमेशचंद्र जी मेहता, भीलवाड़ा, ललित जी देसरला, वलसाड, पवन जी विनोद

जी देसरला, वलसाड, मीठालाल जी पिछोलिया, वलसाड, मदनलाल जी पन्नालाल जी भंडारी, दोंडाइचा, संदीप जी आंचलिया, इंदौर, कीर्ति कुमार जी धनराज जी गांधी, यवतमाल, मदनलाल जी नीरज जी गन्ना, होलेनरसीपुर, शंकरलाल जी लोढ़ा, उदयपुर, ऊषा जी कांकरिया, सूरत, सतीश जी मोदी, सूरत, सुशील जी शाह, राजनांदगाँव, **बड़ावदा से-** दिलीप जी शांतिलाल जी हिंगड़, राजेंद्र जी सांड, अशोक जी हिंगड़, ज्ञानचंद जी दुग्गड़, अवधेश जी हिंगड़, दिलीप जी हिंगड़, रजत जी सांड, **मंदसौर से-** रतनलाल जी नलवाया, हस्तीमल जी चंडालिया, प्रकाश जी जैन (बड़ोद वाले), अर्पित जी अभानी, **नवसारी से-** भूपेश जी देरासरिया, राजेंद्र जी छाजेड़, विनोद जी बरड़िया, राजेंद्र जी मुणोत, दर्शन जी छाजेड़

1,200/– जिनेश जी मेहता, भीलवाड़ा

1,121/– गुप्तदान, जगदलपुर

1,100/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– सविता जी कोठारी, अहमदाबाद, हनुमानमल जी गोलछा, जलपाईगुड़ी, महेंद्र जी रवींद्र जी कोटड़िया, दोंडाइचा, विकास जी कांतिलाल जी छाजेड़, दोंडाइचा, रमेशचंद जी उत्तमचंद जी चतुरमूथा, दोंडाइचा, पारसमल जी वीरेंद्र जी सोनावत, भीनासर, राजीव जी शाह, वलसाड, स्नेहा जी सुनील जी शाह, राजनांदगाँव

1,000/– प्रकाशचंद जी सांखला, राजनांदगाँव

555/– कमला बाई पुखराज जी चोपड़ा, सेलांबा

502/– सागर सिंह जी कंचनलता जी चौधरी, उदयपुर

501/– ललित जी बोथरा, दिल्ली

500/– मधु जी शीतल जी भानावत, उदयपुर

जीवदया

40,000/– श्री अ. भारतीय साधुमार्गी जैन ट्रस्ट, जोधपुर

5,100/– गुप्तदान, सवाई माधोपुर

5,100/– मिश्रीलाल जी प्रशांत जी प्रवीण जी नाहर, चारमा/कांकेर (श्री दीपचंद जी नाहर की पुण्यस्मृति में)

5,100/– राखेचा परिवार, अछोली (श्री टॉमचंद जी राखेचा की प्रथम पुण्यतिथि पर)

5,000/– गुप्तदान

3,000/– अशोक जी अभिषेक जी कोठारी, चेन्नई

2,300/– श्री साधुमार्गी परिवार, लूणकरणसर

2,100/– आनंद जी चंद्रकांत जी चोरड़िया परिवार, शहादा (श्री नरेंद्र जी मूलचंद जी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में)

2,100/– कांतिलाल जी शांतिलाल जी चोरड़िया परिवार, दोंडाइचा (श्री नरेंद्र जी मूलचंद जी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में)

2,100/– कमलेश जी पारसमल जी पितलिया, मोरवन

2,100/– गुप्तदान

2,100/– संभव जी मालू, खड़गपुर

1,101/– ईश्वर जी भंडारी, ठाणे

1,100/– लूणकरण जी धीरज जी सेठिया, भीनासर

1,000/– इंदिरा बाई भीकमचंद जी कोटड़िया परिवार, अक्कलकुआ (श्री नरेंद्र जी मूलचंद जी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में)

500/– का सहयोग प्रत्येक से प्राप्त– गुप्तदान, श्री नरेंद्र जी मूलचंद जी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में – श्रीमती पिस्ता बाई मनोहरमल जी कोटड़िया परिवार, शहादा, कंचन बाई मांगीलाल जी कोचर, बलवाड़ी, जतन बाई इंद्रचंद जी बोहरा, अक्कलकुआ, निर्मला जी हीरालाल जी संचेती, खेतिया, मंगल बाई विनोद जी कोटेचा, इंदौर, वैशाली जी नीरज जी बेताला, इंदौर, सोनाली जी सर्वेश जी संचेती, मलकापुर, निधि जी सुयश जी डांगी, जामनेर, रूपाली जी परेश जी दुग्गड़, दोंडाइचा, दीपिका जी सुशील जी लुंकड़, फलौदी, दिव्यानी जी खिलेश जी कर्णावट, पुणे

समता प्रचार संघ

11,000/– नरेंद्र जी जवरीलाल जी रूनवाल, दोंडाइचा

समता साहित्य स्टॉल अनुदान

11,000/– भंवरलाल जी सुंदरलाल जी शंकरलाल जी बोथरा, दुर्ग (सुमन बाई संध्या बाई चंदा बाई बोथरा के तपस्या के उपलक्ष्य पर)

10,000/- सुशील कुमार जी मेहता, ब्यावर
1,000/- गुप्तदान, अजमेर

श्रमणोपासक भेंट

2,100/- आनंद जी चंद्रकांत जी चोरड़िया परिवार, शहादा (श्री नरेंद्र जी मूलचंद जी चोरड़िया की पुण्यस्मृति में)
1,101/- नितिन जी लोढ़ा, शहादा (श्री कंवरलाल जी की पुण्यस्मृति में)
1,100/- गौतम चंद जी सुनीत जी जैन, सवाई माधोपुर (पूनम संग दीपक की शादी के उपलक्ष्य में)
1,100/- जितेंद्र जी आगम जी जैन, सवाई माधोपुर (रितिक संग सुरेखा की शादी के उपलक्ष्य में)
1,001/- हर्ष जी कोटड़िया, शहादा

समता मिति योजना

5,000/- देवेंद्र कुमार जी शांतिलाल जी भंडारी, दोंडाइचा (श्री शांतिलाल जी पन्नालाल जी भंडारी की पुण्यतिथि दिनांक 27-01-2024 के उपलक्ष्य में)

समता सरिता सेवा (विहार सेवा)

5,100/- गुप्तदान, सवाई माधोपुर

समता संस्कार पाठशाला

1,100/- अशोक कुमार जी डूंगरवाल, निम्बाहेड़ा

सर्वधर्मी सहयोग (महिला समिति)

6,000/- गुप्तदान, बीकानेर
6,000/- गुप्तदान, बीकानेर
1,100/- मोनालिसा जी लोकेश जी डागा, रायपुर

:: **विशेष** ::

श्रमणोपासक सदस्यता-6

::: 1 अप्रैल 2024 से 31 मार्च 2025 तक :::

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ के बैंक खाते में निम्नलिखित राशियाँ विभिन्न दानदाताओं ने जमा करवाई हैं, लेकिन जमाकर्ता के नाम व किस मद हेतु राशि जमा की गई है इसकी सूचना कार्यालय को प्राप्त नहीं होने से ये राशियाँ संघ के सस्पेंस खाते में संयोजित हैं। अत: जिन दानदाताओं ने राशि के सामने अंकित दिनांक को ये राशियाँ जमा करवाई हैं, वे केंद्रीय कार्यालय, बीकानेर को मोबाइल नं. 7976520588 पर सूचित कर अपनी पक्की रसीद अतिशीघ्र ही प्राप्त करें।

दिनांक	*राशि*	*अन्य विवरण*
एस.बी.आई. बैंक		
02.04.24	1,100/-	UPI सिद्धार्थ
04.04.24	500/-	नकद
06.04.24	1,000/-	UPI आदित्य जैन
12.04.24	501/-	UPI विपुल जैन
19.04.24	1,100/-	UPI विकास
19.04.24	1,000/-	NEFT अशोका रेजीडेंसी
13.05.24	5,100/-	नकद
14.05.24	1,100/-	UPI सिंपल
14.05.24	800/-	UPI सचिन
07.06.24	4,000/-	NEFT अभिषेक किरण स्टूडियो
10.06.24	21,000/-	By Trf.
17.06.24	2,100/-	UPI पारसमल जैन
19.06.24	2,960/-	UPI रचना
19.06.24	1,920/-	UPI सुनीत विनोद
01.07.24	3,133/-	IMPS
01.08.24	3,133/-	UPI विमल कुमार
16.08.24	2,100/-	TRF
18.09.24	5,000/-	UPI निकुंज शाह
20.09.24	9,000/-	UPI ऋषभ जैन
01.10.24	1,000/-	UPI आयुर्षी
04.10.24	30,000/-	Ch. 1218 DCB
04.10.24	2,500/-	नकद
20.10.24	1,500/-	UPI रानी जैन
23.10.24	2,000/-	UPI महावीर
02.11.24	2,000/-	UPI महावीर
02.11.24	2,100/-	UPI मनोज
01.12.24	5,100/-	IMPS शांता बाई प्रेमचंद

02.12.24	1,945/-	UPI प्रतीक शाह	18.03.25	1,100/-	UPI जिग्नेश शाह
28.12.24	5,000/-	UPI नीलम जैन	22.03.25	15,000/-	IMPS पूनम
23.01.25	1,100/-	UPI राजेश	23.03.25	11,000/-	NEFT लालचंद जैन
03.02.25	3,103/-	IMPS विमल कुमार	26.03.25	11,000/-	UPI सोनलबेन
23.02.25	5,100/-	IMPS नम्रता मनोज कुमार	26.03.25	4,500/-	IMPS मयंक
03.03.25	2,100/-	By Trf.	29.03.25	45,000/-	नकद
15.03.25	3,000/-	UPI विनोद	29.03.25	2,500/-	नकद
17.03.25	25,000/-	नकद	31.03.25	11,000/-	नकद
18.03.25	19,800/-	UPI जगदीश	31.03.25	1,111/-	UPI पदम

- उपरोक्त भेंटदाताओं का श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ द्वारा आभार व्यक्त किया जाता है। आप इसी तरह संघ के उत्थान में अपना योगदान बनाए रखें।
- दिनांक 21-22 जुलाई, 2024 को भीलवाड़ा में संपन्न कार्यकारिणी बैठक में हुए निर्णयानुसार अब आगामी अंकों में न्यूनतम ₹1,100/- की राशि प्रदान करने वाले दानदाता का नाम ही प्रकाशित किया जाएगा।

"जीवन में छुपी शक्ति की अभिव्यक्ति होने पर आत्मा तीनों लोकों की प्रभुता प्राप्त कर सकती है। वह प्रभुता शस्त्र बल, धन बल अथवा अन्य किसी बाह्य बल से प्राप्त नहीं हो सकती। वह तो आंतरिक शक्ति के सही विकास पर निर्भर है। आंतरिक शक्ति अभिमान की मात्रा में दब जाती है। बड़े से बड़े व्यक्ति क्यों न हो, अभिमान उसको भी गिरा देता है। बाहुबली जैसे बलिष्ठ को भी अभिमान ने पछाड़ दिया। जंगल में ध्यान लगाकर खड़े रहने से लताएँ शरीर पर व्याप्त हो गईं। पक्षियों के घोंसले तक का कथन प्रसारित हो गया, पर मन की एकाग्रता भंग नहीं हुई। शरीर ने जरा भी लचक न खाई, नेत्र की पलकें स्फुरित न हो पाईं। कितना कठोर कार्य बाहुबली जी ने किया। शारीरिक, मानसिक एवं वाचिक प्रक्रिया की साधना में जरा भी कमी नहीं आने दी, पर आंतरिक अभिमानवृत्ति के कारण त्रिभुवन प्रभुता रूप चरम आत्मीय शक्ति प्राप्त करने में बाधा उपस्थित हो गई और केवलज्ञान उपस्थित न हो पाया। जिस समय सूक्ष्म रूप से रहने वाले अभिमान को नष्ट किया कि तत्क्षण उसी अवस्था में केवलज्ञान प्राप्त हो गया और त्रिभुवन प्रभुता की विराट शक्ति के स्वामी बन गए। अतः अभिमान का सर्वथा परित्याग भी त्रिभुवन प्रभुता प्राप्ति का एक साधन है।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री नानालाल जी म.सा.

|| जय गुरु नाना || || जय महावीर || || जय गुरु राम ||

तृतीय पुण्यस्मरण

सुश्राविका
सूरज देवी नाहटा
बीकानेर/मुंबई

जन्म
19-10-1937

स्वर्गवास
18-04-2022

धर्मनिष्ठ, सुश्राविका श्रीमती सूरज देवी नाहटा धर्मपत्नी स्व. श्री झंवरलाल जी नाहटा, पुत्रवधू स्व. श्री चंपालाल जी नाहटा, बीकानेर निवासी मुंबई प्रवासी का दिनांक **18 अप्रैल 2022** को **84 वर्ष** की आयु में नवकार महामंत्र का जाप करते हुए स्वर्गवास हो गया।

आप अत्यंत धार्मिक, समताधारी, सरल हृदय, हँसमुख व मिलनसार व्यक्तित्व की धनी थीं। आपके जीवनपर्यंत दो सामायिक का लक्ष्य रहता था और अष्टमी व चतुर्दशी को रात्रिभोजन का त्याग था। वर्ष 2000 में आपने आचार्य प्रवर श्री रामलाल जी म.सा. से आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किए थे। आचार्य प्रवर के मलाड प्रवास के समय आपने पूर्ण जिम्मेदारी से सेवाएँ प्रदान कीं।

आप दृढ़ निश्चयी महिला थीं। जब मुंबई में आपके पति श्री झंवरलाल जी नाहटा ने '**स्वास्तिक बैटरी**' की फैक्ट्री की स्थापना की तो आपने कँधे से कँधा मिलाकर अपने दायित्व का निर्वहन करते हुए पूरी फैक्ट्री सँभाली।

आप गंगाशहर के सुप्रसिद्ध व्यवसायी चतुर्भुज जी बोथरा की पौत्री व तोलाराम जी की सुपुत्री थीं। आपके तीन भाई स्व. श्री जसकरण जी बोथरा, रिद्धकरण जी बोथरा एवं कन्हैयालाल जी बोथरा हैं। तीनों भाई सदैव श्री साधुमार्गी जैन श्रावक संघ से जुड़े रहे हैं व समय-समय पर अपने दायित्वों का निर्वहन किया है। आपके एक पुत्री प्रेमलता जी डागा गंगाशहर निवासी दिल्ली प्रवासी कमलचंद जी डागा की धर्मपत्नी हैं। कमलचंद जी डागा दिल्ली के प्रतिष्ठित व्यवसायी एवं धर्मनिष्ठ सुश्रावक हैं। श्री डागा जी समाजसेवा में सदैव अग्रणी भूमिका निभाते रहे हैं।

आपके पुत्र एवं पुत्रवधू क्रमशः रमेश-सुमन, हेमंत-जयश्री हैं, जो मिलनसार, सेवाभावी, सुसंस्कारी हैं। आपकी पौत्रियाँ करिश्मा व दिव्या तथा पौत्र अंकित, धीरज व आदित्य हैं। पूरे परिवार ने आपके अंतिम समय में आप द्वारा प्रदत्त संस्कारों को आदर्श मानते हुए पूर्ण मनोयोग से आपकी सेवा की।

:: शोकाकुल ::

रमेश व हेमंत नाहटा, मलाड (मुंबई)।

विनम्र श्रद्धांजलि

बड़ीसादड़ी। सुश्रावक शेषमल जी दाणी डूंगला निवासी का 87 वर्ष की आयु में 22 जनवरी को देहावसान हो गया। आप विनम्र, हँसमुख, दयालु प्रकृति के धनी थे। आप आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धावान थे। प्रतिदिन 5-7 सामायिक करने का लक्ष्य रखते थे। आपके रात्रिभोजन त्याग एवं शीलव्रत के प्रत्याख्यान थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

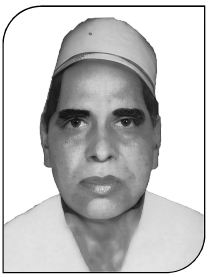

मनासा (भाटखेड़ी)। सुश्रावक प्रवीण कुमार जी (पिंटू जी) सुपुत्र स्व. श्री विनय कुमार जी बंब का 42 वर्ष की आयु में 7 मार्च को निधन हो गया। आप आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धावान थे। सूरत में बहुराष्ट्रीय कंपनी में कार्यरत प्रवीण जी समता युवा संघ, सूरत के उत्साही कार्यकर्ता थे। आपके सांसारिक परिवार से साध्वी श्री मंजरी श्री जी म.सा. धर्म की प्रभावना कर रहे हैं। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

दिल्ली। सुश्राविका सायर देवी धर्मसहायिका स्व. श्री झंवरलाल जी बोथरा गंगाशहर निवासी, दिल्ली प्रवासी का 19 मार्च को 74 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप चारित्रात्माओं के दर्शन सेवा के भाव रखती थी। आप उपवास, एकासना एवं प्रतिदिन सामायिक आदि करने का लक्ष्य रखती थीं। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अनन्य श्रद्धा थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

भदेसर। सुश्राविका शांता देवी धर्मपत्नी स्व. श्री मदनलाल जी मोदी का 86 वर्ष की आयु में 26 मार्च को निधन हो गया। आप हँसमुख, मिलनसार, तप-त्याग से ओत-प्रोत महिला थी। आप आचार्य श्री नानेश की संसारपक्षीय भतीजी एवं साध्वी श्री अविचल श्री जी म.सा. की संसारपक्षीय काकीजी थीं। आपने तीन आचार्यों की सेवा का लाभ लिया। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

बलवाड़ी। लोहावट निवासी सुश्रावक मांगीलाल जी सुपुत्र श्री हेमराज जी कोचर का 83 वर्ष की आयु में 30 मार्च को चौविहार संथारे सहित महाप्रयाण हो गया। आपने तेला, अठाई, उपधान तप आदि से अपनी आत्मा को भावित किया। आप साध्वी श्री निरामगंधा श्री जी म.सा. एवं साध्वी श्री मणामगंधा श्री जी म.सा. के संसारपक्षीय दादाजी थे। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

पेटलावद। सुश्रावक हीरालाल जी गांधी का 4 अप्रैल को देहावसान हो गया। आप अत्यंत ही धार्मिक एवं सरल प्रकृति के धनी थे। देव, गुरु, धर्म के प्रति आपकी निष्ठा अन्यों के लिए अनुकरणीय थी। आपने समता प्रचार संघ के माध्यम से अनेक वर्षों तक स्वाध्यायी सेवाएँ दी। आचार्य श्री रामेश के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा व भक्ति थी। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गए हैं।

देशनोक/धुबड़ी। सुश्राविका जतन देवी धर्मपत्नी राजकुमार जी सांड का 57 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपकी आचार्य श्री नानेश एवं आचार्य श्री रामेश के प्रति अटूट श्रद्धा एवं आस्था थी। अत्यंत ही मृदुभाषी एवं मिलनसार जतन देवी चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहती थी। आपने 8 की लड़ी एवं सावन-भादवा तप से जीवन सजाया हुआ था। आप अपने पीछे भरा-पूरा संस्कारवान परिवार छोड़कर गई हैं।

भगवती सूत्र में एक प्रश्न पूछा गया है कि भगवन्! सिद्धि–मुक्ति स्वलिंग में या पर–लिंग में? और यदि पर–लिंग में है तो अन्य लिंग में है या गृहस्थ लिंग में? तीर्थंकर देवों ने या प्रभु महावीर ने अनेकांत शैली में उत्तर दिया। उन्होंने फरमाया– सिद्धि स्वलिंग में भी है, पर–लिंग में भी है। द्रव्य रूप से चाहे कोई भी लिंग हो, कोई बाधा नहीं, किंतु भाव रूप से चिंतन किया जाए तो वहाँ स्पष्ट कह दिया गया है कि सिद्धि स्वलिंग में ही है, पर–लिंग में संभव नहीं। क्या है इसका तात्पर्य? ऊपर की पोशाक गृहस्थ की, जोगी की, संन्यासी की, भगवा वस्त्र या अन्य किसी वस्त्र में क्यों न हो, बाहर का अन्य लिंग सिद्धि में रुकावट नहीं डालता। किंतु भावों का अन्य लिंग बाधक है। इसलिए भावरूप में स्वलिंग में ही सिद्धि मानी गई। इसका कारण यह है कि भावों में जो स्वलिंग है, वह है सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चारित्र। इनके बिना मुक्ति नहीं। उस लिंग में प्रविष्ट होना ही होगा। जब तक ज्ञान–दर्शन–चारित्र से संबंध न जुडे, तब तक सिद्धि प्राप्त नहीं हो सकती।

सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चारित्र को मोक्ष का मार्ग कहा गया है, किंतु इनका स्वरूप है क्या? बड़ी विडंबना है। सम्यक् दर्शन है क्या? हम अपनी बपौती मानकर चलते हैं कि जैन कुल में जन्म लेने वाला सम्यक् दृष्टि कहला सकता है, पर जैन कुल में जन्म लेने मात्र से सम्यक् दृष्टि हो जाए तब तो सारे जैनियों को सम्यक् द्रष्टा होने का सर्टिफिकेट मिल जाना चाहिए या मिला हुआ होना चाहिए। किंतु ऐसा नहीं है। जैन कुल के अनुरूप व्यवहार नहीं है तो कैसे सम्यक् दर्शी बनेगा? क्या सम्यक् दर्शन वाला कत्लखानों का डायरेक्टर बनेगा? कथमपि नहीं।

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति

चिंतन की कड़ियाँ

मटकी जैसी ठीकरी

''मेरा ऋषभ जो करता है, अच्छा करता है।'' ये वचन माता मरुदेवी के माने जाते हैं। हो सकता है शब्दों में कुछ हेर-फेर हो, पर इस प्रकार का विश्वास मरुदेवी को था, ऐसा ग्रंथों की साक्षी से सुनिश्चित है। यहाँ पर चिंतनीय बिंदु यह है कि आज ऐसी कौन माता है, जिसे अपनी संतान पर इतना विश्वास हो कि मेरी संतान जो करती है अच्छा करती है। शायद ऐसी माता दुर्लभ हो। यह दुर्लभता क्या दर्शाती है, उसकी गहराई में जाएँ। जब उसकी गहराई में चिंतनीय स्थिति बनती है तो लगता है कि अपनी संतान पर विश्वास न होने का अर्थ है, स्वयं पर विश्वास न होना। जिसे अपने जीवन पर विश्वास होगा, उसे अपनी संतान पर भी विश्वास होगा। वह अपनी संतान के विषय में शंकित हो, ऐसा सहसा नहीं हो सकता। व्यक्ति का जीवन यदि नैष्ठिक होगा तो उसे अपनी संतान पर भी उतना ही गहरा विश्वास होगा। अविश्वास की वहाँ गुंजाइश ही नहीं।

वर्तमान युग में जो घटनाएँ घट रही हैं, घटती जा रही हैं, उसके दोषी केवल संतानें ही नहीं हैं। माता-पिता भी कुछ हद तक दोषी हो सकते हैं। उनका जीवन यदि कहीं भी सच्छिद्र रहा होगा तो उसका असर भी हो सकता है। मनोविज्ञान भी आनुवांशिकी के प्रभाव को स्वीकार करता है। चिकित्सा क्षेत्र में भी आनुवांशिकी के कारण अनेक बीमारियों का होना माना गया है। अत: स्पष्ट है कि आनुवांशिक संस्कार भी प्रभावित होते हैं। सिंह शावक को दहाड़ना एवं छलांग लगाना तथा वन्य प्राणियों को शिकार करना कौन सिखाता है? यह सारा आनुवांशिक रूप व वातावरण से प्राणी सीखता है। माता-पिता के संस्कार संतान में बने रहते हैं। वनराज चावड़ा का घटना क्रम इसका अर्वाचीन उदाहरण है। पौराणिक आख्यान महाराणी मदालसा का जगत् प्रसिद्ध है। अपनी संतानों को जैसा उसने चाहा, वैसा ढाला। क्या आज की माताएँ जैसा चाहें वैसा आकार संतान को नहीं दे सकतीं? अवश्य दे सकती हैं। बशर्ते वह अपने जीवन के प्रति भी पूर्ण आश्वस्त हों। (उपांशु)

-परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.

आनंदिनी

संगठन प्रवृत्ति के अंतर्गत प्रारंभ '**आनंदिनी : सुखमय जीवन की शुरुआत**' ऑनलाइन कार्यक्रम के अंतर्गत प्रत्येक माह एक ऑनलाइन सेशन आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम हेतु आयु सीमा 45 वर्ष है। अप्रैल माह के प्रथम सप्ताह तक 511 महिलाओं द्वारा पंजीकरण किया जा चुका है तथा यह प्रक्रिया निरंतर जारी है। 21 अप्रैल को इस कार्यक्रम का मंगलमय शुभारंभ किया गया। इसमें प्रखरवक्ता दीपा जी कटारिया, हुबली द्वारा आत्म-विकास, आत्म-अनुशासन, आत्म-शक्ति, तनाव रहित जीवन, पैरेंटिंग, संवाद कौशल एवं भावनाओं का प्रबंधन जैसे

जीवनोपयोगी विषयों पर संवादात्मक सेशन लिए जाएँगे। आगामी सेशन्स में सम्मिलित महिलाओं को प्रैक्टिस शीट्स दी जाएँगी, जिनके माध्यम से वे आत्म-आकलन कर स्वयं के व्यक्तित्व विकास की दिशा में आगे बढ़ सकेंगी। इससे जुड़ने के लिए महिलाएँ यहाँ दिए गए क्यूआर कोड स्कैन कर अथवा मो.नं. (+91 6375633109) पर वॉट्सएप के माध्यम से यह संदेश भेजें : **''मैं आनंदिनी : सुखमय जीवन की शुरुआत से जुड़ना चाहती हूँ।''** 'आनंदिनी' के प्रेरणादायक सत्र आपके जीवन में सकारात्मक परिवर्तन लाएँ एवं आपकी ऊर्जा समाज और परिवार में सुख, शांति और समृद्धि का संचार करें।

समयं गोयम! मा पमायए

केसरिया कार्यशाला

तीर्थंकर भगवान की वाणी, जिसकी नहीं कोई सानी।
श्रवण करने की अब हमने ठानी, सुनो, न करो प्रमाद प्राणी।
आचार्यश्री जी की कृपा का वर्षण, उपाध्याय जी के कथन का मंथन।
अप्रमाद के राजमार्ग की कहानी, सुनो, केसरिया कार्यशाला की जुबानी।।

श्रीमद् उत्तराध्ययन सूत्र के दशम अध्ययन में '**द्रुमपत्रक**' आदि अनेक उपमाओं व उदाहरणों से प्रथम गणधर गौतम स्वामी के माध्यम से हम सभी को प्रमाद न करने की सुंदर शैली में सफल जीवन जीने की कला सिखाई गई है।

स्वयं को जागृत करने की प्रेरणा, स्नेह, राग, द्वेष से ऊपर उठने का संदेश
सांसारिक, व्यावहारिक और आध्यात्मिक उन्नति की ओर बढ़ने की सीख

लगभग छह कार्यशालाओं में यह अध्ययन संपन्न किया जाएगा। प्रत्येक कार्यशाला में अनूठी गतिविधियाँ रहेंगी। हमारा आह्वान : **आप जरूर पधारिएगा - हर माह... हर मंडल में... हर क्षेत्र में...**

संपूर्ण महिला समिति को एक रंग में रँगने आ रही है : **केसरिया कार्यशाला**।

साधुमार्गी वुमन्स मोटिवेशनल फोरम

Sadhumargi Women's Motivational Forum

साधुमार्गी वूमन्स मोटिवेशनल फोरम द्वारा 22 मार्च को प्रतिक्रमण पर आधारित **'How to detox your body, mind and soul?'** विषय पर चतुर्थ ऑनलाइन गतिविधि का सफल आयोजन किया गया। इसमें समझाया गया कि किस प्रकार प्रतिक्रमण के माध्यम से हम अपने तन, मन और आत्मा के मध्य संतुलन स्थापित कर प्रसन्न, आनंदमय जीवन का सहज संचालन कर सकते हैं। साथ ही यह भी बताया गया कि प्रतिक्रमण हमारे लिए क्यों आवश्यक है वं यह हमारे मानसिक, शारीरिक व आत्मिक स्वास्थय को कैसे प्रभावित करता है तु दैनिक जीवन में इसके क्या प्रभाव पड़ते हैं? प्रस्तुतिकरण की रचनात्मक एवं प्रभावशाली शैली से प्रतिभागी न केवल प्रेरित हुए बल्कि प्रतिक्रमण को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाने की दिशा में सजग भी हुए। कार्यक्रम में विभिन्न अंचलों द्वारा 12 व्रतों पर आधारित प्रेरक वीडियो प्रस्तुत किया गया, जिसकी सभा ने सराहना करते 12 व्रत स्वीकार किये। इस ऑनलाइन गतिविधि का उद्देश्य जनमानस में प्रतिक्रमण के प्रति जागरूकता बढ़ाना एवं इसे आत्मिक शुद्धि का एक सशक्त माध्यम बनाना रहा।

कार्यक्रम ने न केवल विचारों को झकझोरा बल्कि आत्मिक उन्नयन की दिशा में एक सकारात्मक प्रेरणा भी दी।

वर्षीतप प्रत्याख्यान ग्रहण करने वाली बहनों की सूची

:: मेवाड़ अंचल ::

उदयपुर : मीरा जी मेहता, अर्चिता जी खेमलीवाला, बसंता बाई मेहता, जीनू जी सियाल, मोनिका जी बोकड़िया, भावना जी वया, कांता जी धारीवाल, अंगूरबाला जी, **बड़ीसादड़ी :** प्रमिला जी मोगरा, अल्का जी मारू, इंद्रा जी मेहता, सरिता जी दलाल, आशा जी मेहता, राजकुमारी जी मारू, **चित्तौड़गढ़ :** मंजू जी भड़कत्या, मधु जी श्रीश्रीमाल, दिव्या जी अब्बाणी, **भदेसर :** विजयलक्ष्मी जी मोदी, **कपासन :** ललिता जी संचेती, **प्रतापगढ़ :** मोहन बाई चिप्पड़, सुशीला जी चिप्पड़, **भीलवाड़ा :** कुसुम जी नागौरी, मोनिका जी सेठिया, चंद्रकला जी कटारिया, पुष्पा जी बरमेचा, रंजना जी दक, वर्षा जी दक, शीला जी कोठारी, कौशल्या जी भूरा, सुशीला जी डांगी, मीना जी बाघमार, इंदिरा जी देसरड़ा, कांता जी चौधरी, **असावरा :** कमला बाई मट्ठा, मंजू बाई लोढ़ा, **निम्बाहेड़ा :** सरोज जी सहलोत, सुशीला जी अब्बाणी, कुसुम जी पोरवाल

:: जयपुर-ब्यावर अंचल ::

ब्यावर : चंद्रकांता जी बाबेल, मंजू जी मेहता, नवरत्न बाई रांका, मंजू जी कोठारी

:: छत्तीसगढ़-ओड़िशा अंचल ::

खैरागढ़ : सरला जी सांखला, नेहा जी कोटड़िया, **कलंगपुर :** बिमला जी ओस्तवाल, **गुंडरदेही :** जया देशलहरा, **नगरी :** इंद्रा जी नाहटा, मधु जी नाहटा, किरण जी नाहटा, ऊषा जी नाहटा, आशा जी बंब, धन्नी जी गोलछा, **राजनांदगाँव :** सुषमा जी गिड़िया, चंचल जी पारख, सूरज जी सुराणा, सीमा जी गोलछा, **खरियार रोड :** मीनल जी ढोलकिया, **लखनपुरी :** अनिता जी बाफना, **संबलपुर :** पुष्पा जी संचेती, **राजिम :** ललिता जी पारख, रेखा जी गोलछा, पुष्पा जी बच्छावत, किरण जी बाफना, मंजू जी कोठारी, **रायपुर :** मन्नू बाई बरड़िया, बसंती बाई जैन, ललिता जी कांकरिया, मोनिका जी हीरावत, तेज बाई लोढ़ा, राम देवी संचेती, किरण जी चौपड़ा, **धमतरी :** किरण जी नाहर, तारा बाई संकलेचा, **दुर्ग :** सुमन जी बोथरा, संध्या जी बोथरा, चंदा जी बोथरा, लीला जी पारख, सीमा जी पारख, वीणा जी श्रीश्रीमाल, मीना जी सांखला, उर्मिला जी सांखला, संगीता जी सांखला, राखी जी सांखला, नीरू जी सांखला, ज्योति जी सांखला, चंचल जी सांखला, सोनल जी लूणावत, समता जी लूणावत

:: कर्नाटक-आंध्र प्रदेश अंचल ::

बेंगलुरु : लीला जी डोडरवाल, धन्ना बाई नागौरी, मंजू जी खींवसरा, मंजू जी कोठारी, कमला देवी कोठारी, नीलम जी सांड, कमलेश बाई बोहरा, जतन बाई गन्ना, तनवी जी शर्मा, **हैदराबाद :** प्रेम बाई पितलिया, कंचन बाई गांधी, वंदना जी खींवसरा, मधुबाला जी लूनिया, रेखा जी सोनावत, शकुंतला बाई गुगलिया, शोभा जी नाहर, संगीता जी डागा, नगीन जी कोठारी, सूरज बाई गांधी, मंजुलता जी लूनिया, **कडूर :** सरोज जी बोथरा

:: पूर्वोत्तर अंचल ::

सिलापथार : अनिता जी संचेती, **ग्वालपाड़ा :** शायर देवी भूरा, **करीमगंज :** ज्ञानी देवी भूरा

:: दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी अंचल ::

दिल्ली : कंचन जी आंचलिया, **चंडीगढ़ :** रजनी जी जैन, **लुधियाना :** निर्मला जी सेठिया

सामाजिक कार्य

1.	छोटी सादड़ी	कृष्ण गोपाल गौशाला, जमलावदा में गायों को 2 ट्रॉली चारा व 4 कार्टून गुड़ खिलाया गया।
2.	बड़ीसादड़ी	अस्पताल में फल वितरित किये गये।
3.	निम्बाहेड़ा	जैन दिवाकर कमल गौशाला में 2100/- का चारा एवं कबूतरों को दाना डाला गया।

धार्मिक शिविर

देश के अनेक क्षेत्रों में चारित्रात्माओं के पावन सान्निध्य में विविध विषयों पर आयोजित शिविरों का विवरण –

क्र.सं.	विषय	क्षेत्र	चारित्रात्माओं का सान्निध्य
1.	ज्ञान का थोकड़ा, ध्यान के दोष	धमतरी	शासन दीपक श्री अक्षय मुनि जी म.सा.
2.	टेंशन फ्री शिविर	निम्बाहेड़ा	शासन दीपिका साध्वी श्री चेतन श्री जी म.सा.
3.	उड़ान-2.0	उदयपुर	शासन दीपिका साध्वी श्री अक्षिता श्री जी म.सा.
4.	याद करो और आराधक बनो, मैसेज ऑफ द गॉड, शरीर की शक्ति कम होने का समय	बागबहारा	शासन दीपिका साध्वी श्री रजतमणि श्री जी म.सा.
5.	ज्ञान लब्धि का थोकड़ा, घर को स्वर्ग कैसे बनाएँ, संज्ञा का थोकड़ा, 12 को टेंशन नहीं	गुंडरदेही	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रुतशीला श्री जी म.सा.
6.	समय का बदलता स्वरूप, उच्चारण शुद्धि	दुर्ग	शासन दीपिका साध्वी श्री हेमप्रभा श्री जी म.सा.
7.	23 बोल, मोक्ष की यात्रा	अर्जुंदा	शासन दीपिका साध्वी श्री श्रुतशीला श्री जी म.सा.

पदाधिकारियों का बीकानेर–मारवाड़ अंचल प्रवास संपन्न

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन महिला समिति के राष्ट्रीय एवं आंचलिक पदाधिकारियों द्वारा 18 से 20 मार्च को जोधपुर, बालोतरा, पाटोदी, सोइंतरा, शेरगढ़, चाबा, सावलिया, भूंगरा, सोलंकिया तला, जेठानियाँ, ऊंटवालिया, सोमेसर, केतु, बालेसर, चेराई, तिवरी, फलोदी एवं लोहावट आदि क्षेत्रों का सफल प्रवास सम्पन्न हुआ। प्रवास में उपस्थित सभी सदस्यों का आत्मीय स्वागत किया गया। प्रवास स्थलों पर आयोजित बैठकों में महिला समिति द्वारा संचालित विविध प्रवृत्तियों, धोवन पानी आदि की प्रभावना की गई। सौहार्द्रपूर्ण वातावरण में प्रवासी दल ने शुभ संकल्पों के साथ अपनी यात्रा को विराम देते हुए अपने-अपने गंतव्यों की ओर प्रस्थान किया।

प्रमुख कार्य :

● 39 महिलाओं को महिला समिति की **'आजीवन सदस्यता'** से जोड़ा गया। ● **2 नवीन समता महिला मंडल (सोइंतरा और चेराई)** का गठन किया गया। ● **अभिमोक्षम् 2.0 शिविर** के लिए **15 बच्चों ने रजिस्ट्रेशन'** करवाए। ● **सज्झायम्मि रओ सया** कार्यक्रम हेतु 10 फॉर्म भरवाए। **– आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री**

श्रमणोपासक सदस्यों हेतु विशेष सूचना

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की दिनांक 4 जनवरी 2025 को कवर्धा (छ.ग.) में संपन्न कार्यसमिति बैठक में यह प्रस्ताव पारित किया गया है कि श्रमणोपासक के ऐसे सदस्य, जिनके संपर्क सूत्र (मो.नं.) अभी तक संकलित नहीं हो पाए हैं, उन सदस्यों को श्रमणोपासक पत्रिका का प्रेषण बंद कर दिया जाए। अत: जिन सदस्यों ने अपने संपर्क सूत्र अभी तक अपडेट नहीं करवाए हैं, उन सभी सदस्यों से निवेदन है कि आप अपने संपर्क सूत्र यथाशीघ्र ही श्रमणोपासक हेल्पलाइन नं. 97990-61990 पर वॉट्सऐप के माध्यम से भिजवाने का कष्ट करें, ताकि आपकी प्रति का प्रेषण जारी रह सके।

– सह-संपादिका

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ

DEVOTE FOR SANGH

रविवारीय समता आराधना – आंचलिक रिपोर्ट (मार्च 2025)

क्रमांक	अंचल का नाम	आंचलिक गतिविधि	02-03	09-03	16-03	23-03	30-03
1	मेवाड़	आंचलिक उपस्थिति	1709	1482	1476	1368	1806
		आंचलिक क्षेत्र	86	90	88	91	88
2	बीकानेर-मारवाड़	आंचलिक उपस्थिति	752	746	878	726	613
		आंचलिक क्षेत्र	42	46	42	42	42
3	जयपुर-ब्यावर	आंचलिक उपस्थिति	459	448	461	481	437
		आंचलिक क्षेत्र	22	22	23	22	23
4	मध्य प्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	930	942	784	784	844
		आंचलिक क्षेत्र	74	74	74	74	75
5	छत्तीसगढ़-ओड़िशा	आंचलिक उपस्थिति	1970	2151	1917	1990	1916
		आंचलिक क्षेत्र	145	153	152	147	145
6	कर्नाटक-आंध्र प्रदेश	आंचलिक उपस्थिति	342	251	305	314	307
		आंचलिक क्षेत्र	23	24	26	21	27
7	तमिलनाडु	आंचलिक उपस्थिति	243	420	223	223	320
		आंचलिक क्षेत्र	15	14	12	14	15
8	मुंबई-गुजरात-यू.ए.ई.	आंचलिक उपस्थिति	470	527	499	513	412
		आंचलिक क्षेत्र	20	20	24	23	21
9	महाराष्ट्र-विदर्भ-खानदेश	आंचलिक उपस्थिति	491	567	569	535	548
		आंचलिक क्षेत्र	51	57	44	50	49
10	बंगाल-बिहार-नेपाल-भूटान-झारखंड-आंशिक ओड़िशा	आंचलिक उपस्थिति	353	323	362	363	246
		आंचलिक क्षेत्र	41	41	41	43	41
11	पूर्वोत्तर	आंचलिक उपस्थिति	330	328	241	283	262
		आंचलिक क्षेत्र	38	41	37	37	39
12	दिल्ली-पंजाब-हरियाणा-उत्तरी	आंचलिक उपस्थिति	147	95	100	106	91
		आंचलिक क्षेत्र	8	9	8	7	7
13	अंतरराष्ट्रीय शाखा	आंचलिक उपस्थिति	15	19	10	10	9
		आंचलिक क्षेत्र	6	8	4	5	6
	संयुक्त रिपोर्ट						
	कुल उपस्थिति		8211	8299	7825	7696	7811
	कुल क्षेत्र		571	599	575	576	578

मार्च 2025 में समता शाखा आराधना में निम्न नवीन क्षेत्र शामिल हुए हैं –

● **पूर्वोत्तर अंचल -** (1) बोरकोला (2) जोयपुर (3) गोरेश्वर। इन क्षेत्रों में समता शाखा के लिए प्रयास करने हेतु सभी पदाधिकरियों एवं स्थानीय संघ सदस्यों को बहुत-बहुत साधुवाद। आशा करते हैं कि इन क्षेत्रों में समता शाखा का आयाम निरंतरता के साथ गतिमान रहे तथा संख्या में अभिवृद्धि होती रहे। जिन ग्रामों/शहरों में अब तक समता शाखा नहीं हो रही है वहाँ भी आचार्य भगवन् के इस अनुपम आयाम से अवश्य जुड़ें।

राष्ट्रीय पदाधिकारियों का तीन दिवसीय प्रवास संपन्न

11-13 अप्रैल 2025। श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय पदाधिकारियों ने नासिक, राहुरी फैक्ट्री, छत्रपति संभाजी नगर, सिल्लोड़, शिरुड़, धरणगाँव, धुलिया, फागना, शिरपुर, चोपड़ा, अडावत, चिंचोला, जलगाँव, भुसावल आदि क्षेत्रों में सघन प्रवास किया। सभी प्रवास स्थलों पर सभा का शुभारंभ नवकार मंत्र आराधना से हुआ तत्पश्चात् युवा साथियों का परिचय सत्र हुआ। प्रवासी दल द्वारा संगठन की मजबूती की प्रभावना करते हुए चोपड़ा संघ में नवीन समता युवा संघ एवं राहुरी फैक्ट्री संघ में नवीन समता युवा शाखा का गठन किया। नासिक एवं शिरुड़ संघों में समता युवा संघ के सत्र 2024-26 के लिए पुनर्गठन किया गया। छत्रपति संभाजी नगर और धरणगाँव संघों में समता युवा संघ के सत्र 2024-26 के लिए सर्वसम्मति से नवीन मनोनयन किया गया। प्रवासी दल द्वारा जीवदया कार्यक्रम में राहुरी फैक्ट्री में स्थित गोपाल कृष्ण गौशाला में गायों को पशु आहार खिलाया। सभी प्रवास स्थलों पर धार्मिक, समता शाखा, उत्क्रांति, व्यसनमुक्ति, तरुण-शक्ति, सामाजिक कार्यक्रम, अभिमोक्षम् व संगठन सहित श्री अ.भा.सा. जैन समता युवा संघ द्वारा संचालित प्रवृत्तियों की भव्य प्रभावना की गई। प्रवासी दल का सभी स्थलों पर आत्मीय स्वागत किया गया। युवा साथियों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता निभाते हुए संघ विकास हेतु सकारात्मक सुझावों का आदान-प्रदान किया। प्रवास नियमावली का पूर्ण रूप से पालन किया गया। इस दौरान प्रवासी दल सदस्यों को शासन दीपक श्री निश्चल मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2, शासन दीपक श्री सुमित मुनि जी म.सा. आदि ठाणा-2 एवं शासन दीपिका साध्वी श्री साक्षी श्री जी म.सा. आदि ठाणा-3 के दर्शन-वंदन का लाभ प्राप्त हुआ।

- आंचलिक राष्ट्रीय मंत्री

उत्क्रांति कार्यक्रम

हुक्मसंघ के नवम नक्षत्र, सिरीवाल प्रतिबोधक, परम पूज्य आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. द्वारा समाज में व्याप्त कुरीतियों, फिजूलखर्ची, दिखावे और बढ़ती आर्थिक विषमता के उन्मूलन के लिए उद्घोषित उत्क्रांति की आभा सर्वत्र फैल रही है। समाजजन उत्क्रांति के नियमों को ग्रहण कर पूरे मनोयोग से पालना कर रहे हैं। आप सभी निश्चित ही धन्यवाद के पात्र हैं। उत्क्रांति के अंतर्गत गत दो माह में सम्पन्न कार्यक्रमों का विवरण -

1. निकुंभ निवासी अमृतलाल जी सुनील जी सहलोत का नूतन गृह-प्रवेश 10 फरवरी को संपन्न हुआ।
2. हावड़ा निवासी संजू जी छाजेड़ के सुपुत्र का शुभविवाह 2 मार्च को संपन्न हुआ।
3. निम्बाहेड़ा निवासी आजाद जी सुशील जी सहलोत का नूतन गृह-प्रवेश 19 मार्च को संपन्न हुआ।

विविध समाचार

खेतिया। 22 मार्च को समता युवा संघ के तत्वावधान में '**समता जल प्रकल्प**' के अंतर्गत रवींद्रनाथ टैगोर चौक पर प्याऊ का शुभारंभ किया गया, जिससे गर्मी में आमजन को शुद्ध ठंडा जल उपलब्ध हो सकेगा।

मंगलवाड़। श्री साधुमार्गी जैन समता युवा संघ, मंगलवाड़ द्वारा 11 अप्रैल को रत्नत्रय के महान आराधक, आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के जन्मोत्सव पर समता भवन, ओस्तवाल परिसर में नवकार महामंत्र जाप, श्री रामेश चालीसा एवं गुरु गुणगान कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में आचार्य भगवन् द्वारा प्रदत्त आयामों को धारण कर आत्मकल्याण करने की प्रेरणा दी गई। गुरु वंदन के पश्चात् मंगलपाठ श्रवण कराया गया। कार्यक्रम में सैंकड़ों श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

इंदौर। श्री साधुमार्गी जैन समता युवा संघ, इंदौर द्वारा 11 अप्रैल को परम श्रद्धेय आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा. के जन्मोत्सव पर अस्पताल में पोहा वितरण किया गया।

भावभीनी श्रद्धांजलि

स्मृतिशेष सुश्रावक वीर भ्राता श्री धरमचंद जी बैद

आप रौनक थे घर की, हर चेहरा आपसे दमकता था।
आप से मिलने वाला प्यार और अपनत्व ही तो हमारा खजाना था।।

धर्मनिष्ठ, गुरुभक्त, सुश्रावक वीर भ्राता **श्री धरमचंद जी बैद** सुपुत्र स्व. श्री संतोकचंद जी-श्रीमती फता देवी बैद, मुंबई/बीकानेर का **19 मार्च 2025** को बीकानेर में स्वर्गवास हो गया। आप **साध्वी श्री सुशीला कँवर जी म.सा.** के संसारपक्षीय भ्राता, **धायमातृ पद अलंकृत महाश्रमणी रत्ना साध्वी श्री पैप कँवर जी म.सा.** एवं **महाश्रमणी रत्ना साध्वी श्री इंद्र कँवर जी म.सा.** के संसारपक्षीय भाणेज तथा **साध्वी श्री स्थितप्रज्ञा जी म.सा.** के संसारपक्षीय जीजाजी थे।

सरल स्वभावी, मिलनसार, अध्यात्म के प्रति पूर्ण समर्पित श्री धरमचंद जी देव, गुरु, धर्म के प्रति पूर्ण निष्ठावान सुश्रावक थे। दान के पर्याय एवं धर्मनिष्ठ समाजसेवी के रूप में आपकी विशेष छवि थी। चारित्रात्माओं की सेवा में सदैव अग्रणी रहते हुए आपने अम्मा-पिया के पद को सार्थक किया। संघ व समाज के सजग प्रहरी जैसा आपका अप्रतिम व्यक्तित्व हर किसी को सहज ही अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। माता-पिता से प्राप्त संस्कारों की धरोहर को अभिवृद्धित करते हुए आपने सदैव ही अनुकरणीय शृंखला की प्रतिस्थापना की।

आपके अग्रज भ्राता श्री कमलचंद जी बैद संघ के महाप्रभावक सदस्य हैं तथा आपकी भाभीजी स्व. श्रीमती शोभा देवी बैद श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन महिला की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा सहित विभिन्न पदों पर सेवाएँ दे चुकी हैं। संपूर्ण बैद परिवार संघ व शासन सेवा में सदैव ही अग्रपंक्ति में उपस्थित रहता है।

ऐसे सुज्ञ व्यक्तित्व के जाने से संघ व समाज को अपूरणीय क्षति हुई है, जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में असंभव है। शासनदेव से यही प्रार्थना है कि आपकी पुण्यात्मा शीघ्र ही सिद्ध-बुद्ध-मुक्त बनकर चरम लक्ष्य मोक्ष का वरण करे।

:: श्रद्धानवत ::

जीवनप्रभा बैद (धर्मपत्नी), **कमलचंद, विमलचंद-कंचन देवी, इंदरचंद-प्रमिला देवी, सरोज देवी, विजयचंद-मंजू देवी, मूलचंद-रजनी देवी** (भाई-भाभी), **धीरज** (पुत्र) एवं **समस्त बैद परिवार।**
स्वीटी-अंकित जी बोथरा, वर्षा-वरुण जी भंसाली (पुत्री-दामाद), **इवांशी** (दोहिती)

मो. : 9870021021, 9828559015

ससुराल पक्ष

नवलचंद जी मोतीलाल जी
प्रकाश जी भूरा (देशनोक/बीकानेर)

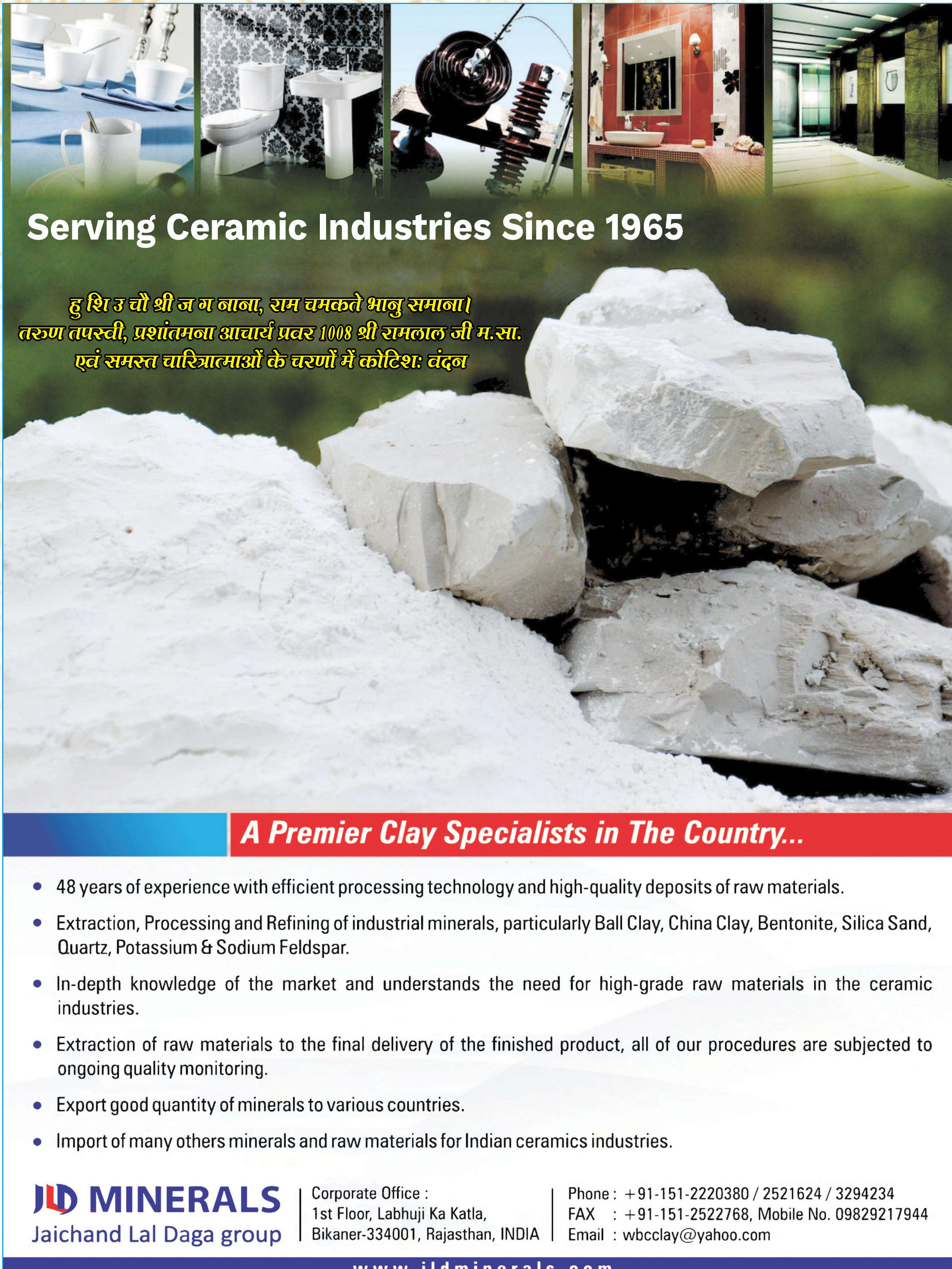
Serving Ceramic Industries Since 1965
हु शि उ चौ श्री ज ग नाना, राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर 1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में कोटिश: वंदन
A Premier Clay Specialists in The Country...
48 years of experience with efficient processing technology and high-quality deposits of raw materials.
Extraction, Processing and Refining of industrial minerals, particularly Ball Clay, China Clay, Bentonite, Silica Sand, Quartz, Potassium & Sodium Feldspar.
In-depth knowledge of the market and understands the need for high-grade raw materials in the ceramic industries.
Extraction of raw materials to the final delivery of the finished product, all of our procedures are subjected to ongoing quality monitoring.
Export good quantity of minerals to various countries.
Import of many others minerals and raw materials for Indian ceramics industries.
JLD MINERALS
Jaichand Lal Daga group
Corporate Office :
1st Floor, Labhuji Ka Katla,
Bikaner-334001, Rajasthan, INDIA
Phone : +91-151-2220380 / 2521624 / 3294234
FAX : +91-151-2522768, Mobile No. 09829217944
Email : wbcclay@yahoo.com
www.jldminerals.com

SIPANI

सिपानी सेवा सदन - 1

सिपानी समूह ने मानव सेवा के क्षेत्र में एक ऐसा हस्ताक्षर अंकित किया है, जो सदियों तक स्मरण किया जाता रहेगा। समूह ने अपने प्रथम चरण में सिपानी सेवा सदन-1 - बंदापुरा विलेज मडिवाला ग्राम, मर्सुर पोस्ट, अनेकल तालूक, बेंगलूरु - 562106 में 12 वर्ष पूर्व जिस योजना को क्रियान्वित किया उसके अंतर्गत सदन की बहुमंजिला इमारत में 400 मरीजों एवं उनकी देखरेख करने वाले नर्स, कर्मचारी आदि की व्यवस्था रखी गई है।

सिपानी सेवा सदन - 2

सेवा के कदम आगे बढ़ाते हुए सिपानी समूह ने सिपानी सेवा सदन - 2 का निर्माण कार्य प्रारम्भ करवा दिया है। इस भवन में उपरोक्त के अतिरिक्त 500 मरीजों एवं उनके लिए आवश्यक डॉक्टर, नर्स कर्मचारी एवं एम्बुलेंस आदि की सुविधा उपलब्ध रहेगी।

SIPANI

Sipani Seva Sadan-2
Address No. 149/1 & 150/1 Bandapura village, Madivala grama, Marsur post Anekal taluk, Bangalore 562106
Phone number +91 8431 888 000 & +91 9513 361 335

हु शि उ चौ श्री ज ग नाना,
राम चमकते भानु समाना।
तरुण तपस्वी, प्रशांतमना आचार्य प्रवर
1008 श्री रामलाल जी म.सा.
एवं समस्त चारित्रात्माओं के चरणों में
कोटिशः वंदन!

SIPANI MARBLES

STRONG - STYLISH - SOPHISTICATED

Royal Italian Marbles

AS PER ISI STANDARDS

WWW.SIPANIMARBLES.COM

संघ से संबंधित विभिन्न जानकारियां

प्रकाशक

श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

प्रधान कार्यालय

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग,
नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401
(राज.) फोन : 0151-2270261
helpdesk@sadhumargi.com

अध्यक्ष एवं प्रधान संपादक

नरेन्द्र गांधी, जावद

सह संपादिका

श्रीमती मोनिका जय ओस्तवाल, ब्यावर

श्रमणोपासक सदस्यता

केवल भारत में	1,000/- (15 वर्ष के लिए)
विदेश हेतु	15,000/- (10 वर्ष के लिए)

वाचनालय हेतु (केवल भारत में)

वार्षिक	50/-

संघ सदस्यता

साधारण सदस्यता	500/-
आजीवन सदस्यता	5,000/-

साहित्य सदस्यता

15 वर्ष (केवल भारत में)	3,000/-

संघ केन्द्रीय कार्यालय के विभिन्न विभागों से कार्य सम्पादन हेतु सम्पर्क करें :-

E-mail : ho@sadhumargi.com

बैंक खाता विवरण

Shree Akhil Bharatvarshiya Sadhumargi Jain Sangh, Bikaner

State Bank of India

SCAN & PAY

Account No.	:	31264126681
IFSC Code	:	SBIN0003401
Branch	:	G.S. ROAD, Bikaner
Mob.	:	7073311108
E-mail	:	accounts@sadhumargi.com

व्हाट्सएप और ई-मेल आईडी

विभाग	मोबाइल	ई-मेल
श्रमणोपासक	9799061990	news@sadhumargi.com
श्रमणोपासक समाचार	8955682153	news@sadhumargi.com
साहित्य	8209090748	sahitya@sadhumargi.com
महिला समिति	6375633109	ms@sadhumargi.com
समता युवा संघ	7073238777	yuva@sadhumargi.com
धार्मिक परीक्षा	7231933008	examboard@sadhumargi.com
कर्म सिद्धांत	7976519363	examboard@sadhumargi.com
परिवारांजलि	7231033008	anjali@sadhumargi.com
विहार	8505053113	vihar@sadhumargi.com
पाठशाला	9982990507	pathshala@sadhumargi.com
शिविर	7231833008	udaipur@sadhumargi.com
ग्लोबल कार्ड अपडेशन	6265311663	globalcard@sadhumargi.com
सामाजिक, संघ सदस्यता, सहयोग, समृद्धि, जन सेवा, जीव दया आदि अन्य प्रवृत्तियाँ	9602026899	
शैक्षणिक, आध्यात्मिक, धार्मिक, साहित्य संबंधी प्रवृत्तियाँ	7231933008	
संघ हेल्पलाइन (WhatsApp only)	8535858853	

-: सूचना :-

निवेदन है कि किसी भी कार्य के लिए संबंधित विभाग से ही संपर्क करें। इससे आपका कार्य सुगम और त्वरित गति से हो सकेगा।

कार्यालय समय - प्रातः 10:00 से सायं 6:30 बजे तक

लंच - दोपहर 1:00 से 1.45 बजे तक

आवश्यक सूचना

सभी संघ सदस्यों से निवेदन है कि कृपया कोई भी नकद भुगतान (Cash Payment) श्रीसंघ के किसी भी सदस्य, कार्यालय अधिकारी को किसी भी प्रवृत्ति में करें तो केंद्रीय कार्यालय के लेखा विभाग (Accounts Department) को सूचना अवश्य देवें। इससे आपको पक्की रसीद शीघ्र ही भिजवाई जा सकेगी।

मो.: 7073311108 (WhatsApp)

संघ में आपके सहयोग एवं सदस्यता की संपूर्ण जानकारी प्राप्त करने व ऑनलाइन भुगतान करने हेतु नीचे दिए लिंक पर क्लिक करें।

https://donorportal.sadhumargi.com/login

www.facebook.com/HOSadhumargi @absjainsangh

रचनाकारों अथवा लेखकके विचारों से संपादक की सहमति होना अनिवार्य नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय क्षेत्र बीकानेर ही रहेगा।

प्रधान संपादक, प्रकाशक, मुद्रक नरेन्द्र गांधी के लिए जैन आर्ट प्रेस, बीकानेर के लिए साक्षी प्रिंटर्स, जयपुर (राज.) में मुद्रित प्रतियाँ 24650

प्रेषक : श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ

समता भवन, आचार्य श्री नानेश मार्ग, नोखा रोड, गंगाशहर, बीकानेर-334401 (राज.), फोन नं.: 0151-2270261